नाऽयमात्मा बल-हीनेन लभ्यः

बल-हीनको इस आत्माकी प्राप्ति नहीं होती

—मुंडकोपनिषद—

* * *

उत्थातव्यं जागृतव्यं योक्तव्यं भूति-कर्मसु
भविष्यतीत्येवं मनः कृत्वा सततमव्यथैः

उठो, जागो और कल्याण-कारी कार्यों में लगो।
घबराओ मत, मनमें निरंतर यह धारणा
रखो कि यह कार्य तो होगा ही।

—महाभारत—

सूचनिका

चित्र-सूची

श्री

नाऽयमात्मा बल-हीनेन लभ्यः

राजस्थानी

राजस्थानी भाषा, साहित्य, इतिहास और कलाकी शोध-संबंधी निबंधमाला

भाग १

राजस्थानी

[रामसिंह]

वीर-भूरी वीर-वाणी !
अमर वाणी राजथानी !!

क्रोड़ दो-रै कँठ-सुरसूं गर्जती जै-जै भवानी
अमर साहितरी धिराणी राजभाषा लोक-वाणी

वीर-भूरी वीर-वाणी !
अमर वाणी राजथानी !!

दिव्य करणी-साधना तूं मधुर [illegible]
मृत्यु मृत्युंजय अमररी टेक पातलरी हळाहळ
पदमणीरी आत्म-शक्ती सजळ जौहररी अटळ झळ

धाक थारी विश्व मानी
वीर-भूरी बीर वाणी !
अमर वाणी राजथानी !!

अंब ! बिछड़्या बंधवांनै अेक कर दे ! अेक कर दे !
ग्यान भर विग्यान भर, मां! प्राणमें तूं प्राण भर दे !
विश्वमें गूंजै सदा ही अमर मरुरी अमर का'णी

राज-महिरी राजराणी
गीरवाणी जै भवानी
वीर-भूरी वीर वाणी !
अमरवाणी राजथानी !!

राजस्थान

प्यारे राजस्थान !
हमारे प्यारे राजस्थान !

तू जननी, तू जन्मभूमि है
तू जीवन, तू प्राण
तू सर्वस्व शूर-वीरोंका
भारतका अभिमान
हमारे प्यारे राजस्थान !

तेरी गौरव-मयी गोदका
रखनेको सम्मान
करते रहे सपूत निछावर
हंसते-हंसते प्राण
हमारे प्यारे राजस्थान !

जौहरकी ज्वालामें जिनकी
थी अक्षय मुसकान
धन्य वीर-बालाऐं तेरी
धन्य धन्य बलिदान
हमारे प्यारे राजस्थान !

जब तक जीवित हैं हम तेरी
वीर-व्रती संतान
ऊँचा मस्तक अमर, अमर है
तेरा रक्त निसान
हमारे प्यारे राजस्थान !

प्यारे राजस्थान !
हमारे प्यारे राजस्थान !!

—'प्रताप-प्रतिज्ञा' से उद्धृत

राजस्थानी भाषा और साहित्य

[नरोत्तमदास स्वामी]

अध्याय १—प्रस्तावना

१—क्षेत्रफल और जनसंख्या

राजस्थानी महान भारत-यूरोपीय Indo-European भाषा-परिवारकी अेक शाखा है। वह राजस्थान[1] प्रान्तकी मातृभाषा है जिसमें वर्त्तमान राजपूतानेका अधिकांश भाग तथा मालवा सम्मिलित हैं। विस्तारमें यह प्रदेश भारतवर्षके

---

१ प्रांतका राजस्थान यह नाम प्राचीन नहीं आधुनिक है। इस शब्द का अर्थ है भारतीय देशी राजा द्वारा शासित भु-भाग। गुजराती भाषामें इस शब्द का प्रयोग अभी तक इस अर्थमें होता है। राजस्थानमें देशी राजाओंके बहुत से राज्य थे इसलिअे इसे राजस्थान या रायथान कहा जाने लगा। साहित्यमें इस शब्दका सबसे पहले प्रयोग संभवतः कर्नल टाडने किया। सरकारी रूपसे प्रांतका यह नाम गृहीत न होने पर भी यह बहुत लोकप्रिय हुआ—राजपूताना-की अपेक्षा राजस्थान नाम ही आज अधिक प्रचलित है। इसका श्रेय कर्नल टाडके सुप्रसिद्ध राजस्थानका इतिहास नामक ग्रन्थको है। भारतकी राष्ट्रीय महासभा Indian National Congress ने भी प्रांतका यही नाम स्वीकृत किया है। मालवा आजकल यद्यपि राजस्थानसे अलग समझा जाता है पर भाषाकी दृष्टिसे वह वस्तुतः राजस्थानका ही विभाग है।

राजस्थान प्रांतके लिअे कभी-कभी मारवाड़ नामका भी प्रयोग किया जाता है पर यह नाम इतना व्यापक अर्थ देनेमें असमर्थ है। अेक अर्थमें मारवाड़ राजस्थान के रेतीले मरु-प्रदेश का वाचक है और दूसरे अर्थमें राजस्थानके अन्तर्भूत अनेक राज्योंमेंसे अेक राज्य—जोधपुर—का। इन दोनों ही अर्थोंमें वह सम्पूर्ण राजस्थानका वाचक नहीं। राजस्थानका केवल पश्चिमोत्तर भाग ही मरुभूमि है अतः मेवाड़, वागड़, हाड़ौती आदि प्रदेश मारवाड़ नहीं कहे जा सकते, न इन प्रदेशोंके निवासी अपने देशको मारवाड़ या अपनेको मारवाड़ी कहते ही हैं। राजस्थानमें मारवाड़ी नामसे जोधपुर (मारवाड़) राज्यके निवासीका ही बोध होता है। राजस्थानके बाहर राजस्थानके वैश्य व्यापारी मारवाड़ी कहे जाते हैं। इस प्रकार न मारवाड़ नाम समस्त राज-स्थानका बोध कराता है और न मारवाड़ी नाम समस्त राजस्थान-निवासियों का।

बंगाल, बंबई आदि समस्त प्रान्तोंसे, तथा संसारके इंग्लैंड, आयर, यूनान, हंगरी, रोमानिया, पोलैंड, नारवे, फिनलैंड, ईराक, इटली, जापान आदि अनेकों देशोंसे

राजस्थान सदासे विभिन्न राज्योंमें बँटा रहा है अतः समस्त राजस्थानके लिअे अेक नाम प्राचीन साहित्यमें नहीं मिलता। यही दशा गुजरातकी भी थी जिसका राजस्थानके साथ सब प्रकारसे घनिष्ठ संबंध है। प्राचीन कालमें गुजरातके विभिन्न भागोंके विभिन्न नाम थे। सोलंकियोंके शासन-कालमें गुजरातके विभिन्न भाग अेक राज्यके अन्तर्गत हुअे और गुजरातकी राजनीतिक अेकता संपन्न हुई। तभीसे सारा प्रदेश गुजरात कहलाया।

राजस्थानमें यह राजनीतिक अेकता सर्वप्रथम अँग्रेजी राज्यमें संपन्न हुई अतः तभीसे सारे प्रान्तका अेक नाम प्रसिद्ध हुआ।

राजनीतिक अेकता न होनेपर भी सांस्कृतिक अेकता राजस्थानके विभिन्न प्रदेशोंमें बराबर बनी रही। सांस्कृतिक दृष्टिसे गुजरात भी बहुत-कुछ राजस्थान का अेक भाग कहा जा सकता है—गुजराती भाषाका विकास प्राचीन राजस्थानीसे ही हुआ है।

राजस्थानके विविध भागोंके प्राचीन नाम इस प्रकार मिलते हैं—

(१) पौराणिक कालमें—
उत्तरी भाग—जंगल
पूरबी भाग—मत्स्य
दक्षिण-पूरबी भाग—शिवि
दक्षिणी भाग—मालवा
पश्चिमी भाग—मरु
मध्य भाग—अर्बुद

(२) मध्य युगमें—
उत्तरी भाग—जंगल
दक्षिणी भाग—मेदपाट, वागड़, प्राग्वाट
मालव, गुर्जरत्रा
पश्चिमी भाग—मरु, माड, वल्ल, त्रवणी
मध्य भाग—अर्बुद सपादलक्ष

बड़ा[1] है। भारतीय भाषाओंमें हिन्दीको छोड़कर किसी भाषाका क्षेत्र इतना बड़ा नहीं।

राजस्थानी बोलनेवालोंकी संख्या डेढ़ करोड़के ऊपर है। वे अधिकांशमें राजपूताना तथा मालवामें रहते हैं परन्तु राजस्थानके बाहर भी बड़ी संख्यामें पाये जाते हैं। भारतका कदाचित ही कोई स्थान अैसा हो जहां राजस्थानी सैनिक और राजस्थानी व्यापारी न पहुंचा हो। कलकत्ता, बम्बई आदि व्यापारके प्रमुख केन्द्रोंसे लेकर छोटे-से-छोटे गांवों तकमें राजस्थानी व्यापारी मिलेगा। प्रवासी राजस्थानियोंका मुख्य केन्द्र बंगाल है। बम्बई प्रान्तमें भी वे अच्छी संख्यामें पाये जाते हैं।

जन-संख्याकी दृष्टिसे राजस्थानीका भारतवर्षकी भाषाओं में (सातवां या) आठवां और संसारकी भाषाओंमें (इक्कीसवें से) चौबीसवां स्थान है जैसा कि नीचे लिखे आंकड़ोंसे ज्ञात होगा—

(१) चीनी	५० करोड़	(८) फ्रेंच	७ करोड़
(२) अंग्रेजी	२५ करोड़	(९) पुर्तगाली	५ करोड़
(३) रूसी	२० करोड़	(१०) बंगला	५ करोड़
(४) हिंदी (बिहारी सहित)	११ करोड़	(११) इटालियन	४½ करोड़
(५) जापानी	१० करोड़	(१२) जावानी	४ करोड़
(६) स्पेनी	१० करोड़	(१३) पोल	३ करोड़
(७) जर्मन	८ करोड़	(१४) अरबी	३ करोड़

---

१ तुलनाके लिअे नीचे इनके क्षेत्रफल वर्गमीलोंमें दिये जाते हैं—

राजपूताना और मालवा १२९+२६=१५५ हजार वर्गमील

मद्रास	१,४२ हजार	पोलैंड	१,५० हजार	यूगोस्लाविया	९५ हजार
बंबई	१,२३ हजार	नारवे	१,४९ हजार	इंग्लैंड	५८ हजार
युक्तप्रान्त	१,०६ हजार	फिनलैंड	१,३४ हजार	यूनान	५० हजार
पंजाब	९९ हजार	ईराक	१,१६ हजार	आयर	२७ हजार
बंगाल	७७ हजार	इटली	१,१५ हजार	...	...
मध्यभारत	९९ हजार	जापान	१,१५ हजार	...	...
बिहार	६९ हजार	रोमानिया	१,१३ हजार	...	...

(१५) [बिहारी]	२½ करोड़	(२०) कोरियाई	२ करोड़
(१६) तेलगू	२½ करोड़	(२१) डच	१½ करोड़
(१७) तमिळ	२½ करोड़	(२२) पंजाबी	१½ करोड़
(१८) मराठी	२ करोड़	(२३) ईरानी	१½ करोड़
(१९) रोमानियन	२ करोड़	(२४) राजस्थानी	१½ करोड़[1]

२—सीमाअें

राजस्थानीके चारों ओर नीचे बतायी भाषाअें बोली जाती है—

(१) उत्तरमें—पंजाबी

(२) पश्चिमोत्तरमें—हिन्दकी या मुलतानी या पश्चिमी पंजाबी

(३) पश्चिममें—सिंधी

(४) दक्षिण-पश्चिममें—गुजराती

(५) दक्षिणमें—गुजराती, भीली और मराठी

(६) दक्षिण-पूर्वमें—मराठी, और हिन्दीकी बुन्देली नामक उपभाषा

(७) पूर्वमें—हिंदीकी बुंदेली और ब्रज नामक उपभाषाअें

(८) उत्तर-पूर्वमें—हिन्दीकी बांगड़ू उपभाषा

---

१ तुलनाके लिअे भारतवर्ष और संसारकी कुछ और भाषाओंके बोलनेवालोंके आँकड़े नीचे दिये जाते हैं—

(१) स्यामी	१,४५	लाख	(१२) बलगेरियन	६०	लाख
(२) तुर्की	१,४१	लाख	(१३) स्वीडिश	६२	लाख
(३) उड़िया	१,१२	लाख	(१४) सिंधी	४०	लाख
(४) कन्नड़	१,१२	लाख	(१५) डेनिश	३७	लाख
(५) सर्बियन	१,१०	लाख	(१६) फिनलैंडी	३०	लाख
(६) गुजराती	१,१०	लाख	(१७) नारवेजियन	३०	लाख
(७) बोहेमियन	१,०६	लाख	(१८) लिथुआनियन	२३	लाख
(८) मलयालम	९१	लाख	(१९) असमिया	२०	लाख
(९) हिंदकी	८५	लाख	(२०) काश्मिरी	१४	लाख
(१०) हंगेरियन	८०	लाख	(२१) पश्तो	१६	लाख
(११) यूनानी	६९	लाख			
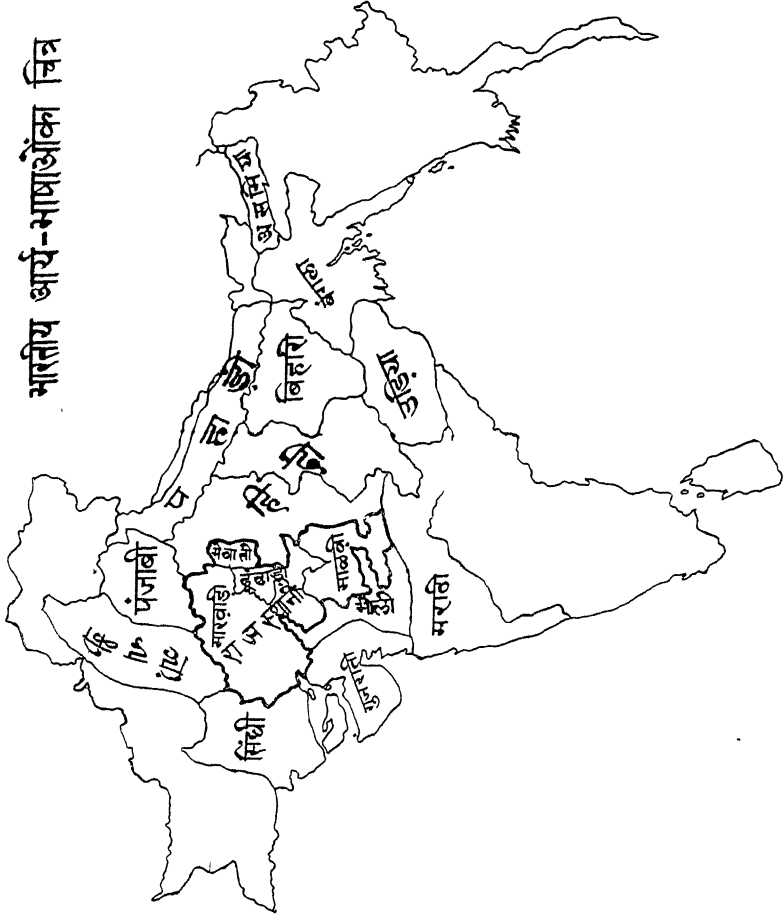
भारतीय आर्य-भाषाओंका चित्र
पंजाबी
सिंधी
मारवाड़ी
गुजराती
मालवी
मराठी
बिहारी
उड़िया
बंगला
असमिया

इन भाषाओंमें गुजरातीका राजस्थानीके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। सोलहवीं शताब्दी तक गुजराती और राजस्थानी अेक ही भाषा थी।[१] भीली राजस्थानी और गुजरातीकी मिश्रित भाषा है। इसी प्रकार बांगड़ू भी राजस्थानी और खड़ीबोलीका मिश्रण है। व्रजभाषाका भी राजस्थानीसे पर्याप्त साम्य है। खड़ीबोलीमें भी राजस्थानीकी अनेक विशेषताअें पायी जाती हैं जो साहित्यिक हिंदीमें नहीं पायी जाती।[२]

---

१. (A) Rajasthani, & Gujrati are hence very closely connected and are, in fact, little more than variant dialects of one and the same language. (Grierson : Linguistic Survey of India, Vol I, Pt I, Page 170).

(B) Gujrati and Rajasthani are derived from the one and same-source dialect to which the name of Old Western Rajasthani has been given............Gujrati must have differentiated from Old Western Rajasthani in the sixteenth century into a separate language. (Dr. Suniti Kumar Chatterji : Origin & Development of Bengali Language, Vol I, Page 9).

(C) The differentiation of Gujrati from the Marwari dialect of Old Western Rajasthani is quite modern. We have poems written in Marwar in the fifteenth century which were composed in the Mother language that later on developed into these two forms of speech. (Grierson : Linguistic Survey of India, Vol I, Page 170, footnote).

(D) हाल-नी राजकीय व्यवस्था-नी घटना-मां मारवाड़ अने गुजरात जुदा पड़ी गया छे। अने अे बे देश बच्चे साहित्य-नो संबंध रह्यो नथी। मारवाड़ी भाषा-मां वर्तमान समय-नूं साहित्य न्यून होवा थी मारवाड़ी भाषा हिंदी भाषा-नूं ऊपरीपणूं स्वीकारती जणाय छे अने मारवाड़-ना लेखको आदर्शो माटे हिंदी तरफ वलता जणाय छे। गुजराती भाषा-ना वर्तमान साहित्य-मां अेवी न्यूनता नथी अने गुजराती भाषा हिंदुस्तान-नी बीजी कोई वर्तमान भाषा-नूं ऊपरीपणूं स्वीकारे तेम नथी, तथा पोता-नूं पृथक् स्वरूप खोई बीजी कोई भाषा-मां मली जाय तेम नथी। — (रमणभाई महीपतराम नीलकंठ)

२ उदाहरणके लिअे—

(१) मूर्धन्य णकारकी अधिकता (२) ळकारका प्रयोग (३) वर्त्तमान और अपूर्णभूत आदि कालोंमें तिङन्तीय या अ-कृदन्तीय रूपोंका प्रयोग, जैसे—आता है के स्थान पर आवै है और मारता था के स्थान पर मारै थो।

राजस्थानी भरतपुर राज्यको छोड़कर बाकी सारे राजपूतानेमें और मालवे में बोली जाती है। उत्तरमें भटियाणी और राठो बोलियोंके द्वारा पंजाबीमें पश्चिममें हिन्दको और सिंधीमें, दक्षिणमें पालणपुरमें गुजराती में, पूर्वमें गवालियर राज्यमें बुंदेलीमें, और पूर्वोत्तरमें करौली और भरतपुरमें डांगकी बोलियों द्वारा व्रज-भाषामें तथा बांगड़ू द्वारा खड़ीबोलीमें मिल जाती है। भीली भाषा राजस्थानमें राजस्थानीके क्षेत्रके भीतर बोली जाती है।

३—नाम

इस भाषाका राजस्थानी यह नाम नवीन, और आधुनिक भाषा-वैज्ञानिकों का दिया हुआ है। अब यह नाम इतना प्रचलित हो चुका है कि देश-विदेशके सभी विद्वान इस भाषाका इसी नामसे उल्लेख करते हैं और सरकारी कागद-पत्रों तथा रिपोर्टों आदि में भी इसीका प्रयोग किया जाता है। भारतीय भाषा-तत्त्व विशारदोंने भी इसी नामको सर्वमान्य किया है।

किसी भाषाका नाम या तो देश अथवा प्रान्तके नाम पर पड़ता है, या उस भाषाकी साहित्यमें काम आनेवाली उपभाषा के नाम पर। क्योंकि प्रान्तका राजस्थान नाम आधुनिक है अतः भाषाका राजस्थानी नाम भी आधुनिक है।

इस भाषाका पुराना नाम मरु-भाषा था। राजस्थानीके लेखकोंने अपनी भाषाको बराबर मरु-भाषा ही कहा है[१]। मारू-भाषा[२], मुरधर-भाषा, मरुदेशीया भाषा[३] आदि नामोंका प्रयोग भी मिलता है। राजस्थानीकी उपभाषाओंमें मार-

---

१ (क) मरुभासा निर्जल तजी करी व्रज-भासा चोज।

—गोपाल लाहोरी कृत रस-विलास

(ख) डिंगल उपनामक कहुंक मरु-बानीहु विधेय।

—सूर्यमल्ल मिस्रण कृत वंश-भास्कर

(ग) मरु-भूम-भासा-तणो मारग रमै आछी रीतसूं।

—कवि मंछ कृत रघुनाथरूपक

२ कर आणंद कवेस वहण मारू-भाषा-वट।

—कवि मोडजी कृत पाबूप्रकास।

३ सूर्यमल मिस्रणने वंशभास्करमें बराबर 'मरुदेशीया भाषा' शब्दका प्रयोग किया है।

वाड़ी सबसे प्रधान है और सदासे रही है। जिस प्रकार आजकल हिन्दीकी अनेक उपभाषाओंमेंसे खड़ीबोली साहित्यकी भाषा है उसी प्रकार मारवाड़ी सदासे साहित्यकी भाषा रही है। राजस्थानके सभी भागोंके लेखकोंने साहित्य-रचनाके लिये मारवाड़ीको ही अपनाया। डिंगलकी आधार-भूत भाषा भी मारवाड़ी ही है। फलतः राजस्थानीके लिये सदा मरुभाषा शब्द ही प्रयुक्त हुआ। प्रान्तका नाम राजस्थान होने पर भाषा भी राजस्थानी कहलाने लगी। बोलचालमें राजस्थानीके लिये मारवाड़ी नामका प्रयोग अभी तक होता है।

साहित्यिक राजस्थानी, विशेषतः चारणी साहित्यकी भाषा, डिंगल नामसे प्रसिद्ध रही है। यह नाम भी विशेष प्राचीन नहीं है। इसका विवेचन आगे किया जायगा।

यह भाषा प्राचीन कालसे अेक स्वतन्त्र भाषा रही है। आठवीं शताब्दीमें उद्योतनसूरिने कुवलयमाला नामका अेक कथा-ग्रन्थ लिखा जिसमें अठारह देश-भाषाओंको गिनाया गया है। उनमें मरुदेशकी भाषाकी भी गिनती की गयी है। सत्रहवीं शताब्दीमें अबुलफजलने अपने आईने-अकबरी ग्रन्थमें भारतवर्षकी प्रमुख भाषाओंमें मारवाड़ीको भी गिनाया है।

४—शाखाअें

बोलचालकी भाषा कोस-कोस पर बदलती है अतः किसी भी भाषामें शाखा-प्रशाखाओंका होना स्वाभाविक है। राजस्थानीके भी अनेक भेद-प्रभेद हैं। ग्रियर्सनके अनुसार राजस्थानीके कोई बीस भेद हैं। मैकालिस्टरने अकेली जयपुरीके ही १५ भेदोंका उल्लेख किया है।

राजस्थानीके अनेक भेद-प्रभेद होने पर भी उनमें परस्पर इतना अन्तर नहीं कि अेकको बोलनेवाला दूसरेको भली भांति न समझ सके। व्याकरणका मूल ढाँचा सबका समान है। व्याकरणके ढाँचेकी यह समानता ही राजस्थानीको ब्रजभाषा, खड़ीबोली और गुजराती से पृथक करती है। यह बात भी ध्यानमें रखना आवश्यक है कि अनेक भेद-प्रभेदोंके होने पर भी समस्त राजस्थानमें साहित्य और शिक्षाकी भाषा सदा अेक ही रहती आयी है। हिन्दीके आगमनके पूर्व साहित्यकी अेक ही भाषा प्रान्त भरमें प्रचलित थी। हां, ब्रजभाषाका प्रयोग भी यदा-कदा किया जाता था।

राजस्थानीकी चार मुख्य शाखाअें हैं—

(१) पश्चिमी राजस्थानी या मारवाड़ी—इसका क्षेत्र मारवाड़, मेवाड़, जेसळमेर, बीकानेर और शेखावाटीका प्रदेश है। जोधपुरी, मेवाड़ी, थळी और शेखावाटी बोली—ये इसकी मुख्य प्रशाखाअें हैं।

(२) पूर्वी राजस्थानी या ढूंढाड़ी-हाड़ौती—इसका क्षेत्र जयपुर, हाड़ौती आदिका पूर्वी प्रदेश है। जयपुरी (ढूंढाड़ी) और हाड़ौती इसकी मुख्य प्रशाखाअें हैं।

(३) उत्तर-पूर्वी राजस्थानी या मेवाती—इसका क्षेत्र अलवर और उसके आसपासका प्रदेश है। इसकी अेक अंतःशाखा अहीरी है।

(४) दक्षिणी राजस्थानी या माळवी—इसका क्षेत्र मालवाका प्रदेश है जिसमें इंदौर, भोपाल, धार, रतलाम, सीतामऊ आदि राज्य तथा उज्जैन आदि प्रदेश सम्मिलित हैं। इसकी अेक अन्तःशाखा नेमाड़ी है।[1]

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित भाषाओं और बोलियोंके साथ भी राजस्थानी का गहरा सम्बन्ध है—

(१) बंजारी—यह राजस्थानसे बाहर रहनेवाले बंजारोंकी भाषा है। स्थानानुसार इसके अनेक भेद हैं। ये बंजारे राजस्थानके मूल निवासी थे और व्यापारके सिलसिलेमें दूर-दूर तक पहुंचते थे। पिछली शताब्दियोंमें वे उन-उन प्रदेशोंमें बस गये और वहांके स्थायी निवासी हो गये, पर अपनी भाषाको अपनाये रहे।

---

१ तुलनाके लिअे चारों बोलियोंकी जनसंख्याके आंकड़े नीचे दिये जाते है (ये आंकड़े पुराने हैं परंतु इनसे बोलियोंकी आपेक्षिक विशेषताओंका अनुमान हो सकेगा)—

१	पश्चिमी राजस्थानी या मारवाड़ी	६०,८८,०००
२	पूर्वी राजस्थानी	२९,०७,०००
३	उत्तरपूर्वी	१५,७०,०००
४	मालवी	४३,५०,०००
	नेमाड़ी	४,७४,०००
५	बंजारी-गूजरी	४,५५,०००
६	अज्ञात	४,५१,०००
		१,६२,९५,०००

(२) गूजरी—यह विशेषतः हिमालयकी तराईमें बसे हुओ गूजरों, अहीरों आदिकी बोलियोंका समूह है।

(३) भीली—यह गुजराती और राजस्थानीके बीचकी मिश्रित भाषा है।

(४) पहाड़ी वर्गकी भाषाअें—इनका राजस्थानीके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। इनमें प्रमुख नेपाली, कुमाऊंनी, गढ़वाली आदि हैं। नेपाली नेपालके गोरखोंकी भाषा है जो राजस्थानसे जाकर वहाँ बसे थे।

(५) भारतीय सांसियों या जिप्सियों Gypsies की बोलियोंका संबंध भी राजस्थानीसे है; इनके पहाड़ी, भामटी, बेलदारी, ओडकी, लाडी, मछरिया, साँसी, कंजरी, नटी, डोमी आदि अनेक भेद-प्रभेद हैं।

राजस्थानीकी चारों शाखाओंमें विस्तार और साहित्य दोनों ही दृष्टियोंसे पश्चिमी राजस्थानी या मारवाड़ी विशेष महत्त्वपूर्ण है। गुजराती प्राचीन पश्चिमी राजस्थानीसे ही विकसित हुई है। राजस्थानीका प्रायः समस्त साहित्य इसी पश्चिमी राजस्थानीमें, या यों कहिये इसकी प्रमुख उपशाखा जोधपुरीमें, लिखा गया है[1]। डिंगलका मूलाधार भी यह पश्चिमी राजस्थानी ही है। राजस्थानीकी दूसरी शाखाओंमें लोक-साहित्यके अतिरिक्त अन्य साहित्य नाम-मात्रको, नहींके बराबर, है।

---

1 वर्त्तमान शताब्दीमें पश्चिमी राजस्थानीकी अेक दूसरी शाखा शेखावाटीकी बोलीमें भी कुछ साहित्य लिखा गया है।

राव केल्हणका वि० सं० १४७५ का शिलालेख

राव केल्हणका वि० सं० १४७५ का शिलालेख

[दशरथ शर्मा]

श्रीगंगासिंह गोल्डन जुबिली म्यूजियम, बीकानेर, में महिषासुर-मर्दिनीकी अेक अत्यन्त सुन्दर प्रस्तर-मूर्ति वर्त्तमान है। भाग्यवशात् इसका मुख भग्न न होता तो यह अपने ढंगकी अेक ही चीज होती। वर्त्तमान अवस्थामें भी यह बीकानेरी शिल्पका उत्कृष्ट नमूना है। कठोर जैसलमेरी पत्थर पर भाव-भंगी और कार्य-शक्तिका इतना सफल चित्रण कोई सरल काम न रहा होगा।

मूर्तिके नीचे यह लेख खुदा है—

पंक्ति १—संवत् १४७५ वर्षे कार्तिक[1] सुदि षष्टी (ष्ठी) सु (शु) क्रदिने

„ २—देवी श्री घंटालि सह। महाराज श्री केल्हण

„ ३—करावितं[2]। कमर[3] श्री चाचा ॥ सूत्रधार हापाघटितं ॥[4]

लेखको खुदवानेवाला महाराज श्रीकेल्हण अपने समयका प्रसिद्ध व्यक्ति था। जैसलमेरके रावल केहरका सबसे बड़ा पुत्र होने पर भी पिताकी इच्छाके बिना अन्यत्र सगाई कर लेनेके कारण, वह जैसलमेरकी गद्दी पर न बैठ सका था। किन्तु वीर पुरुष अैसी असुविधाओंकी परवाह नहीं करते। वह पहले आसनी-कोटमें जाकर रहा, किंतु यहां जैसलमेरसे हर समय झगड़ा होनेकी शंका बनी रहती थी। बीकमपुर उस समय खाली पड़ा था। चारों तर्फसे जंगलको साफ कर केल्हणने उसे अच्छी तरह बसाया।[5]

कुछ समय बाद केल्हणने पूगल पर भी कब्जा कर लिया। यह पहले रावल

---

१ 'क' ऊपर से जोड़ा गया है।

२ 'कारितं' के स्थान पर राजस्थानी शिलालेखोंमें बहुधा 'कारावितं' और 'कारापितं' का प्रयोग मिलता है।

३ नैणसीकी ख्यात, भाग २ पृष्ठ ३५४।

४ लेखकी छापके लिअे मैं म्यूजियमके असिस्टेंट क्यूरेटर कंवर सगतसिंहका अनुगृहीत हूं।

५ वही, पृष्ठ ३५८। नैणसीकी अेतद्विषयक कथामें कुछ और बातें भी हैं।

लखणसेनके पुत्र राणगदे भाटीके अधिकारमें था। राणगदे भाटी मंडोरके राव चूंडाके हाथ मारा गया। पूगलकी विधवा रानीको इस वैरका बदला लेनेका वचन देकर केल्हण पूगलके समान समृद्ध स्थानका स्वामी बन गया।[1]

देरावरका प्रसिद्ध दुर्ग इसने इससे अधिक छल-प्रपंच से हस्तगत किया था। प्रसिद्ध ख्यात-लेखक नैणसीने यह कथा इस प्रकार दी है—

> केहरका सगा भाई, सोम, देरावरमें मर गया, तब ४०० मनुष्योंको लेकर राव केलण वहां शोक मोचन करानेको गया। सोमके पुत्र सहसमलने उसको गढ़में न घुसने दिया, परन्तु वह कई सौगन्द-शपथ व कौल-बचन करके गढ़ में आया और पांच-सात दिन तक रहा। सहसमलने कहलाया कि अब जाओ, परन्तु उसने गढ़ न छोड़ा। तब सहसमल-रूपसी क्रोधित होकर अपना मालमता गाड़ोंमें भर, गढ़ छोड़कर, निकल गये और सिंधमें जा रहे। देरावर केलणके हाथ आया।[2]

राव केल्हणने अपने राज्य-विस्तारके लिओ अनेक युद्ध किये होंगे किन्तु इतिहाससे हमें ओक ही ज्ञात है। मंडोवरका राव चूंडा भाटियोंका प्रबल विरोधी था। इसने भाटियोंके अनेक स्थानों पर अधिकार कर लिया था, ओवं उन्हें अनेक अन्य बातोंमें भी नीचा दिखाया था। भाटियोंने केल्हणकी अध्यक्षतामें अपने अपमान, वैर, और भूमिनाशका बदला लेनेकी तैयारी की। किंतु राव चूडासे अकेले लोहा लेना सहज न था। अतः मुलतानके सैयदों, जांगलूके सांखलों और जोहियों आदि अनेक जातियों से मिलकर केल्हणने चूंडा पर आक्रमण किया। राव चूंडा युद्धमें काम आया और केल्हण ओवं उनके मित्र विजयी हुओ।[3]

---

१ वही पृष्ठ ३५९।

२ वही, पृष्ठ ३५९।

३ वही, पृष्ठ ३५०। इससे अधिक प्राचीन ओवं प्रामाणिक वर्णन बीठू सूजा के 'छन्द राउ जैतसी-रउ' में देखें।

केल्हणने बहुत वर्ष तक राज्य किया। यह प्रसिद्ध है कि उनके अधीन इतने दुर्ग थे—

पूंगल बीकमपुर पुगह विम्मणवाह मरोट।
देरावर नै केहरोर केलण इतरा कोट॥[१]

केल्हणके बाद उसका पुत्र चाचा, जिसका इस शिलालेखमें उल्लेख है, गद्दी पर बैठा। इसने बीकमपुर अपने भाई शिणमलको दे दिया। राव चाचाके अधिकारमें इतने दुर्ग थे : पूंगल, केहरोर, मरोठ, मम्मणवाहण और देरावर। बीकानेर राज्य में पूंगलका ठिकाना अब भी इनके वंशजोंके अधिकारमें है।[२]

शिलालेखमें सूत्रधार हापाका भी उल्लेख है। वह वास्तवमें अच्छा कलाकार रहा होगा। उसने इस सुन्दर मूर्तिका निर्माण कर अपना नाम चिरस्थायी कर लिया है।

लेखका समय सम्वत १४७५ है। केल्हण कम-से-कम उस समय तक जीवित था। प्रस्तर-मूर्ति सम्भवतः पूंगलसे प्राप्त हुई है। यदि यह अनुमान ठीक है तो केल्हणका वहां इस सम्वतसे पूर्व अधिकार हो चुका होगा।

---

१ वही, पृष्ठ ३५९।

२ वही, पृष्ठ, ३६०।

राजस्थानी साहित्यरा निर्माण और संरक्षणमें जैन विद्वानांरी सेवा

[अगरचन्द नाहटा]

जैन धरमरा तीर्थंकरां और विद्वानां लोक-भाषारो महत्त्व सरूसूं ही भली भांत समझ लियो हो। जनतारै हिवड़ै तांई पूगणरो अेकमात्र साचो साधन लोक-भाषा हीज है इण वातनै वां आछी तरांसूं हृदयंगम कर ली ही। ठेटसूं ही वां आपणा उपदेश लोगांरी बोलचालरी भाषामें दिया। जकी वातनै आपणा विद्वान आज समझण लागा है उण वातनै जैन धरमरा महात्मावां हजारां बरसां पैली समझली ही। भगवान महावीररी इण सूझनै पछै आवणवाळा घणकरा धर्म-प्रचारकां और पंथ-थापकां माथै चढायी और आप-आपणा पंथांरो साहित्य लोक-भाषामें — साधारण लोगांरी बोलीमें — वणायो।

प्राकृतरै पछै अपभ्रंशरो घणकरो साहित्य जैन विद्वानांरी रचना है। अपभ्रंश पछै राजस्थानी, गुजराती, हिन्दी, मराठी, तेलगू, कन्नड़ वगैरा लोक-भाषावांमें भी वै बराबर साहित्यरी रचना करता रया। इण भाषावांरो घणो-सो आरम्भिक साहित्य जैन लेखकांरो वणायोड़ो है।

लोकभाषामें साहित्य-रचनारो काम जैन विद्वानां बराबर चालू राख्यो जकै कारण इण भाषावांरै क्रमिक विकासरो अध्ययन करणमें जैन-साहित्यरो अध्ययन घणो जरूरी है। जकी शताब्दियांरा लोकभाषारा उदाहरण दूजा साहित्यमें जोयां ही को लाधै नी वां शताब्दियांरा उदाहरण जैन-साहित्यमें भरपूर लाधसी।

राजस्थानीमें तो जैन-साहित्यरो घणो मोटो भंडार है। राजस्थानीरै आरम्भसूं लगा'र ठेट आज तांई कोई दशाब्दी इसी कोनी हुसी जिणमें रचियोड़ी जैन विद्वानांरी रचनावां नहीं मिलसी। राजस्थानी भाषारो अखंड इतिहास लिखणो हुवै तौ जैन-साहित्यरी मदतसूं सै'ज ही लिखीज सकसी। और ओ साहित्य कठण डिंगळमें नहीं पण लोगांरी बोलचालरी भाषामें है जकैनै जनता आज भी विना टीका-टिप्पणीरी सायतारै समझ सकै है।

नैतिक दृष्टिसूं भी जैन-साहित्यरो घणो महत्त्व है। रोचक हुतां थकां भी जैन-साहित्य पवित्र भावनानै जनम देवै जिसो है। जैन विद्वानां आपरै हीज धरमरी कहाण्यां लिखी हुवै इसी वात भी कोनी। लोगोंमें चलती लौकिक कथा-कहाण्यां माथै भी जैनांरो घणो मोटो साहित्य है। अेक विक्रमाजीत राजारी कथावांसूं सम्बन्ध राखती पचाससूं ऊपर जैन विद्वानांरी वणायोड़ी पोथियांरो पतो लाग्यो है।

जैन विद्वानांरो लिखियोड़ो राजस्थानी साहित्य गद्य और पद्य दोनूं रकमरो है। पद्यरो सबसूं मोटो ग्रंथ तेरापंथी आचार्य श्रीजीतमालजीरी भगवती-सूत्ररी ढाळां है जकांरो बिस्तार ६० हजार श्लोक प्रमाण है। गद्य-ग्रंथांमें विस्ताररी दृष्टिसूं महत्त्वपूर्ण भगवती-सूत्ररी गद्य भाषा-टीका है जकैरो बिस्तार कोई ८२ हजार श्लोक प्रमाण है। राजस्थानीरो घणो महत्त्वपूर्ण इतिहास-ग्रंथ मुहणौत नैणसीरी ख्यात है। इण ग्रंथरी प्रौढ भाषाशैलीरी प्रशंसा राजस्थानीरा जाणीता विद्वानां करी है। राजस्थानीरो प्राचीन गद्य लगभग सगळो-र-सगळो जैन लेखकांरी रचना है।

कोई डोढ हजार वरसांसूं राजस्थान और गुजरातमें जैन-धरमरो प्रचार जोर-सोरसूं रयो है। गांव-गांवमें ओसवाळ वगैरा जैन श्रावकांरो प्रादुर्भाव हुयो और बांरा गुरु जैन-मुनि बराबर आवण-जावण लाग्या। धीरे-धीरे कईक जैन यति गांवांमें स्थायी रूपसूं वस भी गया। आं लोगांरै उपदेससूं सईकड़ां ही लोग जैन-धरममें दीक्षित हुया, विद्वान वण्या और मातृभाषारो भंडार भरणमें तत्पर हुया। साथ ही बै लोग जका-जका आछा-आछा ग्रंथ देखता बांरी नकलां भी करता रया। हजारां रास, चौपाई, भास, धवळ, संबंध, प्रबन्ध, ढाळ वगैरांरी रचना करी जकांरो प्रमाण आठ-दस लाख श्लोकांसूं कम कोनी। गद्यमें भी इण तरां बाळावबोध, टब्बा वगैरा टीकावां लिखी जकांरो प्रमाण भी छै-सात लाख श्लोक जरूर हुसी। कई-कई विद्वान तो इसा हुया जकां अकेलांही लाख-लाख श्लोक प्रमाण रचना करी जिणांमें तेरापंथी आचार्य श्रीजीतमलजी तथा कविवर जिनहर्षजी विशेष कर उल्लेखनीय है। जैन सिवाय दूजा विद्वानांमें शायद ही कोई इत्तै परिमाणमें राजस्थानी भाषामें रचना करी हुवै। जैनांरै वास्तै आ घणै गौरवरी वात है।

रास-चौपाई वगैरा बडा ग्रंथांरै सिवाय राजस्थानीमें लिखियोड़ो जैन

विद्वानांरो फुटकर साहित्य भी लाखां श्लोकां प्रमाणरो है। स्तवन, सज्झाय, पद, गीत, छंद, हियाळी, सिलोका, पूजा. संवाद, दूहा वगैरा फुटकर साहित्यरो तो कोई पार ही कोनी। समयसुंदरजी जिसा कवियां ५००-६०० पद वणाया है। ओ साहित्य सब भांतरो है--नीतिरो, विनोदरो, उपदेसरो, भक्तिरो। जैन विद्वानांरी राजस्थानी साहित्यरी सेवा सर्वांगीण है। कोई इसो विषय कोनी जिण पर जैन लेखकां कोई रचना नहीं लिखी हुवै।

जैन विद्वानां राजस्थानो साहित्यरी कोरो रचना ही को करी नी पण राजस्थानी साहित्यरी रक्षामें भी घणो भाग लियो। जैन और जैनेतर दोनूं विद्वानांरा लिखियोड़ा ग्रंथांनै घणै जतन और घणी सम्हाळसूं आपरा भंडारांमें राख्या। जैनेतर विद्वानांरा घणा ग्रंथांरी पड़तां आज जैन-भंडारांरै सिवाय दूसरी जाग्यांमें अलभ्य है। नरपति नाल्हरै वीसळदे-रासौ ग्रन्थनै जैन विद्वानां ही ज नष्ट हुवणसूं बचायो। इसा-इसा हजारां ग्रन्थ है जकांनै आज तांई कायम रांखणरो जस अेकमात्र जैन विद्वानांनै है।

जैन विद्वानां अेक और मोटो काम करियो। वां आपरी रचनावां बोलचालरी भाषामें लिखी जियांन छन्द भी घणा-सा लोक-साहित्यसूं लिया। जनतामें चालू गीतांरी ढाळां लेयनै वां आपणी कविता लिखी। आं ढाळांरा नाम और पैलड़ी पंक्तियां भी वां सु-रक्षित राखी। इसी ढाळां अथवा देशियांरी अेक सूची मंबाईरा जैन विद्वान मोहनलाल दलीचन्द देसाईजी वणायी है। लोकप्रचलित गीतांनै लिपि-बद्ध करनै सुरक्षित राखणरौ काम भी अनेक जैन विद्वानां कियो है। लोक-साहित्यनै इण तरां अमर करणरी जैन विद्वानांरी सूझरै सामै माथो आपैई आदरसूं झुक जावै है।

घणा साहित्यिक विद्वानां जैन साहित्यनै अेक संप्रदायरो साहित्य वतायनै उणनै उपेक्षारी दृष्टिसूं देख्यो है पण वांरो ओ विचार भ्रांति-पूर्ण है। जैन साहित्यरो अ-परिचय ही वांरै इण विचाररो कारण है। वास्तवमें जैन साहित्यरो घणो भाग इसो है जको सार्वजनिक साहित्य कहीज सकै है। हजारूं राजस्थानी जैन कवि और लेखक आज अंधकारमें पड़्या है। जैन साहित्यरै प्रकाशमें आणैसूं इण कथनरी सत्यता आप ही सिद्ध हु ज्यासी। इण वास्तै सबसूं जरूरी वात जैन साहित्यनै प्रकाशमें लावणरी है। आशा है राजस्थानरा विद्वान तथा जैन धनी-मानी अठीनै ध्यान देसी।

नैतिक दृष्टिसूं भी जैन-साहित्यरो घणो महत्त्व है। रोचक हुतां थकां भी जैन-साहित्य पवित्र भावनानै जनम देवै जिसो है। जैन विद्वानां आपरै हीज धरमरी कहाण्यां लिखी हुवै इसी वात भी कोनी। लोगोंमें चलती लौकिक कथा-कहाण्यां माथै भी जैनांरो घणो मोटो साहित्य है। अेक विक्रमाजीत राजारी कथावांसूं सम्बन्ध राखती पचाससूं ऊपर जैन विद्वानांरी वणायोड़ी पोथियांरो पतो लाग्यो है।

जैन विद्वानांरो लिखियोड़ो राजस्थानी साहित्य गद्य और पद्य दोनूं रकमरो है। पद्यरो सबसूं मोटो ग्रंथ तेरापंथी आचार्य श्रीजीतमालजीरी भगवती-सूत्ररी ढाळां है जकांरो बिस्तार ६० हजार श्लोक प्रमाण है। गद्य-ग्रंथांमें विस्ताररी दृष्टिसूं महत्त्वपूर्ण भगवती-सूत्ररी गद्य भाषा-टीका है जकैरो बिस्तार कोई ८२ हजार श्लोक प्रमाण है। राजस्थानीरो घणो महत्त्वपूर्ण इतिहास-ग्रंथ मुहणौत नैणसीरी ख्यात है। इण ग्रंथरी प्रौढ भाषाशैलीरी प्रशंसा राजस्थानीरा जाणीता विद्वानां करी है। राजस्थानीरो प्राचीन गद्य लगभग सगळो-र-सगळो जैन लेखकांरी रचना है।

कोई डोढ हजार वरसांसूं राजस्थान और गुजरातमें जैन-धरमरो प्रचार जोर-सोरसूं रयो है। गांव-गांवमें ओसवाळ वगैरा जैन श्रावकांरो प्रादुर्भाव हुयो और वांरा गुरु जैन-मुनि बराबर आवण-जावण लागग्या। धीरे-धीरे कईक जैन यति गांवांमें स्थायी रूपसूं वस भी गया। आं लोगांरै उपदेससूं सईकड़ां ही लोग जैन-धरममें दीक्षित हुया, विद्वान बण्या और मातृभाषारो भंडार भरणमें तत्पर हुया। साथ ही वै लोग जका-जका आछा-आछा ग्रंथ देखता बांरी नकलां भी करता रया। हजारां रास, चौपाई, भास, धवळ, संबंध, प्रबन्ध, ढाळ बगैरांरी रचना करी जकांरो प्रमाण आठ-दस लाख श्लोकांसूं कम कोनी। गद्यमें भी इण तरां बाळावबोध, टब्बा वगैरा टीकावां लिखी जकांरो प्रमाण भी छै-सात लाख श्लोक जरूर हुसी। कई-कई विद्वान तो इसा हुया जकां अकेलांही लाख-लाख श्लोक प्रमाण रचना करी जिणांमें तेरापंथी आचार्य श्रीजीतमलजी तथा कविवर जिनदर्दजी विशेष कर उल्लेखनीय है। जैन सिवाय दूजा विद्वानांमें शायद ही कई इत्तै परिमाणमें राजस्थानी भाषामें रचना करी हुवै। जैनांरै वास्तै आ घणै गौरव री वात है।

रास-चौपाई वगैरा बडा ग्रंथांरै सिवाय राजस्थानीमें लिखियोड़ो जैन

विद्वानांरो फुटकर साहित्य भी लाखां श्लोकां प्रमाणरो है। स्तवन, सज्झाय, पद, गीत, छंद, हियाळी, सिलोका, पूजा, संवाद, दूहा वगैरा फुटकर साहित्यरो तो कोई पार ही कोनी। समयसुंदरजी जिसा कवियां ५००-५०० पद वणाया है। ओ साहित्य सब भांतरो है--नीतिरो, विनोदरो, उपदेसरो, भक्तिरो। जैन विद्वानांरी राजस्थानी साहित्यरी सेवा सर्वांगीण है। कोई इसो विषय कोनी जिण पर जैन लेखकां कोई रचना नहीं लिखी हुवै।

जैन विद्वानां राजस्थानी साहित्यरी कोरी रचना ही को करी नी पण राजस्थानी साहित्यरी रक्षामें भी घणो भाग लियो। जैन और जैनेतर दोनूं विद्वानांरा लिखियोड़ा ग्रंथांनै घणै जतन और घणी सम्हाळसूं आपरा भंडारांमें राख्या। जैनेतर विद्वानांरा घणा ग्रंथांरी पड़तां आज जैन-भंडारांरै सिवाय दूसरी जागयांमें अलभ्य है। नरपति नाल्हरै वीसळदे-रासौ ग्रन्थनै जैन विद्वानां ही ज नष्ट हुवणसूं बचायो। इसा-इसा हजारां ग्रन्थ है जकांनै आज तांई कायम रांखणरो जस अेकमात्र जैन विद्वानांनै है।

जैन विद्वानां अेक और मोटो काम करियो। बा आपरी रचनावां बोलचालरी भाषामें लिखी जियांन छन्द भी घणा-सा लोक-साहित्यसूं लिया। जनतामें चालू गीतांरी ढाळां लेयनै वां आपणी कविता लिखी। आं ढाळांरा नाम और पैलड़ी पंक्तियां भी वां सु-रक्षित राखी। इसी ढाळां अथवा देशियांरी अेक सूची मंबाईरा जैन विद्वान मोहनलाल दलीचन्द देसाईजी वणायी है। लोकप्रचलित गीतांनै लिपि-बद्ध करनै सुरक्षित राखणरौ काम भी अनेक जैन विद्वानां कियो है। लोक-साहित्यनै इण तरां अमर करणरी जैन विद्वानांरी सूझरै सामै माथो आपैई आदरसूं झुक जावै है।

घणा साहित्यिक विद्वानां जैन साहित्यनै अेक संप्रदायरो साहित्य वतायनै उणनै उपेक्षारी दृष्टिसूं देख्यो है पण वांरो ओ विचार भ्रांति-पूर्ण है। जैन साहित्यरो अ-परिचय ही वांरै इण विचाररो कारण है। वास्तवमें जैन साहित्यरो घणो भाग इसो है जको सार्वजनिक साहित्य कहीज सकै है। हजारूं राजस्थानी जैन कवि और लेखक आज अंधकारमें पड़्या है। जैन साहित्यरै प्रकाशमें आणैसूं इण कथनरी सत्यता आप ही सिद्ध हु ज्यासी। इण वास्तै सबसूं जरूरी वात जैन साहित्यनै प्रकाशमें लावणरी है। आशा है राजस्थानरा विद्वान तथा जैन धनी-मानी अठीनै ध्यान देसी।

डूंगजी-जवारजीरो गीत

[राजस्थानमें डूंगजी-जवारजीका गीत बहुत प्रसिद्ध और लोक-प्रिय है। अबतक यह लिखित रूपमें प्राप्य नहीं था। राजस्थानी लोकगीतोंके परिश्रमी अन्वेषक और संग्रहकर्त्ता श्रीयुत गणपति स्वामीने इसे लिपिबद्ध करके साहित्य-संसारका महान उपकार किया है। गीतकी प्रतिलिपि हमें पिलाणीके बिड़ला कालेजके अधिकारियोंकी कृपासे प्राप्त हुई है जिसके लिअे हम उनके अत्यन्त आभारी हैं।]

(१)

सिवरूं देवी सारदा कोइ तनै भवानी! ध्याऊं
जां मरदांरी छांवळी मैं च्यार कूंटमें गाऊं

(२)

डूंग न्हाररी कोटड्यां जुड़ी कचेड़ी आय
जाजम ऊपर जाजम बिछ रही, खूब पड़ै रजवाड़
लोट्यो जाट, करणियो मीणो, डूंगसिंघ सरदार
तीनूं मिळ भेळा हुवै तो करै तीसरी बात

---

(१)

देवी सरस्वतीको स्मरण करता हूं। हे भवानी! तुम्हारा ध्यान करता हूँ। जिससे बीरोंकी कीर्त्तिको मैं चारों दिशाओंमें गा सकूं।

(२)

सिंघके समान डूंगसिंघकी कोटड़ीमें कचहरी आकर जुड़ी। जाजिम पर जाजिम बिछ रही थी। खूब......पड़ रहा था। जाट लोटिया, मीणा करणिया और सरदार डूंगसिंघ—ये तीनों जब मिलकर इकट्ठे होते हैं तो तीसरी (नयी) बात करते हैं। डाकू डूंगसिंघ बोला—अरे लोटिया जाट! तू सुन, आदमिओंके लिअे मोठ-बाजरी बाकी

बोल्यो डाकू डूँगसिंघ, तूं सुण रे लोठ्या जाट !
मिनखां निठगी मोठ-बाजरी, घोड़ां निठग्यो घास
मरदांमें तूँ मरद आगलो, हेरवांरो तूं लाट
रामगढ़की हेर लगा दे, जद जाणूँ ताय जाट

लोठ्यो जाट करणियो मीणो ज्यांरो वालो मेळ
डूँग न्हार री भरी कचेड्यां लीनी वात सकेळ
लोठ्यो जाट करणियो मीणो अकलां मांय वजीर
मेख पळट बै चल्या रामगढ, जाणूं छूट्या तीर
लोठ्यै लीनी ढोलकी, काइ, करण्यै लीनूं वांस
घर-घर घालै ख्याल-तमासा, घर-घर भाळै माल
रामगढ़रै सेठांरी बै लदी कतारां जाय
सोनारी पूतळियाँ, मरदां ! मांय मूंगिया भार
घुरसामलजी, अणंतमलजी, बां सेठां रो माल
रामगढ़ सूं चली कतारवां अजमेरां नै जाय

नहीं रही, घोड़ोंके लिये घास बाकी नहीं रहा, तू मर्दोंमें श्रेष्ठ मर्द है, जासूसोंका तू लाट (राजा) है, तू रामगढ़की जासूसी कर दे, हे जाट ! तब मैं तुझे समझूंगा ।

जाट लोटिये और मीणे करणियेने, जिनका प्यारा मेल था, डूंगसिंघकी भरी कचहरीमें इस बातको संभाल लिया । जाट लोटिया और मीणा करणिया बुद्धिमें वजीर थे । वे वेश बदलकर रामगढको चले मानो तीर छूटे हों । लोटियेने ढोलक ली और करणियेने बांस लिया । घर-घरमें खेल-तमाशा करने लगे और घर-घरमें माल देखने लगे (धन का सुराग लेने लगे) ।

रामगढके सेठोंकी लदी हुई कतारें जा रही थीं जिनके भीतर सोनेकी पुतलियां और मूंगोंके ढेर थे । घुरसामलजी और अनंतमलजी ये उन सेठोंके नाम थे । रामगढसे चली हुई कतारें अजमेरको जा रही थीं । जाट लोटिये और मीणे करणियेने खबर दी कि हे डूंगजी ! लूटता है तो आडावळाके पहाड़ोंमें लूट ले; आडावळा पार करने पर फिर हाथके (वशके)नहीं रहेंगे ।

लट्यै जाट करणियै मीणै   हेरो दियो लगाय
लूंटै छै तो लूंट, डूंगजी!   अडै-वळैरै मांय
आडो-वळो डाकियां पाछै   वसका रैसी नांय

सात सवारां नीसर्‌या, बै   हुया कतारां लार
चलती बोरी काट दी, बां   मूंग्या दिया खिंडाय
चुग-चुग हार्‌या वाळदी,   चुग-चुग छक्या गवाळ
चुग-चुग दुनिया धापगी.   बा जै बोलंती जाय
सात ऊंट दरबांका भरिया,   पोकरजीनै जाय
पोकरजीकै घाट पर बां   जाजम दिवी बिछाय
गरीब-गुरबां बामणांनै   हेलो दियो मराय
रुपियो-रुपियो दियो बामणां,   मो'रां चारण-भाट
असी मो'र दी नानगसाही,   साखो दियो जुड़ाय

धरम-पुन्न यों बांट डूंगजी   झड़वासैनै जाय
झड़वासै मैं सासरो   साळां सूं मिळबा जाय

वे सात सवारोंको लेकर निकले और कतारोंके पीछे हो गये। उनने चलती हुई बोरियोंको काट डाला, मूंगोंको बिखरा दिया, जिनको चुन-चुन कर बैलोंवाले थक गये, ग्वाले थक गये। दुनिया चुन-चुन कर अघा गयी। वह जय बोलती हुई चली। डूंगजी और उसके साथियोंने सात ऊँट उस धनके भरे और पुष्कर तीर्थको गये। वहां गरीबों और ब्राह्मणोंको घोषणा करवा दी। रुपया-रुपया ब्राह्मणों को दिया और चारण-भाटोंको मोहरें दी। नानकशाही अस्सी मुहरें देकर प्रशंसा के गीत गवाये।

इस प्रकार धर्म और पुण्यमें धनको बांटकर डूंगजी झड़वासे गांवको गया। झड़वासेमें ससुराल थी। सालोंसे मिलने गया। झड़वासेके नवलसिंघ और भैरोंसिंघ ने खूब अतिथि-सत्कार किया। कहा—पाहुने! बहुत दिनोंसे आये हो, गोठ जीमते जाओ। दूधसे धोकर चावल रांधे, घीसे धोकर दाल रांधी, बोरियां भर-भर शक्कर मंगायी और घीके नाले बहा दिये।

झड़वासैका नौलसिंघजी
भैरूंसिंघजी घणी करी मनवार
घणा दिनांसूं आया पावणा, गोठ जीमता जाय
दूधां धोय'र चावळ रांध्या, घिरतां धाय'र दाळ
बोरी भर-भर खांड मंगायी, घिरत चलाया खाळ

(३)

रामगढ़का सेठांनै जद खबर पड़ी है जाय
सेठां लिख परवानो भेज्यो दिल्लीरै दरबार
लूंटी म्हांरी लदी कतारां, लूंट्यो नौ लख माल
म्हांरी धरामें हिल्यो डूंगजी, लूंट-लूंटकै खाय
अबकै तो बैं लूंटो कतारां, अब लूंटैगो हेली
आसामी ठस पड़गी, होगी रुपियाकी धेली
सेठां लिख परवानो भेज्यो, बडै सा'बनै देणा
डूंगसिंघ म्हांरै लारै पड़ग्यो पकड़ कैद कर लेणा

---

(३)

रामगढके सेठोंको जब आकर खबर पड़ी तो सेठोंने यह पत्र लिखकर दिल्लीके दरबार-में (अंग्रेजोंके पास) भेजा—हमारी लदी हुई कतारोंको लूट लिया, नौ लाखका माल लूट लिया, यह डूंगजी हमारी धरतीसे परच गया है, इसे लूट-लूटकर खाता है, इस बार तो उसने कतारें लूटी हैं, अबकी बार हवेलीको भी लूट लेगा, आसामियां सब ठस पड़ गयी हैं, रुपयेकी धेली रह गयी है। इस प्रकार पत्र लिखकर सेठोंने भेजा और कहा—ले जाकर बड़े साहबको देना और कहना कि डूंगसिंघ हमारे पीछे पड़ गया है, इसे पकड़कर कैद कर लेना।

अंग्रेजोंको खबर पड़ी तब चार फौजें चढ़कर चलीं। रात-रात चलकर वे सीकरमें पहुँची और सीकरके ठाकुरसे कहा—हे सीकरके प्रतापसिंघ ! डूंगसिंघको हमें पकड़वा दे। ठाकुरने कहा—वह हमारा भाई-भतीजा (कुटुंबी) लगता है, पकड़ाया नहीं जा सकता, वह झड़वासेमें बैठा गोठका माल खा रहा है।

अंगरेजांनै खबर पड़ी जद चड़गी फौजां च्यार
रात-रातकी करी मजल, बै पूंची सीकर मांय
सीकररा परतापसिंघ! म्हांनै डूंग न्हार पकड़ाय
म्हांरो लागै भाई-भतीजो, पकड़ायो ना जाय
झड़वासैमैं बैठो डूंगजी माल गोठको खाय

सीकरहूं बे चाली फौजां, झड़वासैमैं आयी
आसै-पासै खड्या सिपाही, घेरो दियो लगायी
झड़वासैका भैंरूसिंघ! तूं झट दे बायर आव
कै पकड़ा दै डूंग न्हार, नहिं धरां कैदकै मांय
रोळो-वैधो मत करो, कोइ, ना गळवैका काम
जीजो लागै डूंगजी स मैं हाथां दूं पकड़ाय

मोरझड़ीकी दारू कढावै, आंगण भटी तुड़ावै
दारू पाय'र करै वावळो, मेड़ी मांय चढावै
च्यार फिरंगी ओटै बैठ्या, च्यार चढ गया मेड़ी
डूंगसिंघनै सूतो पकड़्यो पगां ठोक दी बेड़ी
हाथां घाली हथकड़ी, रे! गळमैं तोख जंजीर
आंख खुली जद डूंग न्हार बो हुयो घणो दिलगीर

तब वे फौजें सीकरसे चलीं और झड़वासेमें आयी। आस-पास सिपाही खड़े हो गये, चारों ओर घेरा लगा दिया और कहा—हे झड़वासेके भैरोसिंघ! झटपट बाहर आ, या तो डूंगसिंघको हमें पकड़वा दे नहीं तो तुझे कैदमें डालते हैं।

भैरोसिंघ बोला—हल्ला-दंगा मत करो, झगड़े-झंझटका कोई काम नहीं, डूंगजी मेरा जीजा लगता है, अपने हाथोंसे उसे पकड़वा दूंगा। आंगनमें भट्टी लगवाकर मोर-झड़ीकी शराब निकलवायी। शराब पिलाकर बावला कर दिया और महलमें चढ़ा दिया। चार अंग्रेज छिपकर बैठ गये, चार महल पर चढ़ गये। इस प्रकार पकड़कर पैरोंमें बेड़ी ठोंक दी और हाथोंमें हथकड़ी डाल दी, गलेमें तौक और जंजीर डाल दिये। जब आंख खुली तो वह डूंगसिंघ बड़ा बेचैन हुआ। वह बड़बड़ करता अंगुलियां चबाने

बड़बड़ चाबै आंगळी, बो कड़कड़ चाबै जाड़
नैण जगै ज्यूं दीवला, ज्यांरी सवा हाथरी नाड़

जद यूं बोल्यो डूंगसिंघ, थे सुणल्यौ फिरंग्यां ! वात
फिटफिट थांरी जामणवाळी, फिटफिट थांरो बाप
आठ गादड़ा मिल थे आया, कस्यो सिंघसूं घात
सूतै सिंघनै धोखै पकड़्यो फिटफिट थांरी जात
मेरी अकेली जान है, रे ! थांरै पलटण साथ
अेकर ढीलो छोड द्यो, थांनै फेर दिखाऊं हाथ
भैरूंसिंघनै भली विचारी, भलो निभायो मेळ
आछी करी जुंवारी मेरी, भलो दियो नारेळ
दुनियांमैं तैं नांव कढायो, मूंढो हुयग्यो काळो
भाण-भनेई कै लागै तूं दगाबाजको साळो

डूंग न्हारनै पकड़कर बां पींजस दियो बिठाय
आगरैकै लाल किलैमैं दीनूं छै पूंचाय

लगा, कड़कड़ करता डाढ़ोंको चबाने लगा। उसके नेत्र अैसे जल उठे जैसे दीपक जलते हों। उसकी गर्दन सवा हाथ लम्बी थी।

तब डूंगसिंघ यों कहने लगा—हे फिरंगियों ! तुम मेरी बात सुनो। तुम्हारी जन्म देनेवाली माताको धिक्कार ! तुम्हारे पिताको धिक्कार ! तुम आठ गीदड़ इकठ्ठे होकर आये और सिंहसे विश्वासघात किया, तुमने सोये हुअे सिंहको धोखेसे पकड़ा, तुम्हारी जातिको धिक्कार है। मेरा अकेला जीव है और तुम्हारे साथ फौज है पर अेक बार ढीला छोड़ दो (बंधन खोल दो) तो फिर तुम्हें हाथ दिखाऊं, भैरोंसिंघने खूब सोचा ! मित्रता खूब निभायी ! मेरा अच्छा सत्कार किया ! खूब नारियल दिया ! (जँवाईको ससुरालसे जुहारीमें नारियल दिये जाते हैं) ! संसार भरमें नाम निकाल लिया ! खूब मुंह काला किया ! बहन-बहनोई तेरे क्या लगें ? तू दगाबाजीका साला है।

डूंगसिंघको पकड़कर उनने रथमें बैठा दिया और आगरेके लाल किलेमें पहुँचा दिया ...नीका बड़ा साहब देखने आया। बोला—रांघड़ बड़ा होशियार है, ललाट

कंपनी सा' निरखणनै आयो, रांघड़ वडो हुंस्यार
भळभळ तो माथो करै, नैणा जळै मुसाळ
इसड़ो रांघड़ अेक है, रे! जे होवै दो-च्यार
मार-मार फिरंग्यांनै कर दै कळकत्तैकै पार
दो बोतल दारूकी पीवै, पका पेटिया च्यार
भल-भल यो जायो ठकराणी म्हारां हंदो म्हार
लाल किलैकै मांयनै डूंग म्हार रख लेणा
हुकम नहीं छै काळै पाणी, नजर-कैद कर देणा

(४)

सीकर हूंतो चढ्यो ज्वारसिंघ, गढ बठोठमैं आयो
लोट्यो जाट, करणियो मीणो, दोनूं सागै लायो
सैं होळीनैं ढळी जाजमां, होय रही मतवाळ
बोतल तो जगजग करै, कोइ, प्याला करै पुकार
'तूं पी तूं पी' हो रही, कोइ, करै घणी मनवार

जगामग कर रहा है, नेत्रोंमें मशालें जल रही हैं, अैसा राजपूत यह अेक ही है, जो दो-चार हों तो अंग्रेजोंको मार-मारकर कलकत्तेके पार कर दें; यह शराबकी दो बोतलें पीता है, पक्के चार पेटिये (चार आदमियोंका भोजन) खाता हैं; ठकुरानीने इसे खूब जनम दिया! यह सिंहोंका सिंह है; इस डूंगसिंघको लाल किलेमें रख लेना, कालेपानीका हुक्म नहीं है, नजरकैद कर देना।

(४)

जुहारसिंघ सीकरसे चढ़ा और बठोठके किलेमें आया। जाट लोटिया और मीणा करणिया दोनोंको अपने साथ लाया। ठीक होलीके दिन जाजिमें बिछीं और मदिरापान होने लगा। बोतलें जगाजग कर रही थीं, प्याले सजीव होकर पुकारते थे। 'तू पी, तू पी' इस प्रकार कहकर खूब मनुहारें कर रहे थे।

जब इसकी भनकार कानमें पड़ी तो रानी (डूंगजीकी पत्नी) महलसे बाहर निकली। उसने खड़े-ही-खड़े ताना दिया—तुम्हारे शराब पीनेको धिक्कार है! किसलिअे

राणी बायर नीसरी जद कान पड़ी भणकार
ऊभी मसलो मारियो, थांरी दारूमैं धिरकार
क्यांनै बांधो सीस पाघड़ी, क्यांनै बांधो सूत ?
सागी काको पड्यो कैदमैं, क्यों वाजो रजपूत ?

मत ना, अे राणी ! मसलो मारो, मत ना काढो सेल
जैपर मिली, जाधपर मिलगी, मिलगी बीकानेर
दोय पगांनै जागां कोनी, भाई होग्या लैर

हाथांका हथियार सूंप दो, चूड़ी लाखकी पैरो
धोती-जोड़ा उरा सूंप दो, पगां घाघरी पैरो
पड़दै भीतर लुककर बैठो, नैणां कजळो घाल
मेरे कंथकी बेड़ी काटूं मैं तिरियाकी जात

ताजण लाग्या ताजणा स मरदांकै खटक्या बोल
रजपूतांकै रंग चढ्यो स बै टुळक्या कायर लोग
पांच पानको बीड़ो फेर्‍यो ज्वारसिंघ सरदार
कयां चढायो तेजरो, कइयां-रै चढगी ताप

सिर पर पगड़ी बांधते हो ? किसलिअे सूत बांधते हो ? सगा काका कैदमें पड़ा है, राजपूत क्यों कहलाते हो ?

जुहारसिंघने कहा—रानी ! ताना मत मारो, भाले जैसे चुभते बोल मत निकालो, हमारे विरुद्ध जयपुर मिल गया, जोधपुर मिल गया और मिल गया बीकानेर ? आज दो पैर रखनेको हमें स्थान नहीं मिलता ! भाई ही पीछे पड़े हैं ।

रानीने कहा—हाथोंके हथियार मुझे सौंप दो, तुम चूड़ियां पहन लो, ये धोती-जोड़े इधर दे दो, पैरोंमें लहंगा डाल लो, पर्देमें छिपकर बैठ जाओ, आंखोंमें काजल डाल लो, स्त्रीकी जात होकर भी मैं अपने पतिकी बेड़ी काटूंगी ।

ये कड़वे वचन वीरों को खटके मानो कोड़े लगे हों । वे जोशमें भर गये । राजपूतोंके रंग चढ़ा । कायर लोग खिसक गये । सरदार जुहारसिंघने पांच पानोंका बीड़ा फिराया ।

सारा नटग्या भाई-भतीजा, सब नटग्या उमराव
वावड़ता बीड़ानै भेल्यो अेक लोटियै जाट

पकी सेर बै गेरू गाळी, करियो भगवों भेस
कर मुजरो बो चल्यो आगरै, राम राखसी टेक
आगरै-नै चल्यो लोटियो, ज्यूं लंका हड़मान
कै ल्यावैलो खबर डूंगकी, कै त्यागैलो प्राण

(५)

आगरै-कै बंधवां आगै धूणी घाली सात
अेवड-छेवड़ बळै बळीतो, बीच लोटियो जाट
मार पलाखी मींट लगावै, करै गजबका फैल
लोग दिखाऊ अन-जळ ताग्यो, अेक भखै बस पून
आयै-गयैसूं मुख ना बोलै, अैसी धारी मून
छव महिनांकी लायी समाधी, खूब तप्यो दिन-रात
छठ महीनै लागतां अंग- रेजां बूझी वात

देखकर कई लोगोंने तिजारा चढ़ा लिया। कई लोगोंके बुखार चढ़ गया। सारे भाई-भतीजे मुकर गये, सब सरदार इनकार कर गये। किसीके न लेने पर बीड़ा लौट कर जाने लगा। उस लौटते हुअे बीड़ेको अकेले लोटिये जाटने उठा लिया।

(५)

उसने पक्का सेर भर गेरू गलाया और उससे वस्त्र रंगकर भगवाँ वेश बनाया। फिर जुहारसिंघको मुजरा करके वह आगरेकी ओर चल दिया। बोला—राम मेरी टेक रखेंगे। आगरेके कैदियोंके सामने उसने सात धूनियां जलायीं। इधर-उधर इन्धन जलने लगा। उनके बीचमें लोटिया जाट बैठ गया। पालथी मारकर आंखें बन्द कर लीं। गजबके फैल (आडम्बर) करने लगा। लोगोंको दिखानेके लिअे अन्न-जल भी छोड़ दिया, बस अेक पवनका भक्षण करता। अैसा मौन धारण किया कि किसी आने-जानेवालेसे मुंहसे नहीं बोलता। छै महीनोंकी समाधि लगायी। दिन-रात खूब ही तपा। छठे महीने के लगने पर अंग्रेजोंने बात पूछी—हे बाबाजी! किस देशसे आये हो? किस देशको

कुण देसां-हूं आया, बाबाजो ! कुण देसांनै जाव़ ?
पांच-पचीस थे लेल्यो, बाबा ! धूणी परै हटाव़
हुकम नहीं छै वडे सा'बको डबल कूच कर जाव़

पांच-पचीस वै लेसी, बच्चा ! ज्यांरै है घर-बार
साधू भूखा भाव़का, म्हांरै ना मायासूं काम
मांग्या खाव़ां टूकड़ा म्हे रटां रामको नाम
आबूजी-हूं आया उतर म्हे, गंगां न्हाव़ण जाव़ां
थारै किलैमैं न्हार डूंगजी, वैरा दरसण पाव़ां
खाय कायरी फिरंगी बोल्यो, सुणो, संतस्यां ! वात
अै मोडा तो कपटी कोनी, नांय कपटकी घात
आं साधांको जिव़ड़ो भटकै, मेळो द्यो करव़ाय
डूंगसिंघ कंठीबंध चेलो, आंनै देव़ो दिखाय
च्यार सिपाही आग होव़ो, च्यार सिपाही लार
जोरी-जपती करै मोड तो धरो कैदकै मांय

जा रहे हो ? हे बाबा ! पांच-पचीस रुपये ले लो और इस धूनीको परे हटाओ, बड़े साहबका हुक्म नहीं है, बस डबल मार्च कर जाओ (जल्दीसे भाग जाओ)।

हे बच्चे ! पांच-पचीस रुपये वह लेगा जिसके घर-द्वार हो; साधू भावके भूखे होते हैं; हमारे माया (धन) से कोई काम नहीं; हम मांगे हुअे टुकड़े खाते हैं और राम का नाम रटते हैं; हम आबू तीर्थसे उतरकर आये हैं, गंगा नहाने जाते हैं; तुम्हारे किलेमें डूंगसिंघ हैं, उसके दर्शन पावें, यही हमारी इच्छा है।

तब दया खाकर फिरंगी बोला—हे संतरियों ! बात सुनो, ये साधू कपटी नहीं (जान पड़ते) हैं, कोई कपटकी घात नहीं है, इन साधुओंका जी डूंगसिंघको देखनेके लिअे भटक रहा है (व्याकुल है), इनका मिलन करवा दो; चार सिपाही आगे हो जाओ और चार सिपाही पीछे, यदि मोडे (साधु) जोर-जबर्दस्ती करें तो उठाकर कैदमें रख दो।

च्यार सिपाही आगै होग्या, च्यार सिपाही लार
लोट्यो जाट, करणियो मीणो, करै किलैकी सैल
फिर-घिर देखी चारदिवारी, नांय लगायी देर
फाटक-मोरी निजरां काढ्या, लियो किलैको भेद
जद बंदवां-की गयो बुरजमैं, मनमैं भयो खुस्याल
अेवड़-छेवड़ सित्तर बंधवा, बीच डूंग सिरदार
सुरत पिछाणी जाटकी जद नैणां खळक्यो नीर
छाती भरी, हीवड़ो उमळ्यो, छुट्यो डूंगको धीर

रंग रे थारी जात, लोटिया! भलो जाटणी जायो!
आ मरबाकी घड़ी वाजगी, भलो भेखसूं आयो
कंवरां माथै हाथ फेरज्यो, राणीनै हिंवळास
भाई-भतीजांनै मुजरा कहज्यो, माजीनै घणा सिलाम
जुवारसिंघनै यूं समझायो, घरकी करै संभाळ
जीवांगा तो फेर मिलांगा, ना दरगाकै मांय

फिर चार सिपाही आगे हो गये और चार सिपाही पीछे। इस प्रकार लोटिया जाट और करणिया मीणा किलेकी सैर करने लगे। चहारदिवारीको फिर-घिरकर देख लिया, देर नहीं लगायी। फाटकों और खिड़कियोंको नजरमेंसे निकाल लिया। इस प्रकार किले का सारा भेद ले लिया। जब कैदियोंकी बुर्जमें पहुँचे तो मनमें बड़ा प्रसन्न हुआ। इधर-उधर सत्तर कैदी थे। बीचमें सरदार डूंगसिंघ था। डूंगसिंघने जब जाट (लोटिये) की सूरत पहचानी तो नेत्रोंसे आंसू बह चले, छाती भर आयी, हृदय उमड़ आया। इस प्रकार डूंगसिंघका धैर्य जाता रहा। वह बोला—अरे लोटिया! तुझे शाबाश! जाटनीने तुझे खूब जन्म दिया, यह मरनेकी घड़ी बज चुकी थी, तू खूब वेश बनाकर आया, कुंवरोंके माथे पर हाथ फेरना, रानीको धैर्य बंधाना, भाई-भतीजोंको मुजरा कहना, माताजीको बहुत-बहुत प्रणाम कहना, जुहारसिंहको यों समझाना कि घरकी देखभाल रखे, जीते रहे तो फिर मिलेंगे, नहीं तो वैकुण्ठमें मिलन होगा, जुहारसिंघको तुम चुपचाप यह खबर सुना देना कि सात दिनोंका हुक्म सुना दिया है, कालेपानी ले जायंगे।

जुवारसिंघनै छानै सी थे दोज्यो खबर सुणाय
सात दिनांकी बोली दीनी, काळै पाणी ले जाय
कायर छातीका डूँगजी ! तूँ कायरता मत लाव
सात दिनांकै भीतर थानै घर ले ज्याऊं छुडाय
बंध काटणको कस्यो लोटियै डूंग न्हारहूं ठीक
धीर-धोबना बंधा डूंगनै ली आवणकी सीख

•

लाल किले हूं नीसरतां बां ....
लोत्यो भाळै मोरचा कोइ करण्यो तकै सफील
आधी रात पहरको तड़को जोग्यां धूणी, 'ठायी
भगवां ले जमनामैं फेंक्या तूँबा दिया तिरायी
असी रिप्यांमें लियो टोडड़ो हाल्या रातूँ-रात
गढ बठोठकै आया गोरवैं ऊगतड़ै परभात

लोटियेने उत्तर दिया—हे कायर छातीके डूंगसिंघ ! कायरता मत ला, सात दिनोंके भीतर-भीतर तुझे छुड़ाकर घर ले जाऊंगा। फिर लोटियेने डूंगसिंघसे बन्धन काटनेकी बात ठीक की और उसको धैर्य बंधाकर आनेके लिअे विदा ली।

लाल किलेसे निकलते हुअे उनने.........लोटिया मोरचे देख रहा था, करणिया चहारदीवारीको ताक रहा था। आधी रात बीतने पर, जब प्रातःकाल होनेको पहर भर रह गया था, जोगियोंने धूनी उठा दी। भगवें वस्त्रोंको लेकर यमुनामें फेंक दिया और तूंबोंको पानीमें तैरा दिया। अस्सी रुपयोंमें अेक जवान ऊंट लिया और रातोंरात चल पड़े। प्रभात होते ही बठोठ गढ़के मैदानमें आ गहुँचे.।

(गोरवों= गायोंके बैठनेका मैदान, गांव की सीमा-जहां रात को गायें बैठती हैं)।

(६)

लोट्यै तो मुजरा कस्या स बै करण्यै राज-जुहार
सामै उठकर मुजरो झेल्यो ज्वारसिंघ सिरदार
तूं गयो, लोट्या ! आगरै, स कोइ, कहो सहरकी वात

के कहूं, म्हारा रावजी ! , काइ, म्हांसूं कह्यो न जाय
डूंग न्हारनै देख'र आया लाल किलैकै मांय
ईं जीणैसूं मरणो चोखो, बुरो कैदको काम
हाथाँमें तो पड़ी हथकड़ी, बेड़ी पांवां मांय
गळमें तोख-जंजीर पड़ी है, बंद पींजरै मांय
सात दिनांकी बोली लिख दी, काळै पाणी ले ज्याय
मिलणो ह्वै तो मिलो, रावजी ! फेर मिलणका नांय

इतणी वातां उडी कचेड़्यां, गयी रावळा मांय
राणी रोवण लागी स बा रंग-महलकै मांय
कंवर रोवण लाग्या स बै भरी कचेड़ी मांय

---

(६)

लोटियेने मुजरा किया और करणियेने राजसी जुहार। सरदार जवारसिंघने उठकर और सामने आकर मुजरेको स्वीकार किया और कहा—लोटिया ! तू आगरे गया था, उस शहरकी बात कह। लोटियेने उत्तर दिया—हे मेरे रावजी ! क्या कहूँ ? मुझसे कहा नहीं जाता, हम डूंगसिंघको लाल-किलेमें देखकर आये हैं, कैदका काम बड़ा बुरा है, इस जीनेसे मरना अच्छा, हाथोंमें हथकड़ियां पड़ी हैं, पैरोंमें बेड़ी पड़ी हैं, गलेमें तौक और जंजीर पड़ी हैं, स्वयं पिंजड़ेमें बन्द हैं, सात दिनोंमें कालेपानी ले जानेका हुक्म लिख कर सुना दिया है, हे रावजी ! मिलना हो तो मिल लो, फिर मिलनेके नहीं।

इतनी बातें कचहरीमें हुईं, वे उड़कर रनिवासमें पहुँची। रंगमहलमें रानी रोने लगी। राजकुमार भरी कचहरीमें रोने लगे। उनको समझाया—रोवो मत, रुदन मत

मत रोव्रो, मत रुदन करो, काइ, मत ना हुव्रो उदास
रात-रात परव्राना भेजां भाई-भतीजां पास

सेखाव्रत वीदाव्रत चढिया, चढिया तंव्रर पंव्रार
अेड़तिया मेड़तिया चढिया, चढ्या नरूका साथ
च्यार ऊंट गुसांयांका चढिया, दादूपंथी साथ

झूठी-मूठी जान वणा लो, झूठो जानरो वीन
चुग-चुग करलां कूंचो मांडो, चुग-चुग घुड़लां जीण
आपां तो जानेती वणल्यां, वीन वणै भोपाळ
दोय जणा जांगड़िया वणकै सिंधू द्यौ अरसाळ
हाथां-पगांकै बांधो डोरड़ा, सिर सोनाको मोड़
कानां घालो मामा-मुरकी, गळमैं घालो गोय
लाल चौभणै मामा मोचा, लाल कनारी जोड़ो
लाल पाघड़ी, रातो वागो, रातै महियै चोड़ो

करो, उदास मत होओ, रात-ही-रातमें सब भाई-भतीजों (कुटुम्बियों) के पास परवाने लिखकर भेजते हैं (और डूंगजीको छुड़ानेके लिअे तय्यारी करते हैं)।

परवाने पाकर शेखावत और वीदावत चढ़े, तंवर और पंवार चढ़े, अेड़तिये-मेड़तिये चढ़े, साथमें नरूके चढ़े, गुसांइयोंके चार ऊंट भी चढ़े और साथमें दादूपंथी साधु भी। फिर सबने सलाह की—झूठमूठ बरात बना लो, झूठा बरातका दूल्हा बना लो, चुनचुनकर ऊंटों पर जीन कसो, चुनचुनकर घोड़ों पर जीन रखो, हम लोग तो बराती बनेंगे, भोपालसिंह दूल्हा बने, दो आदमी ढोली बनकर सिंधू राग आरम्भ कर दो, दूल्हेके हाथों-पैरोंमें कांकन-डोरड़े बांधो, सिर पर सोनेका मौर रखो, कानोंमें मामा-मुरकियां पहनाओ, गलेमें गोय डाल दो, लाल चमड़ेकी मामा-जूतियां पहना दो, लाल किनारीकी धोती पहना दो, लाल जामा और लाल पगड़ी पहनाकर लाल मस्त ऊंट पर चढ़ा दो।

हाथांका हथियार ले लिया, खाबाको सामान
जान वणाय'र चल्या आगरै, हर राखैलो मान
रात-रात बै चलै जनेती, दिन ऊगयां ठम जाय
आगरैकै तीन कोस पर डेरा दिया लगाय

(७)

जमनाजीकै बांवै-डांवै रेवड़ चरतो जाय
निजर पड़ी करण्यै मीणैकी, जद यूं बोल्यो आय
हुकम करो तो, सिरदारां ! मैं मींडो ल्याऊं उठाय

हुकम चलै छै अंगरेजांको जोरी-जपती नांय
यो अंगरेजी राज है स थे जो ल्यावोला 'ठाय
बंध्या-बंध्या घोड़ा, मर ज्यागा, बंध्या-बंध्या उमराव
गूजरकैनै राजी कर थे ल्यावो दोय'र च्यार

फिर उनने हाथोंमें हथियार ले लिये, खानेका सामान ले लिया और बरात बनाकर आगरेको चल दिये। भगवान प्रतिष्ठा रखेंगे। वे बराती रात-रातमें चलते और दिन ऊगते ही ठहर जाते। आगरेके तीन कोस दूर रहने पर उनने डेरे लगा दिये।

(७)

यमुनाकी बायीं ओर भेड़ोंका झुंड चरता जा रहा था। उस पर करणिये मीणेकी नजर पड़ी। तब वह आकर यों कहने लगा—हे सरदारों ! हुक्म करो तो अेक भेड़ा उठा लाऊं। सरदारोंने कहा—यहां अंग्रेजोंका हुक्म चलता है, जोर-जबर्दस्ती नहीं हो सकती, यह अंग्रेजी राज्य है, यदि तुम उठाकर ले आओगे तो सरदार (कैदमें) बंधे-बंधे मर जायंगे और घोड़े यहां बंधे-बंधे; हां, अहीरके बेटेको राजी करके अेक नहीं दो-चार ले आओ।

स्यौसिंवजी, गूजरका बेटा ! कह मींडैको मोल
कितणा रिपिया द्यां मींडैका, वेगो मुखसूं बोल
कै मींडैको माजनो, स कोइ, कै मींडैकी जात ?
थे परदेसी पावणा, स कोइ, फिरो न दूजी वार
म्हांरो मोटो भाग छै स थे मींडो मांग्यो आय
मींडो थे ले ज्यावो, ठाकरां ! मिजमानीकै मांय
थे छौ गूजर पालती, रे ! म्हे वाजां उमराव
संतमेंतमें मींडो खायां लाजै म्हांरो नांव
गूजर मांग्या पांच रिपइया, बीं पकड़ाया सात
गूजरकैनै राजी करकै मींडो लाया टाळ

दे झटको अर तोड़ खाजरू मुड़दो लियो वणाय
च्यार लाकड़ी तोड़कै, स कोइ, अरथी लयी वणाय
चाकर-चरवादारनै, स कोइ, भद्दर दिया कराय
गाजा-वाजा बंद कस्या, कोइ, लियो सोगको नांव

हे गूजरके बेटे सिवसिंघ ! भेड़का मोल कह, भेड़के कितने रुपये दें, जल्दी मुंहसे बोल। गूजरने उत्तर दिया—इस भेड़की क्या बिसात ? भेड़की क्या जाति ? तुम लोग परदेशी पाहुने हो, दुबारा नहीं आओगे, हमारा बड़ा भाग्य है कि तुमने आकर भेड़ा मांगा, हे ठाकुरों ! भेड़ा आप मेजबानीमें ले जाइये। करणियेने उत्तर दिया—तुम गूजर और प्रजा हो, हम सरदार कहलाते हैं, मुफ्तमें भेड़ा खानेसे हमारा नाम लज्जित होगा। तब गूजरने पांच रुपये मांगे। उसने सात पकड़ाये। यों गूजरके बेटेको राजी करके अेक भेड़ा चुनकर ले आये।

भेड़को झटका देकर और गर्दन तोड़कर मुर्दा बना लिया। फिर चार लकड़ियां तोड़कर अरथी बना ली। सब नौकरों-चाकरोंको भद्र करवा दिया (बाल मुंड़वा दिये), गाजों-बाजोंको बन्द कर दिया और सोग (शोक) का नाम लिया (मातम करने लगे)। सरदार भेड़ासिंघ चार आदमियोंके कंधे पर चढ़ा। इस प्रकार आगे-आगे मुर्दा चला,

च्यार जणांकै कांधै चढियो मींडासिंघ सिरदार
आगै-आगै मुड़दो चालै, लैरां जान-बरात
सबसें आगै बाल्यो नाई वार घालतो जाय
कंपनी सा'कै बागमें बां अरथी दयी उतार

अन्नण-चन्नण चिता. चिणायी, नारेळांमें दाग
आरवार फिर जाट लोटियै लांपो दियो लगाय
धूंवैको जद डूंड ऊपड्यो, कांप्यो कंपनी साय
बांडै घोड़ै चढकै आयो, गुरजण कुत्ती लार
वुरी करी, रे जानेत्यां! थे मुड़दो दियो जळाय
मुड़दो-मुड़दो मत करो स.यो सगळांको सिरदार
अबकै मुड़दो कै दियो स तो वाजैगी तरवार
ऊंचै कुळको राजवी, कोइ, बावन गढांको राव
सागी वीनको मामो मरग्यो मींडासिंघ सरदार
जोरजी वीदावत बोल्यो, हुयी और-सूं-और
लाखांको पट्टायत मरग्यो, नहीं रामसूं जोर

बराती पीछे चले। सबके आगे बालिया नाई पुकर देता हुआ चला। कंपनीके बागमें पहुँचकर उनने अरथी उतार कर रख दी।

फिर चंदनकी चिता बनायी और नारियलोंके साथ दाह-संस्कार कर दिया। लोटिये जाटने चारों ओर फेरी लगाकर आग लगा दी। जब धुंएकी राशि उठी, कंपनी-साहब कांप उठा। वह निपुच्छे घोड़े पर चढ़ कर आया, पीछे गुरजिन कुतिया थी। उसने आकर कहा— हे बरातियों! तुमने बुरा किया जो मुर्देको यहां जला दिया।

राजपूत तैशमें आकर बोल उठे—मुर्दा-मुर्दा मत करो, यह सबका सरदार है; अबकी बार इसे मुर्दा कह दिया तो तलवार बज उठेगी! यह ऊंचे घरानेका राजवंशी है, बावन गढ़ोंका स्वामी है, दूल्हेका सगा मामा सरदार मेड़ासिंघ मर गया है। वीदावत जोरजी कहने लगा—और-का-और हो गया, लाखोंकी जागीरका स्वामी मर गया, रामसे कोई बश नहीं!

खाय कायरी फिरंगी बोल्यो, नहीं मरबैकी बूंटी
तीन घड़ीको तेयो कर द्यो, बारा घड़ीकी बाटी
तेरा घड़ीको तेरो करकै मेलो घोड़ां काठी
तीन दिनांको करां तीसरो, बारा दिनकी बाटी
तेरा दिनको तेरो करकै मेलां घोड़ां काठी

फिरंगीतो पाछो फिस्यो, स कोइ, करी न ज्यादा बात
नांय भरोसो, के करै, स काइ, या रांघड़की जात

(८)

वाज्या ढोल, तासळा खुड़क्या, पड्यो ताजियां घाव
फिरंगी चढग्यो ताजियां स मरदांका लाग्या डाव

लोट्यै जाट करणिय मीणै माताजीन ध्यायी
दोय घड़ीकै मांयनै बां नीसरणी रे लगायी
छंटवां-छंटवां कूद पड़्या बै लाल किलैकै मांय
लैरां-लैरां बगै करणियो, आगे लोट्यो जाय
बोलै छै तो बोल, डूंगजी ! देवां बेड़ी काट

तब फिरंगी कायरी खाकर बोला—मरेकी कोई दवा नहीं; तीन घड़ीका तीसरा कर दो, बारह घड़ीकी बाटी कर दो और तेरह घड़ीका तेरा करके घोड़ों पर जीन रखो (यहांसे चले जाओ)। सरदारोंने कहा—तीन दिनोंका तीसरा करेंगे, बारह दिनकी बाटी करेंगे और तेरह दिनकी तेरहीं करके घोड़ों पर जीन रखेंगे। फिरंगी यह सुनकर लौट गया, उसने अधिक बात नहीं की, यह रांघड़ (राजपूत) की जात है, भरोसा नहीं, क्या कर बैठे ?

(८)

उधर ताजियोंकी सवारी निकली। ढोल बजे, तासे खड़के। फिरंगी चढ़कर ताजियों के साथ गया; इधर मर्दोंका दांव लगा। लोटिये जाट और करणिये मीणेने देवीका

बांयी बुरजमें बोल्यो डूंगजी, जाणै धड़क्यो न्हार
म्हारी बेड़ी काट्यां, लोटिया! ना निसरैगो नांव
म्हारी बंधमें सित्तर बंधवा, बांकी पैली काट
कैंकी रोवै बैन-भाणजी, कैंकी रोवै माय
बंधमें बैठ्यो कहै डूंगजी, सुण, रे लोट्या जाट!
पैलां तो बंधवांकी काटो, पाछै म्हारी काट
कै जाणैगा सित्तर बंधवा, कै जाणैगा लोग
डूंग न्हार यो यूं भागो, ज्यूं नीकळ भागो चोर
बुरज तोड़कर बायर काढो बंधवा अेकै साथ
दा दिनमें मर ज्यावां, लोटिया! दुनी करैगी वात

ज फिरंगीनै वेरो पड़ ज्या, पाछो बो फिर ज्याय
तोप मुंहांणी म्हांनै चाड़ै, रहो कैदकै मांय
इतनी सुणकै डूंगजी स बो बोल्यो कड़वा वैण
ईं मूडैको धणी लोटिया! म्हांनै आयो लेण?
मरणैसूं जे डरै, लोटिया! तोपांको भै खाय
तेगो तेरो करे म्यानमें पूठो घरनै जाय

ध्यान किया और दो घड़ीके भीतर चहारदीवारी पर सीढ़ी लगा दी। फिर चुने-चुने वीर लाल किलेमें कूद पड़े, पीछे-पीछे करणिया चल रहा था, आगे लोटिया जा रहा था।

इस प्रकार वे डूंगसिंघ वाले बुर्जके पास पहुँच गये और आवाज दी—हे डूंगजी! बोलता है तो बोल, बेड़ी काट दें। तब बायीं बुर्जमेंसे डूंगजी बोला—मानो सिंह दहाड़ा—अरे लोटिया! मेरी बेड़ी काटनेसे नाम नहीं रखा जायगा, मेरे साथ कैदमें सत्तर कैदी हैं, उनकी बेड़ी पहले काट; किसीकी बहन-भानजी रो रही हैं, किसीकी मां रो रही हैं, किसीके छोटे बच्चे रो रहे हैं, किसीकी स्त्री रो रही है। कैदमें बैठा डूंगजी कहता है—अरे लोटिया जाट! सुन, पहले तो इन कैदियों की बेड़ी काट, पीछे मेरी काटना; नहीं तो सत्तर कैदी क्या जानेंगे? लोग भी क्या जानेंगे? कहेंगे—सिंह जैसा डूंगजी अैसे निकल भागा ज्यों चोर निकल भागता हो, बुर्जको तोड़कर सब कैदियोंको अेक

इतणी वात सुणी जद लोट्यै तन-मन लागी लाय
छिणी-हथोड़ा लेय लोटियो पड्यो कड़कडी खाय
छिणियां तो छिणमिण चलै, सपक हथोड़ा साथ
अेक घड़ीमें काढ्या लोटियै बंधवा पूरा साठ
सित्तर बंधवा काढिया जद गया डूंगकै पास
अब के कौ छौ ? रावजो ! थारी पूरण होगी आस ?
लोट्यै तोड़्यो पींजरो, रे ! करण्यै काटी बेड़ो
हाथ पकड़ बायर कर्यो, काइ. बो बंधवांको हेड़ी
घोड़ी म्हांरी उरी सौंप द्यो, खांडो द्यो पकड़ाय
ढूंढ-ढूंढ मैं फिरंगी मारूं, लेवूं बदळो काढ

साथ बाहर निकाल, हे लोटिया ! हम तो दो दिनमें मर जायंगे पर दुनिया बात करेगी ।

लोटियेने उत्तर दिया—यदि फिरंगीको पता लग गया तो वह वापिस लौट आयगा, हमें तोपके मुंह पर चढ़ा देगा और तुम कैद-के-कैदमें रहोगे। इतनी बात सुनते ही डूंगजी बड़ी कड़वी बात बोल उठा—अरे लोटिया ! इस मुंहका धनी होकर (यह मुंह लेकर) तू मुझे छुड़ाने आया है ! लोटिया ! यदि तू मरनेसे डरता है, तोपोंका भय खाता है, तो तेरी तलवार म्यानमें कर ले और उलटा घरको चला जा !

जब लोटियेने यह बात सुनी तो उसके तनमें और मनमें आग-सी लग गयी। वह छिन्नी और हथौड़ा लेकर कड़कड़ी खाकर पड़ा (दांत कटकटाकर बेड़ी काटनेके काममें लग गया)। छिन्नियां छिनमिन शब्द करती चलने लगीं, साथमें हथौड़े सकासक चलने लगे। अेक घड़ीमें लोटियेने पूरे साठ कैदियोंको निकाल बाहर किया। जब सत्तर कैदियोंको बाहर निकाल चुका तो डूंगजीके पास गया और बोला—हे रावजी ! अब क्या कहते हो ? तुम्हारी इच्छा पूरी हो गयी या नहीं ? फिर लोटियेने पिंजरा तोड़ा और करणियेने बेड़ी काटी और कैदियोंके उस मित्रको हाथ पकड़कर बुर्जके बाहर कर दिया।

छूटते ही डूंगजी बोला—मेरी घोड़ी इधर दे दो, तलवार पकड़ा दो, मैं ढूंढ़-ढूंढ़ कर फिरंगियोंको मारूंगा और बदला निकाल लूंगा।

बंधवां आगे बंधवो चाल्या, सगळा सागै ऊठ
चोइस बंधवा साथै उळट्या, नीसरणी गयी टूट
नीसरणी तो दगो दियो, अब दरवाजैनै चालो
भली करी, रे बंधवां ! थे तो काम कर दियो कालो
कोई ले लो छुरी-कटारी, कोई-बरछी भालो
अेकै सागै पड़ो उळटकै, खवो खवैसूं जोड़ो
रामा-दळ ज्यूँ लंका तोड़ी, यूं दरवाजो तोड़ो

दरवाजैकै मूंडै आगै अड़ी खाट-सूं-खाट
दरवाजैकी मोरी आगै खूब चलै तरवार
तरवारयांका उडै टूकड़ा, लड़ै लोटियो जाट
सेखावत बीदावत झूमै, लड़ै नरूका साथ
अेड़तिया-मेड़तिया झगड़ै, झगड़ै तंवर-पंवार
लड़ै गुसांई दादू-पंथी, भली चलावै वार
बाल्यो नाई भाटा मारै चाकर चरवादार
भलां-भलांका टूक उडावै, लड़ै डूँगजी न्हार
लोट्यो जाट करणियो मीणो, वध-वध वावै तरवार

फिर कैदीके आगे कैदी हो गया और सब अेक साथ उठ कर चले। चौबीस कैदी अेक साथ टूट पड़े जिससे सीढ़ी टूट गयी। तब बोले—सीढ़ीने तो धोखा दिया, अब दरवाजेकी ओर चलो। कैदियों ! तुमने खूब किया, काम बिगाड़ दिया; अब कोई छुरी-कटार और कोई बरछी-भाला ले लो, अेक साथ टूटो, कंधेसे कंधा भिड़ा दो; रामकी सेनाने जिस प्रकार लंकाको तोड़ा था उसी प्रकार दरवाजा तोड़ो।

दरवाजेके सामने खाट-से-खाट अड़ गयी। दरवाजेकी खिड़कीके सामने खूब तलवार चलने लगी। तलवारोंके टुकड़े उड़ने लगे। लोटिया जाट लड़ने लगा। शेखावत और बीदावत, और साथमें नरूके लड़ रहे थे। अेड़तिये-मेड़तिये, तंवर और पंवार झगड़ रहे थे। गुसांई और दादूपंथी भी लड़ रहे थे। खूब चोटें कर रहे थे। बालिया नाई और नौकर-चाकर पत्थर फेंक रहे थे। सिंह जैसा डूंगजी लड़ रहा था जो अच्छे-अच्छों के

चोइस तो पुरबिया काट्या, सोळा चोकीदार
सित्तर तो काबलिया काट्या, 'ठारा मुगळ-पठाण
तोड़ आगरो बायर निकस्या, बोल्या जै-जैकार
राम-दुवाई फिरी किलैमें, रोकणियो कोइ नांय

(६)

आगरैनै पूठ देय बै चाल्या रातूँ-रात
बंधवांका तो पांव सूजग्या चाल्यो कोनी जाय
आगरैकै लाल किलैमें वात करी बां मोटी
असी कोसकै चढ्यै डूंगजी करी भुवाणै रोटी
फौजां तो बाटी करी स घोड़ांनै दीनी दाळ
झाझा पड़िया पांतिया, स को, लग्या खुसीका थाळ
लोट्यो जाट करणियो मीणो बंधवांनै समझाय
म्हांरो फिरंगी लारो करसी आप-आपनै जाय

टुकड़े करके उड़ा देता था। लोटिया जाट और करणिया मीणा बढ़-बढ़कर तलवार चला रहे थे। उनने चौबीस पूरबिये सिपाही, सोलह चौकीदार, सत्तर काबुली और अठारह मुगल तथा पठान काट डाले। इस प्रकार आगरेके किलेको तोड़कर बाहर निकल गये और जय-जयकार करने लगे। किलेके भीतर रामकी दुहाई फिर गयी, रोकनेवाला कोई नहीं रहा।

(६)

आगरेकी ओर पीठ करके वे रातोंरात चले। कैदियोंके पैर सूज गये। उनसे चला नहीं जाता था। आगरेके लालकिलेमें उनने बड़ी बात की। अस्सी कोस चढ़े हुओ चलकर डूंगजीने भुवाणे गांवमें पहुँचकर रोटी की। फौजके लोगोंने बाटी बनायी और घोड़ोंको दाल दी। गहरी पांतें पड़ीं। खुशीके थाल लगे। फिर लोटिये जाट और करणिये मीणेने कैदियोंको समझाया—फिरंगी हमारा पीछा करेंगे इसलिओ अब अपना-अपना मार्ग देखो।

(१०)

सीकर-मांकर नीसर्‌या, बां मारी रामगढ फेट
च्यार तो चपड़ासी पकड़्या, सोळा पकड़्या सेठ
हाथ जोड़ सेठाण्यां बोली, राखो म्हां पर हेत
थे छो बेटा उदैसिंघका, म्हे छां ज्यांका सेठ
घोड़ांनै तो घास घतावां, थांनै बूरो-भात
गादी-गिंडवा देवां बैसणा, घणी करां मनवार

सेठाण्यांकी अरज सुणी जद सोळी पड़गी रीस
सेठांनै तो मुकत कर दिया गुन्हा कर्‌या वगसीस
कई दिनांका बिछड़्या म्हे तो जावां बठोठकै मांय
राणी ऊभो काग उडावै, परजा जोवै बाट

बठोठ पूंच्या डूँगजी बै दळ-बादळ ले साथ
राणी महलां ऊतरी स बा भर मोत्यांको थाळ
आघा पधारो, सायबा! थांनै मोत्यां लेवूँ वधाय

---

(१०)

वे सीकरमेंसे होकर निकले और रामगढ़के अेक फेंट मारी। वहां चार सरकारी चपरासी और सोलह सेठ पकड़े। तब सेठानियां हाथ जोड़कर कहने लगीं—हम पर प्रेम रखो, तुम उदयसिंघके बेटे हो जिनके हम सेठ हैं, तुम्हारे घोड़ोंको घास डलवायेंगे, तुमको बूरा-भात जिमायेंगे, गादी-तकिये बैठनेको देंगे और खूब मनुहारें करेंगे।

सेठानियोंकी अर्ज सुनी तो रोष ठंडा गया। सेठोंको छोड़ दिया और अपराध क्षमा कर दिये। कहा—हम बहुत दिनोंके बिछुड़े हैं, बठोठके गढ़में जाते हैं, रानी खड़ी कौवे उड़ाती है (प्रतीक्षा करती है) और प्रजा बाट जोह रही है (महमानी खानेको नहीं ठहर सकते)।

डूंगजी बादलों सी सेना साथ लिये बठोठ पहुँचे। रानी बधानेके लिअे मोतियों-से थाल भरकर गढ़से उतरी और बोली—हे स्वामी! आगे बढ़ो, मैं मोतियोंसे बधा लूं।

म्हांनै मतां बधावो, राणी ! बधावो लोट्यो जाट
म्हे आपै नहिं आया, म्हांनै ल्यायो लोटियो जाट

(११)

डूंग न्हार जोधाणै बैठो, ज्वारो वीकानेर
काकै-भतीजां मनमें रैगो लूँटणकी अजमेर

डूंगजीने कहा—हे रानी ! हमें मत बधाओ, लोटिये जाटको बधावो, हम अपने आप नहीं आये, हमें लोटिया जाट लाया है।

(११)

फिर डूंगसिंघ जोधपुरमें जा बैठा और जवारसिंघ वीकानेरमें। चाचा और भतीजा दोनोंके मनमें अजमेर लूटनेकी इच्छा रह गयी।

राजस्थानी शब्दांरी जोड़णी *

१ तत्सम शब्द

१ संस्कृत तत्सम शब्दांरी जोड़णी मूळ मुजब करणी—

उदाहरण—पति गुरु कृपा दृष्टि शेष रोष यश अक्षर ॐकार ज्ञान ।

२ संस्कृतरा तत्सम शब्द प्रथमा अेकवचनरा रूपमें लेणा, आगै विसर्ग हुवै तो उणनै छोड देणो—

उदा०—पिता माता दाता आत्मा राजा धनी स्वामी लक्ष्मी श्री मन यश ।

३ संस्कृतरा व्यंजनांत शब्द स्वरान्त करनै लेणा—

उदा०—विद्वान धनवान जगत परिषद् सम्राट अर्थात पश्चात किंचित ।

विशेष—इसा शब्द समासमें पूर्वपद होयनै आवै तो मूळ संस्कृत मुजब लिखणा—

उदा०—पश्चात्पद, किंचित्कर, जगत्पति, विद्वद्वर ।

४ संस्कृत तत्सम शब्दांमें दो स्वरांरै बीचमें जको ड ल और व आवै उणनै ड़ ळ और व़ लिखणो—

उदा०—पीड़ा व्रीड़ा क्रीड़ा क्रोड़ ; जळ बळ काळ माळा बाळक निष्फळ निर्मळ पाताळ ; पव़न भव़न प्रव़र कव़ि देव़ी देव़ेन्द्र तरुव़र सरोव़र ।

२ तद्भव शब्द

५ भाषामें तद्भव और तत्सम दोनूं रूप चालता हुवै तो दोनूं स्वीकार करणा—

उदा०—भाग्य—भाग, रात्रि—रात, वार्ता—वारता, यश—जस ।

६ तद्भव शब्दांमें ऋ ङ ञ श ष क्ष ज्ञ इता आखरांरो प्रयोग नहीं करणो—

अपवाद—राजस्थानीरी कई बोलियांमें श आखररो प्रयोग देखीजै है, उण बोलियांरा अवतरण आवै जठै श आखररो प्रयोग करणो—

उदा०—आईश ।

---

* 'संक्षिप्त राजस्थानी व्याकरण'रो अेक परिशिष्ट ।

७ तद्भव शब्दांरा अन्तमें आवै जिका ई और ऊ दीर्घ लिखणा—

उदा०—पाणी दही घी छाती नारी मणी कान्ती हरी लाडू लागू बाधू पाबू जसू साबू साधू गरू ।

सुराणी भाषामें—राम-नूं (राम नै), जू (जो), सू (सो), किसूं (क्या) वगैरा आवै, इणांनै राम-नुं, जु, सु, किसुं नहीं लिखणा ।

विशेष · मणि कान्ति हरि साधु गुरु इत्यादि तत्सम शब्द हुवै जद छोटी इ और छोटा उ–सूं लिखणा ।

८ राजस्थानमें कठैई-कठैई आ-रो उच्चारण औ या ऑ या ओ जिसो हुवै, लिखणमें ओ उच्चारण नहीं दरसावणो, आ हीज लिखणो—

उदा०—कौम कॉम कोम नहीं लिखणो;

काम लिखणो ।

९ राजस्थानमें कठैई-कठैई शब्दरा अन्त में य श्रुति सुणीजै, लिखणमें उणनै नहीं दरसावणी—

उदा०—आंख्य लाव्य द्यो ल्यो ल्यावणो नहीं लिखणा ।

आंख लाव दो लो लावणो लिखणा ।

१० तद्भव शब्दांमें अनुप्राणित ह ध्वनि (= ह श्रुति) नै लिखणमें नहीं बतावणी; बतावणी हुवै तो लोपक-चिह्नरो प्रयोग करणो—

उदा०—न्हार प्हीर म्होर क्हाणी स्हाव स्हारो प्होर वाल्हो ब्हैन साम्हो म्हाराज नहीं लिखणा ।

नार (ना'र) पीर (पी'र) मोर (मो'र) काणी (का'णी) साब, सारो (सा'रो) पोर बालो बैन सामो माराज (मा'राज) लिखणा ।

विशेष —न्हावणो, म्हारो, म्हाटो, इण शब्दांमें ह श्रुति नहीं पण पूरी ह ध्वनि है इण वास्तै इणांनै नावणो मारो माटो नहीं लिखणा ।

११ तद्भव शब्दरा अन्तमें अनुप्राणित ह ध्वनि आवै और उणरो पूर्व स्वर दीर्घ हुवै तो ह ध्वनिनै नहीं लिखणी, उणरो लोप कर देणो, अथवा उणरी जाग्यां संज्ञा हुवै तो य और क्रिया हुवै तो व़ कर देणो—

उदा०—ठा रा सा सीं मँ खे मे' खो छो पो मो लो।
चा चाय मां मांय रा राय सा साय।
ढा ढाव़णो वा बाव़णो दू दूव़णो लू लूव़णो
मे मेव़णो ढो ढोवणो पो पोव़णो मो मोव़णो
सो सोव़णो।

विशेष—नाह कोह इण शब्दांमें ह श्रुति नहीं, पूरी ह ध्वनि है, इण वास्तै इणांनै नाको नहीं लिखणा।

१२ तद्भव शब्दांमें ह श्रुतिसूं पूर्व अकार हुवै तो दोनांनै मिलायनै अै कर देणा—

उदा०—गहणो गैणो गहरो गैरो चहरो चैरो
जहर जैर कहर कैर सहर सैर
लहर लैर महर मैर नहर नैर
बहन बैन वहम वैम रहम रैम
सहणो सैणो कहणो कैणो वहणो वैणो
महणो मैणो रहणो रैणो लहणो लैणो
महल मैल मौल पहर पैर, पौर

१३ तद्भव् शब्दांमें अल्पप्राण और महाप्राणरो संयोग हुवै जद महाप्राणनै दोलड़ो लिखणो—

उदा०—**अख्खर पख्ख जख्ख सख्ख भख्ख लख्ख; बध्ध पध्धड़; जुभ्भ बुभ्भ तुभ्भ सुभ्भ मुभ्भ; पथ्थर मथ्थ कथ्थ सथ्थ; बफ्फ; सभ्भ लभ्भ अभ्भ दभ्भ।**

अपवाद—च-छ रो, ट-ठ रो, अथवा ड-ढ रो संयोग हुवै जद दोलड़ा नहीं लिखणा—

उदा०—**अच्छर मच्छर सच्छ गच्छ भच्छ रच्छ; चिट्ठी दिट्ठ मिट्ठ; कड्ढ बड्ढ दड्ढ।**

१४ बोलचालमें अल्पप्राण और महाप्राण दोनूं उच्चारण पायीजै जद व्युत्पत्तिरै मुजब अल्पप्राण अथवा महाप्राण लिखणो

उदा०—समभणो (समज्झ), बांझ (वंझा), सांझ (संझा), जूझणो (जुज्झ), बूझणो (बुज्झ), सूझणो (सुज्झ), सीझणो (सिज्झ), वेझ (विज्झ); सेज (सेज्जा), तीज (तइज्जा), भीजणो (भिज्ज)

१५ संस्कृतरा अन्तस्थ वारो जकां व हुवै उणनै राजस्थानीमें व हीज लिखणो, हिंदी आळी दाई ब नहीं लिखणो—

उदा०—वखाणणो, वंचणो, वंचावणो, वछड़ो, वटवो वटाऊ, वडो, वणणो, वणजारो, वडाई, वड़णो, वड, वतरणो, वधणो, वधावणो, वधाई, वधांतरी, वनास, वनो, वरतणो, वरसो, वरसात, वरस, वरात, वसणो, वही, वहू, वसेरो, वंस, वांको, वांस, वाट, वात, वागो, वाजो, वाजणो, वार, वास, वातड़ी, विकणो, विकरी, विगड़णो विछड़णो, वीण, बीकानेर, बीजळी, वींधणो, वीस (=२०), वुरो, वेचणो, वेझ, वेळ, वेसा, वेस, वैरणो, वेरो वैंत, वैद, वैम ।

१६ संस्कृतरा ब हुवै उठै राजस्थानीमें ही ब लिखणो—

उदा० बात्रक बाण बळ बूझणो बृद्धि ।

१७ संस्कृतरा अन्तस्थ वारो द्व हुवै उठै राजस्थानीमें ब लिखणो—

उदा० द्वार बार द्वितीया - बीज द्वितीयकः—बीजो ।

१८ प्राकृतरा व (संस्कृतरा व, य) हुवै उठै राजस्थानीमें व लिखणो—

उदा०	सर्व	सव्व	सव, सरव
	पर्व	पव्व	परव
	खर्व	खव्व	खरव
	गर्व	गव्व	गरव
	द्रव्य	दव्व	दरव

१९ दो स्वरांरै बीचमें जको व हुवै उणनै व़ लिखणो—

उदा०—सांव़रो, भंव़रो, गंव़ार, गांव़, नांव़, धूंव़ो, चाव़, राव़, नाव़, सोव़णो, मोव़न, कूव़ो, गाव़णो, आव़णो, जाव़णो, दूव़णो, सीव़णो, पीव़णो, देव़णो, लेव़णो ।*

२० शब्दरा मध्यमें प्राकृतमें ल्ल (संस्कृतमें ल्य, ल्व, ल्ल) हुवै जठै राजस्थानीमें ल लिखणो तथा प्राकृतमें ल (संस्कृतमें ल) हुवै जठै राजस्थानीमें ळ लिखणो—

उदा०—कल्य	कल्ल	काल	काल	काळ
गल्ल	गल्ल	गाल	गालि	गाळ
मल्ल	मल्ल	माल	माला	माळ
शल्य	सल्ल	साल	शाला	साळ
	पल्ल	पाल	पाल	पाळ
	झल्ल	झाल	ज्वाला	झाळ
भद्रक:	भल्ल	भलो	भाल	भाळ
भल्लक:	भल्लउ	भालो	सकलक	सगळो
मूल्य	मोल्ल	मोल	श्रृगाल	स्याळ
पल्ली	पल्ली	पाली	मालिक	माळी
बिल्व	बिल्ल	बील	जालिकक	जाळियो
चल्	चल्ल	चालणो	क्लेश	कळेस
आर्द्रक	अल्लउ	आलो	कलश	कळस
कल्याण	कल्लाण	कल्याण	कालुष्य	काळख
		किल्ल्याण	पलाश	पळास

विशेष—विशाल विलास लालसा इत्यादि शब्द तत्सम है, तद्भव नहीं ।

---

* ब, व और व़ रा नियम संक्षेपमें—

(१) संस्कृतमें ब हुवै जठै राजस्थानीमें ब लिखणो ।
संस्कृतमें द्व, र्व व्य हुवै जठै राजस्थानीमें ब लिखणो ।
संस्कृतमें व हुवै जठै राजस्थानीमें ब नहीं लिखणो ।

(२) शब्दरा आरंभमें आवै जद व लिखणो ।
शब्दरा मध्य अथवा अंतमें आवै जद व़ लिखणो ।

२१ शब्दरा मध्यमें प्राकृतमें ण्ण (संस्कृतमें ण्य र्ण ण्व न्य न्व न्न) हुवै जठै राजस्थानीमें न लिखणो तथा प्राकृतमें ण (संस्कृतमें ण, न) हुवै जठै राजस्थानीमें ण लिखणो—

उदा०—पुण्य	पुण्ण	पुन	क्षण	खण	खण
वर्ण	वण्ण	वान	कण	कण	कण
पर्ण	पण्ण	पान	जन	जण	जण
कर्ण	कण्ण	कान	घनक	घणउ	घणो
चूर्ण	चुण्ण	चून	भुवन	भुवण	भुवण
जीर्णक	जुण्णउ	जूनो	खनि	खणि	खाण
अन्य	अण्ण	आन	पुनि	पुणि	पुण
धन्य	धण्ण	धन	वन	वण	वण
शून्यक	सुण्णउ	सूनो	कनक	कणक	कणक
भिन्नक	भिण्णउ	भीनो	भानु	भाणू	भाण
अन्न	अण्ण	अन	रजनी	रयणी	रैण
कृष्ण	कण्ह	कान	हानि	हाणि	हाण
	कसण	किसन	नयन	नयण	नैण

अपवाद—धुन (ध्वनि), पून (पवन), मून (मौन)।

विशेष—धन मन जन वन दान मान भवन पवन मुनि इत्यादि तत्सम शब्द है, तद्भव नहीं।

२२ शब्दरा मध्यमें प्राकृतमें ड्ड या ण्ड हुवै जठै राजस्थानीमें ड लिखणो तथा प्राकृतमें ड हुवै जठै राजस्थानीमें ड़ लिखणो—

उदा०— वड्डउ	वडो	पीडा	पीडा	पीड़
कोड्ड	कोड	भट	भड	भड़
खड्ड	खाड	तट	तड	तड़
गड्डिआ	गाडी	प्रति	पड	पड़
हड्ड	हाड	पत्	पड	पड़
अड्ड	आड	कोटि	कोडि	कोड़
गड्ड	गाडणो	घोटक	घोडउ	घोड़ो

अंडउ	ईंडो	साटिका	साडिआ	साड़ी
कुंडिआ	कूँडो	वाटिका	वाडिआ	वाड़ी
सुंड	सूँड	मुकुट	मउड	मोड़
मुंड	मूँडणो	कपाट	कवाड	किंवाड़

२३ तद्भव शब्दांमें ड़ अथवा ळ रै आगै ण आवै उणनै सुविधानुसार न अथवा ण लिखणो—

उदा०—घड़नो जड़नो पड़नो बळनो गळनो तळनो जोड़नो सीड़नो जोड़नी माळनी माळन।

३ व्याकरणरा रूप

२४ प्रत्यय मूल शब्दांरै साथै मिलायनै लिखणा, न्यारा नहीं लिखणा—

उदा०—उदारता टाबरपणो गाडीआळो बागवान।

२५ परसर्ग अथवा विभक्ति-प्रत्यय मूळ शब्दांरै साथै मिलायनै लिखणा—

उदा०—रामनै पोथीमें घरसूं मिनखरो।

२६ संयुक्त क्रियारा दोनूं अंशांनै न्यारा-न्यारा लिखणा—

उदा०—ले जावणो, जाया करणो, कर देणो, आयो चावै, देख लेसी, कर नाखैला, जीमता जासी, लियां फिरतो हो, आवै है, करतो हो, पढतो हुवैला, देखतो हुवै, उठियो हो, जावां हां।

२७ समासरा शब्दांनै मिलायनै लिखणा अथवा वीचमें योजकचिह्न (–) लिखणो—

उदा०—सीताराम, गुणदोष, राजपुत्र, चंद्रशेखर, आवजाव; सीता-राम, गुण-दोष, हिम-गिरि, आवणो-जावणो, आवै-जावै, अठै-उठै, दरसण-परसण।

२८ अव्यय शब्द दोय मात्रा देयनै लिखणा—

उदा०—आगै लारै पछै साथै सागै वास्तै नीचै सटै खनै चौड़ै जुमलै पाखै नेड़ै वगै।

२६ नैं रैं सैं आदि परसर्ग दोय मात्रा देयनै लिखणा—

उदा०—रामनै, मोहनरैं, घरसैं ।

३० साधित शब्दांमें धातु अथवा मूळ शब्दरा आदि स्वरनै प्रायःकर ह्रस्व लिखणो—

उदा०—मीठो	**मिठास,**	**मिठाई**
खाटो	**खटास,**	**खटाई**
खारो	**खरास**	
	खारास	
पूजा	**पुजारी**	
चीकणो	**चिकणास**	
ऊजळो	**उजळास**	
तोड़नो	**तोड़ाई**	**तुड़ाई**

अपवाद—ऊंचाई ऊंचाण नीचाण मौजीलो इत्यादि ।

३१ कई-अेक स्वरांत धातुवांरा वर्तमान-कृदंतमें धातुरो अंतिम स्वर सानुनासिक लिखीजै—

उदा०—आंव्रतो जांव्रतो खांव्रतो सींव्रतो जींव्रतो सूंव्रतो पांव्रतो (=पियांव्रतो, छांव्रतो व्रांव्रतो मांव्रतो भांव्रतो लांव्रतो पींव्रतो लूंव्रतो वैंव्रतो कैंव्रतो रैंव्रतो सेंव्रतो ।

३२ ई और ईजै प्रत्यय जोड़तां वखत स्वरान्त धातुरै आगै यकाररो आगम करणो—

उदा०—आ+ई=आयी	**आ+ईजै=आयीजै**
जा+ई=गयी	**जा+ईजै=जायीजै**
खा+ई=खायी	**खा+ईजै=खायीजै**
दू+ई=दूयी	**दू+ईजै=दूयीजै**
पो+ई=पोयी	**पो+ईजै=पोयीजै**
वै+ई=वैयी	**वै+ईजै=वैयीजै**

अप०—पी+ई=पी, जी+ई=जी, सी+ई=सी ।

४ लिपि

३३ ञ ङ ण मराठीरा लिखणा, हिंदीरा नहीं लिखणा —

३४ ऋ छ ल हिंदीरा लिखणा, मराठीरा नहीं लिखणा—

३५ ह श्रुति दरसावणी हुवै तो लोपक-चिह्न (') वापरणो—
उदा०—ना'र, सा'ब, का'णी।

३६ तद्भव शब्दांमें अै-औ रो संस्कृत जिसो उच्चारण हुवै जद अइ-अउ लिखणा—
उदा०—गइया, कनइयो, भइयो—इयांनै गैया कनैयो भैयो नहीं लिखणा।

३७ अै-औ रो देशी उच्चारण हुवै जद अै–औ लिखणा—
उदा०—बैन, रैवैला, और।

३८ अै-रो देशी उचारण हुवै जद उणनै अ-सूं नहीं दरसावणो—
उदा०—कैवै है इणनै **कव ह** नहीं लिखणो।

३९ र्+य नै पूर्व आखर पर जोर पड़ै जद र्य लिखणो, और जोर नहीं पड़ै जद रय लिखणो—
उदा०—चर्य वर्य कार्य भार्या
चरयो वरयो वकारयो भारयो।

४० अनुस्वारनै वडी मींडीसूं और अनुनासिकनै छोटी मींडीसूं दरसावणो—
उदा०—हंस (पक्षी) दांत (दमन करयोड़ो)
हंसणो दांत

४१ तद्भव शब्दांमें अनुस्वाररी जागयां पंचम अक्षर नहीं लिखणो—
उदा०—डंडो, चंचळ, चंगो, फंदो, संको, तंग, पंखो इणांनै **डण्डो, चञ्चळ, चङ्गो, फन्दो, सङ्को, तङ्ग, पङ्खो** नहीं लिखणा।

५ विदेशी शब्द

४२ अरबी, फारसी, अंग्रेजी वगैरा विदेशी भाषावांरा शब्द तद्भव रूपमें स्वीकार करणा

उदा०—**कागद, मालक, जमी, मालम, दसकत, मसीत, मजूर, सीसी, सामल; अगस्त, सितंबर, बंक, करंट, रपट, रपोट, दरजण, लालटेण, कुनैण, टिगट, लाट, गिलास ।**

४३ विदेशी भाषावांरा शब्द वापरतां उण भाषावांरा विशिष्ट उच्चारण दरसावण वासतै चिह्न नहीं वापरणा—

उदा०—**अगस्त**	लिखणो	**ऑगस्ट**	नहीं	लिखणो
कालेज	लिखणो	**कॉलिज्**	नहीं	,,
नजर	लिखणो	**नज़र**	,,	,,
दफतर	,,	**दफ़्तर**	,,	,,
मुगल	,,	**मुग़ल**	,,	,,
खबर	,,	**ख़बर**	,,	,,
फरक	,,	**फ़र्क़**	,,	,,
मालम	,,	**मअ़लूम**	,,	,,
इलम	,,	**इ़ल्म, अ़िल्म**		,,

अपभ्रंश भाषाके संधि-काव्य और उनकी परम्परा

[अगरचंद नाहटा]

(१) प्रारंभिक कथन

अपभ्रंश भाषा उत्तर-भारतकी बहुत-सी प्रमुख भाषाओंकी जननी है अतः उन भाषाओंके समुचित अध्ययनके लिये अपभ्रंशके सांगोपांग अध्ययनकी अत्यन्त आवश्यकता है। हर्षकी बात है कि कुछ वर्षोंसे विद्वानोंका ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है और अपभ्रंश-साहित्यके अन्वेषण, अध्ययन अेवं प्रकाशन-का कार्य दिनोंदिन आगे बढ़ता जा रहा है। प्रोफेसर हीरालालजी जैनका अपभ्रंश भाषाका बहुत अच्छा अध्ययन है। इसी प्रकार पं० परमानन्दजीके अन्वेषणसे अनेक नवीन तथा अज्ञात अपभ्रंश ग्रन्थोंका पता लगा है। बहुत दिनों-से मेरी इच्छा थी कि अपभ्रंश साहित्य पर पूर्ण प्रकाश डालनेवाला इतिहास-ग्रंथ तय्यार किया जाय। दो-तीन वर्ष हुअे मैंने उक्त दोनों विद्वानोंको पत्र लिखकर अपभ्रंश साहित्यका इतिहास लिखनेका अनुरोध भी किया था। उत्तरमें प्रोफेसर साहबने सूचित किया कि उनने इस विषयमें अेक विस्तृत निबंध लिखकर नागरी-प्रचारिणी-पत्रिकामें प्रकाशनार्थ भेजा है। पं० परमानन्दजीने लिखा कि वे अेक अैसा ग्रन्थ लिखनेकी तय्यारी कर रहे हैं। अतः मैंने विचार किया कि इन दोनों अधिकारी विद्वानोंकी कृतियां प्रकाशित होने पर ही मेरा कुछ लिखना उचित होगा और मैंने अपना इस संबंधका शोध-कार्य स्थगित कर दिया। इसी बीचमें शान्ति-निकेतनमें पं० हजारीप्रसाद द्विवेदीसे भेंट होने पर उनने अपभ्रंश साहित्य पर लिखनेके लिअे स्नेहानुरोध किया परन्तु अपभ्रंश साहित्य दिगंबर जैन विद्वानोंका रचा हुआ ही अधिक है और मेरी ओर दिगंबर साहित्यकी कमी है अतः इस कार्यको हाथमें लेना उचित प्रतीत नहीं हुआ।

अभी कुछ दिन पूर्व नागरी-प्रचारिणी-पत्रिकामें प्रकाशित प्रोफेसर हीरालालजी का निबन्ध दृष्टिगत हुआ और विश्वभारती आदि पत्रिकाओंमें श्रीयुत रामसिंह

तोमरके लेख भी पढ़नेमें आये। इनसे पुराने विचारको नवीन प्रेरणा मिली और इस विषयमें शोधका कार्य आरम्भ किया जिसके फल-स्वरूप पांच-सात निबंध लिखे गये जिनको पाठकोंके सम्मुख उपस्थित करनेका श्रीगणेश इस निबंध द्वारा किया जा रहा है।

पं० परमानन्दजी इस विषयमें क्या नवीन जानकारी देते हैं यह जानना अभी शेष है अतः अभी मैं उन्हीं बातों पर प्रकाश डालूँगा जिनके सम्बन्धमें इन दोनों दिगंबर विद्वानोंकी जानकारी बहुत सीमित होगी, अर्थात श्वेताम्बर विद्वानोंके रचे हुअे साहित्य पर। यदि समय और संयोगोंने साथ दिया तो बिशेष विचार भविष्यमें किया जायगा।

अपभ्रंश-साहित्यकी चर्चा करते समय श्वेताम्बर विद्वानोंकी अपभ्रंश साहित्यकी महान सेवाको भुलाया नहीं जा सकता। जिस प्रकार दिगंबर ग्रन्थ-कारोंने अपभ्रंशके बड़े-बड़े महाकाव्य लिखे है उसी प्रकार श्वेताम्बर विद्वानोंने विविध नामों और प्रकारों वाले लघु काव्य लिखनेमें कौशलका परिचय दिया है। परवर्त्ती श्वेतांबर साहित्यकारोंको अपभ्रंशके इस लघु-काव्य-साहित्यसे बड़ी भारी प्रेरणा मिली जिससे उनने इन विविध परंपराओंको अक्षुण्ण ही नहीं रखा किन्तु वे उन्हें विकसित करने और नये-नये अनेक रूप देनेमें समर्थ हुअे। संधिकाव्यकी परंपरा भी अेक अैसी ही परंपरा है और उसीके विषयमें प्रकाश डालनेका प्रयत्न इस निबंधमें किया जा रहा है।

प्रस्तुत लेखके लिखनेकी प्रेरणा मुनि श्री जिनविजयजीके अेक पत्रसे मिली जिसमें उनने लिखा था—

मेरी अेक विद्यार्थिनी, जो Ph. D. का अभ्यास कर रही है, वह कुछ अपभ्रंश आदिकी संधियों, जैसे आनन्द संधि, भावना संधि, केशी-गोयम-संधि इत्यादि प्रकारके जो संधि-प्रकरण हैं, उनका अेक संग्रह कर रही है और संधिके स्वरूप आदिके विषयमें शोध कर रही है। अभी उसने जिक्र किया और आपको पत्र लिखने बैठा। इससे स्फुरित हुआ कि आपके पास वैसी बहुत-सी कृतियां होंगी। अगर हों तो भेज दें ताकि उसका अच्छा उपयोग होगा। चंदनदास-संधि, सुबाहु-सधि आदि अैसे अनेक प्रकरण हैं। पाटण वगैरहमें कुछ प्रतियं हैं। उनको भी यथावकाश प्राप्त करनेका प्रयत्न करूंगा। पर इससे पहले आपके पाससे ज़ल्दी सुलभताके साथ मिल सकेंगी अैसी आशासे आपको लिख रहा हूं।

मुनिजीका अनुमान सही निकला। अपने संग्रहकी सूचीको ध्यानसे देखने पर उसमें बहुत बड़ी संख्यामें संधि-काव्य प्राप्त हुअे। अपभ्रंशके संधि-काव्योंके साथ-साथ अठारह-बीस परवर्त्ती संधिकाव्य भाषाके भी उपलब्ध हुअे। इनके अतिरिक्त बीकानेरके बृहद् ज्ञानभंडार आदि अन्यान्य संग्रहोंमें भी संधिकाव्योंकी अनेक प्रतियाँ विद्यमान हैं जिनमेंसे कई अेक नवीन भी हैं।

(२) संधि नामका अर्थ

अपभ्रंशमें संधि शब्द संस्कृतके सर्ग या अध्यायके अर्थमें आता है। आचार्य हेमचन्द्र लिखते हैं—

पद्यं प्रायः संस्कृत-प्राकृताऽपभ्रंश-ग्राम्य-भाषा-निबद्ध-भिन्नान्त्यवृत्त-सर्गाऽऽश्वास-संध्यवस्कंधक-बंधं सत्संधि शब्दार्थ-वैचित्र्योपेतं महाकाव्यम्।

इससे जान पड़ता है कि संस्कृतके महाकाव्य सर्गोंमें, प्राकृतके महाकाव्य आश्वासोंमें, अपभ्रंशके महाकाव्य संधियोंमें, और ग्राम्यभाषाके महाकाव्य अवस्कंधोंमें विभक्त होते थे। परवर्त्ती कवियोंने अेक संधिवाले खंडकाव्योंको संधिकाव्य नाम दिया।

महाकाव्यका प्रत्येक संधि अनेक कड़वकोंमें विभक्त होता था। इन संधिकाव्यों-मेंसे कई कड़वकोंमें विभक्त हैं, कई नहीं हैं।

(३) अपभ्रंशके संधि-काव्य

हमारी शोधसे अभी तक नीचे लिखे अपभ्रंशके संधिकाव्योंका पता चला है—

(१) अनाथि-संधि

कर्त्ता—जिनप्रभ सूरि

समय—संवत १२९७ के लगभग।

कथावस्तुके लिअे उत्तराध्ययन सूत्र देखना चाहिअे।

आदि—जस्स ज्जवि माहप्पा परमप्पा पाणिणो लहुं हुंति
तं तित्थं सुपसत्थं जयइ जअे वीर-जिण-पहुणो

बिसअेहिं विनडिउ कसाय-जगडिउ हा अणाहु तिहुयण भमइ
जो अप्पं जाणइ सम-सुहु माणइ अप्पारामि सु अभिरमइ

रायगिहि नयरि सेणीउ राउ गुरुभत्ति निवेसिय वीयराउ
सो अन्न-दिवसि उज्जाणि पत्तु मुणि पिक्खवि पणमइ नमिय-गत्तु
अंत— चारु चउ-सरणु गमणो दाणाइ सु धम्म पत्त पाहेउ
सीलंग-रहारूढो जिणपह पहिओ सया सुहिओ
अणाथिया-संधि ॥ कडव ॥२॥

(२) जीवानुशास्ति संधि

कर्त्ता—जिनप्रभ

आदि—जस्स वहाणज्जवि तव-सिरि-समलंकिया जिया हुंति
सो णिच्चं पि अणग्घो संघो भट्टारगो जयइ ॥१॥
मोहारिहि जगडिय विसयहिं विनडिय
तिक्ख-दुक्ख-खंडिय खंडियहं चिरु।
संसार-विरत्तहं पसमिय-चित्तहं
सत्तहं देमि गुसट्ठि निरु ॥२॥

अंत—इय विविह-पयारिहिं विहि-अणुसारिहिं
भाविहिं जिणपहु मणुसरहु
सुत्तेण य पवरिहिं आणासु तरिहिं
भवियण भव-सायरु तरहु ॥३१८॥
जीवानुशास्ति-संधिः समाप्तः

(३) मयणरेहा-संधि

विस्तार—कडवक ५

कर्त्ता—जिनप्रभ

समय—संवत १२९७, आश्विन शुक्ला ६

आदि—निरुवम-नाण-निहाणो पसम-पहाणो विवेय-सनिहाणो
दुग्गइ-दार-पिहाणो जिन-धम्मो जयइ सुह-कामो ॥१॥
सुमरिवि जिण-सासणु सुह-निहि-सासणु
सिरि-नमि-महरिसि मणि धरिउ
पभणिसु संखेविहिं मयणरेह-महा-सइ-चरिउ ॥२॥

अंत—असा महा-सईओ संधी संधीव संजम-निवस्स
जं नमि-निवरिसणा सह ससकरा खीर संजोगो ।।२।।
वारह-सत्ताणउओ वरिसे आसोअ-सुद्ध-छट्ठिओ
सिरि-संघ-पत्थणाओ ओयं लिहियं सुआभिहियं ।।३।।
मयणरेहा-संधि समाप्तः ।।

४ वज्रस्वामि-संधि

कर्त्ता—वरदत्त (?)
आदि—अह जण निसुणिज्जउ कन्नु धरिज्जउ
वयरसामि-मुणियर-चरिउ
अंत—मुणिवर वरदत्ति जाणहर भत्ति वयरसामि—गणहर—चरिउ ।
साहिज्जहु भावि मुच्चहु पावि जि तिहयणु निय-गुण-भरिउ ।।६६।।
चरिउ सुसारउं भविय पियारउं वइरसामि-गणहर—चरिउ ।
जो पढइ कियायरु गुण-रयणारु सो लहु पावइ परम पउ ।
वइरसामि-संधिः समाप्तः ।।

(५) अंतरंग-सन्धि

कर्त्ता—रत्नप्रभ
आदि—
पणमवि दुह-खंडण दुरिय-विहंडण जगमंडण जिण सिद्धिठिय
मुणि-कन्न-रसायणु गुण-गण-भायणु अंतरंग मुणि संधि जिय ।।१।।
इह अत्थि गामु भव-बास णामु बहु-जीव-ठामु विसयाभिरामु
दीसंति जत्थ अणदिट्ठ छेह बहु-रोग-सोग-दुहु जोग-गेह ।।२।।
अंत—अहि अंतह कारणु विस-उत्तारणु जं गुलिमंतह पढणु जिम
कय-सिव-सुह-संधिहि अह सुसंधिहि चितणु जाणु भविय ! तिम ।।१८।।
इति अंतरंग-संधिः समाप्तः । इति नवमोधिकारः ।।

(६) नर्मदासुंदरी-सन्धि

कर्त्ता—जिनप्रभ-शिष्य
समय—संवत १३२८
आदि—
अज्ज वि जस्स पहावो वियलिय-पावो य ऊखलिय-पयावो
तं वद्धमाण—तित्थं नंदउ भव—जलहि—बोहित्थं ।।१।।

पणमवि पणइंदह वीर जिणदह चरण कमलु सिवलच्छि कुलु
सिरि-नमयासुंदरि-गुण-जळ-सुरसरि किंपि थुणिवि लिउं जंम-फलु ॥२॥
सिरि-वद्धमाणु पुरु अत्थि नयरु तहिं संपइ नरवइ धम्म-पवरु
तहिं वसइ सु-सावगु उसहसेणु अणुदिणु जसु मणि जिणनाह वयणु ॥३॥
तब्भज्ज-वीरमइ-कुक्खि-जाय दो पवर पुत्त तह इक्क धूअ ।
सहदेव वीरदासाभिहाण रिसिदत्त पुत्ति गुण-गण पहाण ॥४॥

अंत—तेरस-सय-अडवोसे-वरिसे सिरि-जिणपहुप्पसाअेण
अेसा संधी विहिया जिणिंद-वयणानुसारेणं ॥७१॥
श्रीनर्मदासुंदरी-महासती-संधि समाप्ता ॥

---

(७) अवंति-सुकमाल-सन्धि

---

(८) स्थूलिभद्र-सन्धि

विस्तार—कडव २, गाथा १३+८

आदि—मढ विहार पायारह सोहिउ
वर मंदिर पवर पुर अमरनाहु पिक्खवि मोहिउ
इय अेरिसु पाडलिय पुरु जंबूदीव विक्खाउ
करइ रज्जु जिय-सत्तु तहिं नंदु महाबलु राउ ॥१॥

अंत—कोवि णिय-तणु तविण सोसइ कुवि अरंन वण निवसअे
पिय कोवि किर सेवालु भक्खइ सोवि तुय आसंकअे
जो वेस धरि चउ-मासि निवसइ सरस-भोयण-सित्तउ
तसु थूलभद्द ब्व (ह) पायअे णमउं जिणि मयण तुहुं जित्तउ

विशेष—ऊपर उल्लिखित समस्त रचनाअें पाटणके जैन-भंडारोंमें हैं। इनका विवरण बड़ौदाके गायकवाड़-ओरियंटल-सीरिजमें प्रकाशित पाटण-भंडारोंके सूची-पत्रमें दिया गया है। ऊपर जो उद्धरण दिये गये हैं वे भी वहींसे लिये गये हैं। इस सूचीपत्रमें पृष्ठ ६८ पर अनाथि संधि और जीवानुशास्ति संधि नामक दो और संधियोंके उल्लेख हैं, परन्तु उनके साथ उद्धरण नहीं होनेसे यह नहीं बताया जा सकता कि वे नं० १ और २ से भिन्न हैं या अभिन्न।

(९) भावना-संधि

विस्तार—कडवक ६, गाथा ६२

कर्त्ता—जयदेव, शिवदेव-सूरि-शिष्य

आदि-पणमवि गुण-सायर भुवण-दिवायर जिण चउवीस वि इक्कमणि
अप्पं पडिबोहइ मोह निरोहइ कोइ भव्व भावय वखिणु ॥१॥
रे जीव निसुणउ चंचल सहाव मिल्हेविणु सयल विवायभावु
नवमेय परिग्गह विहव जालु संसारि इत्थ सहु इंदियालु ॥२॥

अंत—निम्मलगुण भूरिहिं सिवदेवसूरिहिं पढम सीसु जयदेव मुणि
किय भावण-संधी भावु सुबंधी णिसुणहु अन्नवि धरउ मणि ॥६२॥

इति श्रीभावना-संधी समाप्ता

प्राप्तिस्थान—हमारे संग्रहमें सं० १४९३ में लिखित गुटकेमें।

विशेष—यह संधि जैनयुग, वर्ष ४, के पृष्ठ ३१४ पर प्रकाशित भी हो चुकी है। सी पत्रिकाके पृष्ठ ४६९ पर इसके संबंधमें श्रीयुत मधुसूदन मोदीका अेक लेख भी काशित हुआ है।

(१०) शील-संधि

विस्तार—गाथा ३४

कर्त्ता—जयशिखर-सूरि-शिष्य

आदि—सिरि-नेमि-जिणंदह पणय-सुरिंदह पय-पंकय समरेवि मणि
वम्मह-उरि-कीलह कय-सुह सीलह सीलह संथव करिस हउं ॥१॥

अंत—इय सीलह संधी अइय सुबंधी जयसेहर-सूरि-सीस कय
भवियह निसुणेविणु हियइ धरेविणु सील-धम्मि उज्जम करहो ॥२॥

इति सील-संधि समाप्तः ॥

प्राप्ति-स्थान—हमारे संग्रहमें उक्त सं० १४९३ में लिखित गुटकेमें।

(११) तप-संधि

कर्त्ता—सोमसुंदर-सूरि-शिष्य-राजराज-सूरि-शिष्य

अंत-सिरि-सोमसुंदर-गुरु-पुरंदर-पाय-पंकय-हंसओ।
सिरि-विसाल-राया-सूरि-राया-चंदगच्छवंसओ

पय नमीय सीसइं तासु सीसइ अेस संधी विनिम्मिआ
सिव सुक्ख कारण दुह निवारण तव उवअेसिइ वम्मिआ

लेखनकाल—सं० १५०५
प्राप्ति-स्थान—पाटणका भंडार

(१२) उपदेश-संधि

विस्तार—गाथा १४
कर्त्ता—हेमसार
अंत—उवअेस संधि निरमल बंधि हेमसार इम रिसि करअे
जो पढइ पढावइ सुह मणि भावइ वसुहं सिद्धि वृद्धि लहअे

(१३) चउरंग-संधि

विस्तार—कडवक ५
विषय—चार शरणोंका वर्णन

विशेष विवरण—पिछली तीन कृतियोंका उल्लेख जैन गुर्जर कविओ, भाग १, में पृष्ठ ७६ और ८३ पर हुआ है। नंबर ११ और १२ की भाषा अपेक्षाकृत अर्वाचीन है।

(४) अपभ्रंशोत्तर राजस्थानी आदि भाषाओंके संधिकाव्य

अपभ्रंशकी संधिकाव्योंकी परंपराको भाषा-कवियोंने चालू रखी। हमारी शोधसे कोई ४० असी रचनाओंका पता लगा है जिनकी नामावली आगे दी जाती है। ये चौदहवींसे लेकर उन्नीसवीं शताब्दी तककी हैं।

चौदहवीं शताब्दी

१ आनंद-संधि	गाथा ७५	विनयचंद्र	...	हमारे संग्रहमें
२ केशी गौतम संधि	गाथा ७०	...	...	”

सोलहवीं शताब्दी

३ मृगापुत्र संधि	...	कल्याणतिलक	१५५० लग०	हमारे संग्रहमें
४ नंदन मणिहार संधि	...	चारुचंद्र	१५८७	”

क्र. संधि	गाथा	कर्ता	संवत्	स्थान
५ उदाइ राजर्षि संधि	...	संयममूर्ति	१५६० लग०	जैन गुर्जर कविओ
६ गजसुकमाल संधि	गाथा ७०	"	१५६०	"
७ "	...	मूलप्रभ	१५५३	"
८ धना-संधि	गाथा ६५	कल्याणतिलक	१५६० लग०	हमारे संग्रहमें

सत्रहवीं शताब्दी

क्र. संधि	गाथा	कर्ता	संवत्	स्थान
९ सुखदुख विपाक संधि	...	धर्ममेरु	१६०४	जयपुर भंडार
१० सुबाहु-संधि	...	पुण्यसागर	१६०४	हमारे संग्रहमें
११ चित्रसंभूति संधि	गाथा १०६	गुणप्रभसूरि	१६(०)८	आश्विन वदि ९ गुरु जेसळमेरमें रचित
१२ अर्जुन-माली संधि	..	नयरंग	१६२१	जेसळमेर भंडार
१३ जिनपालित-जिनरक्षित संधि	....	कुशळलाभ	१६२१	बृहद् ज्ञानभंडार
१४ हरिकेशी संधि	...	कनकसोम	१६४०	"
१५ संमति संधि	गाथा १०६	गुणराज	१६३०	हमारे संग्रहमें
१६ गजसुकमाल संधि	गाथा ३४	मूळावाचक	१६२४	जैन गुर्जर कविओ
१७ चउसरण प्रकीर्णक संधि	गाथा ६१	चारित्रसिंह	१६३१	जेसळमेर भंडार
१८ भावना संधि	....	जयसोम	१६४६	हमारे संग्रहमें
१९ अनाथी संधि	...	विमल विनय	१६४७	"
२० कयवन्ना संधि	...	गुणविनय	१६५१	बृहद् ज्ञानभंडार
२१ नंदिषेण संधि	...	दानविनय	१६६५	हमारे संग्रहमें
२२ मृगपुत्र संधि	...	सुमतिकल्लोल	१६६३	बृहद् ज्ञानभंडार
२३ आनंद संधि	...	श्रीसार	१६८४	जेसळमेर भंडार
२४ केशी गोयम संधि	...	नयरंग	१७वीं शताब्दी	हमारे संग्रहमें
२५ नमि संधि	गाथा ६९	विनय (समुद्र)	"	बृहद् ज्ञानभंडार
२६ महाशतक संधि	...	धर्मप्रबोध	"	हमारे संग्रहमें

अठारहवीं शताब्दी

क्र. संधि	गाथा	कर्ता	संवत्	स्थान
२७ कंडरीक पुंडरीक संधि	...	राजसार	१७०३	जेसळमेर भंडार

२८	जयंती संधि	...	अभयसोम	१७२१ भाद्र	हमारे संग्रहमें
२९	भद्रनंद संधि	...	राजलाभ	१७२३	श्रीपूजजीका संग्रह
३०	प्रदेशी संधि	...	कनकविलास	१७२५	हमारे संग्रहमें
३१	हरिकेशी संधि	...	सुमतिरंग	१७२७	...
३२	चित्रसंभूतिसंधि	गाथा ३९	नयप्रमोद	१७२९	बृहद् ज्ञानभंडार
३३	चित्रसंभूति संधि	गाथा १०९	गुणप्रभसूरि	१७२९	जेसलमेर भंडार
३४	इषुकार संधि	...	खेमो	१७४५	हमारे संग्रहमें
३५	अनाथी संधि	...	"	"	"
३६	थावच्चासंधि	...	श्रीदेव	१७४९	बृहद् ज्ञानभंडार
३७	भरत संधि	...	बे० पद्मचंद्र	१८ वीं शताब्दी	जेसलमेर भंडार
३८	मृगापुत्रसंधि	...	जिनहर्ष	"	...
			उन्नीसवीं शताब्दी		
३९	प्रदेशी संधि	...	जेमल	१८१७	हमारे संग्रहमें
			अज्ञात-काल		
४०	चन्दनबाला संधि	...	...	...	(जिनविजयजीके पत्रमें उल्लेख)
४१	जिनपालित-जिनरक्षित संधि	...	मुनिशील	...	बृहद् ज्ञानभंडार
४२	सुबाहु संधि	...	मेघराज	...	लींबड़ी भंडार

प्राचीन राजस्थानी साहित्य

१—चारणी गीत

राजस्थानी साहित्यमें गीत-साहित्यका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। वास्तविक डिंगल साहित्य इस गीत-साहित्यको ही कहना चाहिअे। डिंगलका पूर्ण ज्ञान इन गीतोंके अध्ययन-के बिना असंभव है।

गीत-साहित्य राजस्थानी भाषाकी अपनी विशेषता है। हिन्दी, पंजाबी, सिंधी, गुजराती आदि पड़ोसी भाषाओंमें इसका नितान्त अभाव है।

गीत-साहित्य प्रधानतया वीर-रसात्मक, और अैतिहासिक बिषयोंसे सम्बन्ध रखनेवाला है, यद्यपि वैसे सभी विषयों पर अच्छे-से-अच्छे गीत लिखे गये हैं। अधिकांश गीत चारणोंकी कृतियां हैं पर अन्यान्य लोगोंके लिखे हुअे गीत भी बहुत मिलते हैं।

गीतोंकी संख्या हजारों है। राजस्थानमें कदाचित ही कोई अैसा वीर हुआ होगा जिसकी वीरताका अेकाध गीत न बना हो। हजारों वीरोंकी स्मृतिको इन गीतोंने जीवित रखा है जिनको इतिहासने भी भुला दिया है।

गीत-साहित्यमें सबसे महत्त्वपूर्ण वीर-गीत हैं। वे वीर-रसकी उमड़ती हुई धाराअें हैं। महाराणा प्रताप, दुर्गादास, अमरसिंह राठौड़ आदिके गीत रसात्मक साहित्यकी अमूल्य निधि हैं।

ध्यान रहना चाहिअे कि ये गीत यद्यपि गीत कहे जाते हैं, गाये नहीं जाते थे। ये गानेकी चीजें नहीं हैं। बाहरी लोग गीत नाम देखकर इन्हें गानेकी चीज समझ लेते हैं और इनके रचयिताओंको साधारण गायक कह देते हैं। चारण लोग गायक कहे जानेको अपना अपमान समझते हैं। गीत राजस्थानी छंद-शास्त्रकी अेक पारिभाषिक संज्ञा है।

ये गीत अेक विशेष लयसे पढ़े जाते थे, रिसाइट recite किये जाते थे। पढ़नेकी यह शैली बड़ी भव्य और प्रभावशाली होती थी। उस शैलीमें पढ़े जाते हुअे गीतोंसे वीर लोग हंसते-हंसते प्राण न्यौछावर कर देते थे। वैसी भव्य शैलीमें पढ़नेवाले चारण आज भी कहीं-कहीं मिल जाते हैं। वे विरल हैं पर उनका नितान्त अभाव नहीं।

इन गीतोंकी अेक विशेषता विशेष रूपसे उल्लेखनीय है। वह यह कि अेक गीतके सभी दोहलोंमें प्रायः वही भाव बारबार लाया जाता है अर्थात प्रथम दोहलेमें जिस भावका

कथन होगा उसी भावका कथन बाकीके दोहलोंमें भी भंग्यन्तरसे किया जायगा। कवि साधारण हुआ तो आगेके दोहलोंमें शब्दान्तर paraphrase सा करता जायगा और यदि प्रतिभाशाली हुआ तो भावको अैसे अनोखे ढंगसे, वक्रताके साथ, दुहरायगा कि पुनरावृत्ति प्रतीत नहीं होगी।

गीतको आप अेक कविता समझ लीजिये। जैसे अेक कवितामें अनेक पद्य होते हैं वैसे ही अेक गीतमें कई दोहले होते हैं। अधिकांश गीतोंमें चार दोहले पाये जाते हैं पर कम या बेशी भी हो सकते हैं। हां, तीनसे कम दोहके किसी गीतमें नहीं होते।

दोहलेमें प्रायः चार चरण होते हैं। अेक गीतके सब दोहले समान होते हैं पर कुछ गीतोंमें प्रथम दोहलेके प्रथम चरणमें दो या तीन मात्राअें या वर्ण अधिक होते हैं जो मानो गीतका आरंभ सूचित करते हैं।

आगे कुछ वीर-गीत दिये जाते हैं। पहले गीतमें वीरकी प्रशंसा है। आगेके पांच गीत राजस्थानके तीन प्रख्यात वीर राठौड़ अमरसिंह, राठौड़ बलू और चौहाण केसरीसिंहसे सम्बन्ध रखते हैं।

राठौड़ अमरसिंह जोधपुरके महाराजा गजसिंहका पुत्र और महाराजा जसवंतसिंहका बड़ा भाई था। वह अपनी प्रचंड निर्भीकता और उद्दंड साहसके लिअे भारत भरमें प्रसिद्ध है। उसने बादशाह शाहजहांके भरे दरबारमें मीरमुंशी सलावतखानको कटारसे मार डाला, और अनेक योधाओंके साथ अकेला लड़ता हुआ मारा गया। उसकी प्रशंसामें राजस्थानी और हिन्दीके अनेक कवियोंने काव्य-रचना की है। उसके संबंधमें यह दोहा बहुत प्रसिद्ध है—

उण मुखसूं गग्गो कह्यो इण कर लयी कटार
वार कहण पायो नहीं होगी जमधर पार

बलू अमरसिंहका सरदार था। अपने उद्दंड स्वभावके कारण अमरसिंहने बलूको निकाल दिया। वह बादशाहके पास पहुँचा और बादशाहसे नयी जागीर प्राप्त की। जब अमरसिंह मारा गया तो अमरसिंहकी रानियोंने सती होनेके लिअे अमरसिंहका शव मांगा। बलूने शव लानेका बीड़ा उठाया और शाही सेनासे जा भिड़ा।

किसनदास (कविताका नाम केहरीसिंह) सांचौरा चौहान अचलसिंहका पुत्र था। सांचौरा चौहान अपनी वीरताके लिअे बड़े प्रसिद्ध रहे हैं। उनके संबंधमें कवियोंने जो गीत लिखे हैं वे राजस्थानीके सर्वश्रेष्ठ गीतोंमेंसे हैं।

(२)

गीत राठौड़ अमरसिंघ गजसिघौतरो

गढपतिअे घणां किया गढ–रोहा
परगह के जूझिया पह।
जिग कीधौ अमरेस जडाळी
किणहि न कीधौ इम कळह ॥ १ ॥

कोटां ओट घणां जुध कीया
फौजां घणां किया फर-फेर।
राउ राठौड़ जिहीं सूं-रौद्रां
नरपति बिढियौ न-को अनेर ॥ २ ॥

कोटां प्राण प्राण के कटकां
सूं पहरिया दिल्ली-पतिसाह।
अेक कटारी कियौ न अेकण
गजसिंघौत जिसौ गज-गाह ॥ ३ ॥

दाणव बि-त्रिण पगां तळ दीधा
वणियै मरण दिखाळियौ वाढ।
बाहो अेकण गंग-वंसोधर
जम-डाढां मांहो जम-डाढ ॥ ४ ॥

---

१ अनेक गढ़पतियोंने गढ़ोंका युद्ध किया, अनेक राजा सेना लेकर लड़े, पर अमरसिंहने जिस प्रकार कटारसे युद्ध किया वैसा किसीने नहीं किया।

२ दुर्गोंकी ओटमें अनेकोंने युद्ध किये। फौजें लेकर अनेकोंने लड़ाइयां (?) कीं। पर राठौड़ वीर राव अमरसिंह जिस प्रकार लड़ा वैसे और कोई राजा यवनोंसे नहीं लड़ा।

३ दुर्गोंके बल पर या सेनाओंके बलपर बहुत-से राजा दिल्लीके बादशाहसे लड़े पर अेक कटारीके बलपर, ओर अेकेले, किसीने गजसिंहके पुत्रकी भांति घमासान युद्ध नहीं किया।

४ दो-तीन यवनोंको पैरोंके नीचे दबा लिया। मरण आ पहुँचने पर मारकाटको दिखलाया। गंगाके वंशधरने यमकी डाढ़ोंके बीचमें अकेले कटारी चलायी।

(३)

गीत राठौड़ अमरसिंघ गजसिंघौतरो

वडै ठौड़ राठौड़ अखियात राखी वडी
जोर वर जोध जम-दाढ जमरा।
सलाबत दिली-पत देखतां साहियौ
अयो तिण वाररा रूप, अमरा!॥ १॥

गजनरा केहरी सिंघ जूझार-गुर
माण तजि जगत्र सहु हुकम मानै।
पाड़िया तैं ज पतिसाहरी पाखती
खान सुरताण दीवाण-खानै॥ २॥

हाकतौ दिली-दरियाव हीलोळतौ
ढूकड़ै साह उमराव ढाहे।
आगरै सहर हटनाळ पाड़ी अमर
मारुआ राव दरबार मांहे॥ ३॥

---

१ हे यमकी यम-दंष्ट्रा के समान भयंकर और जोरावर योधा राठौड़ वीर! तुमने बड़े स्थानमें बड़ी कीर्तिकी कथा की। सलाबतखांको दिल्लीपतिके देखते-देखते मार डाला। हे अमरसिंह! तुम्हारा उस समयका रूप धन्य है!

२ हे गजसिंहके केसरी सिंहके समान वीर पुत्र! हे योधाओंके गुरु! सारा जगत मान छोड़कर तेरा हुक्म मानता है। तूने ही बादशाहके दीवानखानेमें (दरबारमें) बादशाहके निकट ही उमरावोंको गिराया।

३ हांक लगाते हुओ और दिल्ली-रूपी समुद्रको हिलाते हुओ अमरसिंहने बादशाहके पास उमरावोंको गिराया। मारवाड़के रावने आगरे शहरमें दरबारके अन्दर हड़ताल कर दी (सारे लोग दरबार छोड़कर भाग गये)।

पगै पहरै जठै हाथसूं परहरै
लोह समि न-को असमान लागै।
तो जिसौ जूझियौ न-को हिंदू-तुरक
अमर ! अकबर-तणा तखत आगै॥ ४॥

(४)

गीत राठोड़ बलू गोपालदासौत चांपावतरो

बिजड़ ऊठियौ धूणि गिरि-मेर सो बहादर
पछैं म्हे कदे अवसाण पावां ?
अमरनै सुरग दिस मेलनै अेकलौ
आगरै लड़ेवा कदे आवां ?॥ १॥

अम्हे तो अमर राजा तणा ऊमरा
जुड़ेबा पारकी थटी जागां।
बोलियौ बळू पतसाहरै बराबर--
मारवै राव़रौ वैर मांगां॥ २॥

---

४ जहां पैरोंमें पहनते थे वहाँ हाथोंमें पहनने लगे (पैरोंमें पहननेके जूते हाथोंमें लेकर दरबारके लोग भागे), हथियार लेकर कोई आसमान तक नहीं उठता (वीर-दर्पसे सिर ऊंचा करके सामने नहीं आता)। हे अमरसिंह ! अकबरके सिंहासनके सामने कोई हिंदू या मुसलमान तुम्हारी तरह नहीं लड़ा।

१ वह मेरुपर्वत-सा वीर खड्गको घुमाता हुआ उठा। बोला—पीछे हम अैसा अवसर कब पावेंगे ! अमरसिंहको अकेला स्वर्ग भेजकर फिर आगरेमें लड़ने कब आवेंगे !

२ हम तो राजा अमरके उमराव हैं, युद्ध करनेके लिये परायी भूमिमें (!) जागते हैं। बलू बादशाहके बराबर (रूबरू) बोला—हम तुमसे मारवाड़के राव अमरसिंहका वैर मांगते हैं।

केसरया मांह गरकाब बागा करे
सेहरौ बांध हळकार साथै।
अमररौ भतीजौ तोल खग आखवै
बळू अर आगरौ हुवा बाथै॥ ३॥

पटानै नाखि भिड़ साहसूं चटापड़
काम नवकोट साचौ कमायौ।
बाद कर साहसूं वैर नृप वोढियौ
अमर नै मुहर करि सरग आयौ॥ ४॥

(५)

गीत राठौड़ बलू गोपालदासौतरो

कहर काळ लंकाळ बळिराव गज केसरी
जोध जोधां सरिस अेम जूटौ।
सांकळां हूंत नाहर किनां विछूटौ
तगसिआं कासिपी किनां त्रूटौ॥ १॥

---

३ केशरिया रंगमें बागेको (जामेको) गरकाब करके और ललकारके साथ सेहरा बांधकर अमरसिंहका भतीजा बलू तलवार उठाकर बोला—और बोलते ही बलू और आगरा दोनों भिड़ गये (आगरा=बादशाहके सरदार)।

४ शाही जागीरको फेंककर और बादशाहसे चटापट भिड़कर राठौड़ वीरने सच्चा काम किया। बादशाहसे बराबरी करके राजा अमरसिंहके वैरको सिरपर ओढ़ा। फिर अमर-को आगे करके (अमरके पीछे-पीछे) स्वर्ग आ पहुँचा।

१ प्रलय-काल तथा सिंहके समान भयंकर, बलवानोंका राजा, हाथियोंके लिये सिंह रूप, वीर बलू योधाओंके साथ इस तरह भिड़ गया मानो जंजीरोंसे सिंह छूटा हो अथवा मानो सांपों पर गरुड़ झपटा हो।

दूसरौ मयंक दूहवै दळां देखतां
जोट वट छडाळै प्रसण जड़ियौ !
हसत दीठां समा सीह बाथां हुऔ
पनग-सिर किनां धख-पंख पड़ियौ ॥ २ ॥

पाळ-रा नमौ हथ-वाह बाहां प्रलंब
तळिछि सुदर लियौ दळां अणताघ (?)।
उरड़ पड़ियौ किनां गरुड़ अहि ऊपरै
विरड़ छूटौ किनां गजां सिर बाघ ॥ ३ ।

(६)

गीत चोहाण किसनदास अचलावतरो

कळि चालि लंकाळ कहै इम केहरि
विढिवा कजि ऊछजि केवाण।
चलियै दळै विमुहि क्यूं चालूं
चलियौ विमुहि न-को चहुआण ॥ १ ॥

---

२ दूसरे मयंक, भालाधारी, वीर बलूने दोनों दलोंके देखते शत्रुओं पर भयंकर आघात किया (?), मानो हाथियोंको देखते ही सिंह भिड़ गया हो अथवा मानो सांपोंके सिर पर गरुड़ पड़ा हो।

३ लंबी भुजाओंवाले गोपालके पुत्र बलूके हाथ चलानेको नमस्कार है। अपार सेनाओंपर वह इस तरह टूटकर पड़ा (?) मानो उछलकर गरुड़ सांपों पर पड़ा हो अथवा मानो क्रोधमें भरकर सिंह हाथियों पर झपटा हो।

१ भयंकर युद्धमें सिंहके समान वीर केहरी लड़नेके लिअे तलवार उठाकर इस प्रकार कहता है—सेनाके पीछे मुड़ जाने पर भी मैं पीछे क्यों मुड़ूं, कोई चौहान कभी युद्धमें पीछे नहीं मुड़ा।

चौरंग चलै नहीं अचळावत
झाड़ै प्रसण दिये खग-झीक।
मुड़िया दळ देखे नह मुड़ियौ
मुड़ियै दळ जुड़ियौ मछरीक ॥ २ ॥

कळहि सीह ज्यूं सीह-कळोधर
निडर निहसियौ बाधे नेत।
खड़िया दळ देखे नह खड़ियौ
खड़ियै दळ लड़ियौ रिण-खेत ॥ ३ ॥

भागां साथ न भागौ अणभंग
आप विढे भांजिया अरि।
केहरि सरग पहूतौ अणकल
करनहरौ अखियात करि ॥ ४ ॥

---

२ अचलदासका बेटा युद्धमें नहीं मुड़ता। वह खड्गके आघात कर शत्रुओंको भाड़ता है। सेनाओंको मुड़ी हुई देखकर भी वह नहीं मुड़ा। वह क्रोधी, सेनाके मुड़ने पर, स्वयं शत्रुओंसे जा भिड़ा।

३ सीहाका वंशज नेत बांधकर युद्धमें सिंहकी तरह निडर होकर लड़ा। वह सेनाओंके भाग जाने पर नहीं भागा। वह सेनाओंके भागने पर रण-क्षेत्रमें लड़ा।

४ वह अपराजेय वीर भागे हुओंके साथ नहीं भागा। उसने स्वयं लड़कर शत्रुओंको भगाया। कर्णसिंहका वंशज केहरी अद्भुत कीर्ति-कथा करके स्वर्गमें पहुँचा।

वात दूदै जोधावतरी

[दूदै जोधावत मेघौ नरसिंघदासौत सींधल मारियौ ।]

राव जोधौ पौढियौ हुतौ । वातपोस वातां करता हुता । राजवियां-स्यां वातां करता हुता । ताहरां अेक कह्यौ—भाटियां-रौ वैर न रहै । ताहरां अेक बोलियौ—राठोड़ां-रै वैर अेक रह्यौ । कह्यौ—किसौ ? कह्यौ—आसकरण सतावत-रौ वैर रह्यौ, नरबदजी सुपियारदे ल्याया हुता तिको वैर रह्यौ ।

ताहरां राव जोधै वात सुणी । ताहरां उवां-नूं पूछियौ—थे कासूँ कह्यौ ? कह्यौ—जी ! क्यूंही नहीं । ताहरां बोलियौ—ना, ना, कह्यौ । ताहरां कह्यौ—जी ! आसकरण-रै छोरू न हुवौ, नै नरबद-रै पिण छोरू नहीं, तै वैर यूंही रह्यौ । राव जोधै वात सुणि-नै मन-में राखी ।

प्रभाते दरबार बैठा छै । तितरै कूंवर दूदै आइनै मुजरौ कियौ । सू दूदै-सूँ राव्जी कु-मया करता । ताहरां राव्जी कह्यौ—दूदा, मेघौ सींधल मारियौ जोयीजै । ताहरां दूदै सलाम की । ताहरां राव्जी बोलिया—दूदा ! आसकरण सतावत-

---

कहानी जोधाके बेटे दूदे की

जोधाके बेटे दूदेने नरसिंहदासके बेटे मेघेको मारा इसकी कहानी

[अेक दिन] राव जोधा सोया हुआ था । कहानी कहनेवाले बातें कर रहे थे—रईसोंकी बातें करते थे । उस समय अेकने कहा—भाटियोंका बैर नहीं रहता । अेक बोला—राठोड़ोंका बैर नहीं रहता । तब अेक बोला—राठोड़ोंका अेक बैर बाकी रह गया । कहा—कौनसा ? कहा—सताके बेटे आसकर्णका बैर बाकी रहा, नरबदजी सुपियारदेको लाये थे वह बैर बाकी रहा ।

तब राव जोधेने बात सुनी । [उसने] उनसे पूछा—तुम लोगोंने क्या कहा ? उन लोगोंने कहा—जी ! कुछ भी नहीं । तब जोधाने कहा—नहीं, नहीं, कुछ कहा था । तब कहा—जी ! आसकर्णके बेटा नहीं हुआ और नरबदके भी बेटा नहीं, जिससे बैर योंही रह गया । राव जोधेने बातको सुनकर मनमें रखा ।

नूं नरसंघदास सींधल मारियौ हुतौ, नरबदजी सुपियारदे-नूं ल्याया हुता तियै वदलै आसकरण-नूं मारियौ हुतौ; नरसिंघ-रौ बेटौ मेघौ, तियै-नूं जाय मारि। ताहरां दूदौ सलाम करि-नै चालियौ। ताहरां राव्रजी कह्यौ--दूदा ! यूं जा मत, हूं सराजाम करि देस्यूं, यूँ आगै मेघौ सींधल छै, तैं मेघौ काने नहीं सुणियौ छै। ताहरां दूदौ कहै—का तौ दूदौ मेघै, का मेघौ दूदै।

ताहरां दूदौ डेरै आइनै आप-रौ साथ लेइनै चढियौ। जाइनै जैतारिण-हूं कोस तीन उरै ऊतरियौ। आदमी मेल्ह दियौ। जाइनै मेघै-नूँ कहौ— दूदौ जाधाव्रत आयौ, आसकरण मांगै। आदमी जाइ मेघै-नूं कह्यौ। मेघै कह्यो—मोड़ा क्यूं आया ? ताहरां कह्यौ—समझ पड़ी पछै दूदै पाणी आगै आय पियौ छै।

ताहरां मेघौ माळियै चढियौ। कह्यौ—रे ! घोड़्यां इयै तरफ मतां उछेरौ, दूदौ जोधाव्रत आयौ छै, घोड़्यां ले जासी।

सबेरे रावजी दरबारमें बैठे हैं। इतनमें कुंवर दूदेने आकर मुजरा (प्रणाम) किया। दूदेके प्रति रावजी अकृपाका बर्त्ताव करते थे। तब रावजीने कहा—दूदा! मेघे सिंधलको मारना चाहिअे। तब दूदेने सलाम किया। रावजी बोले—दूदा! सताके बेटे आसकर्णको नरसिंहदास सिंधलने मारा था, नरबदजी सुपियारदेको लाये थे उसके बदलेमें आसकर्णको मारा था; नरसिंहदासका बेटा मेघा है, उसको तू जाकर मार।

तब दूदा प्रणाम करके चला। तब रावजीने कहा—यों मत जा, मैं सरंजाम कर दूंगा, यों आगे मेघा सिंधल है; तूने मेघेको कानोंसे नहीं सुना है। तब दूदा कहता है—या तो दूदा मेघेको मारेगा या मेघा दूदेको मारेगा [दोनोंमेंसे अेक बात अवश्य होगी]।

तब दूदा अपने डेरे आया और अपने साथको लेकर चढ़ा। चलकर जैतारणसे तीन कोस इधर ठहरा। अपना आदमी भेज दिया। उससे कहा—जाकर मेघेको कह कि जोधाका बेटा दूदा आया है, आसकर्णको मांगता है।

आदमीने जाकर मेघेसे [समाचार] कहा। मेघने कहा—देरसे क्यों आये ? तब कहा-समझ पड़नेके बाद तो दूदेने पानी आगे आकर ही पिया है।

तब मेघा ऊपरके मकान पर चढ़ा। उसने कहा—अरे ! घोड़ियां इधर मत उछेरो, जोधाका बेटा दूदा आया है, वह घोड़ियोंको ले जायगा।

ताहरां दूदौ बोलियौ—रे ! ओ कुण बोलै ? कह्यौ –जी ! मेघौ बोलै छै। कह्यौ—रे ! इतरी भुंई सुणीजै छै ? कह्यौ –जी ! मेघौ सींधल काने सुणियौ छै किनां नहीं ? म्हे घोड़्यां-सूं काम नहीं, माल-सूं काम नहीं, म्हारै थारै माथै-सूं काम छै, परत-री वेढ करिस्यां।

ताहरां बीजै दिन मेघौ साथ करिनै आयौ। इयै तरफ-सूं दूदौ आयौ। ताहरां मेघौ कहै—दूदाजी ! थां अवसर लाधौ, रजपूत तौ म्हारा सरब म्हारै बेटै-रै साथै जान गया; हूं छूं। ताहरां दूदौ कहै--मेघा ! आपां परत-री वेढ करिस्यां, रजपूता-नूं क्यूं मारां ? का दूदौ मेघै, का मेघो दूदै। आपां-हीज सांफळो हुसी।

ताहरां साथ दोह्यां-रौ अळगौ ऊभौ रह्यौ। अेकै दिसा मेघौ आयौ, अेकै दिसा-सूं दूदौ आयौ।

ताहरां दूदौ कहै—मेघा ! करि घाव। मेघौ कहै—दूदौजी ! करौ घाव। ताहरां दूदौ कहै—मेघाजी ! थे घाव करौ।

तब दूदा बोला—अरे ! यह कौन बोलता है। लोगोंने कहा—जी ! मेघा बोलता है। दूदेने कहा—अरे ! इतनी दूर तक सुन पड़ता है ? कहा—जी ! मेघे सिंधलको कानोंसे सुना है या नहीं ?

दूदेने कहा—मेघा ! मुझे घोड़ियोंसे काम नहीं, धन-संपत्तिसे काम नहीं, मुझे तो तेरे सिरसे काम है, परत (?) की लड़ाई करेंगे।

तब दूसरे दिन मेघा साथको सजाकर आया। इस ओरसे दूदा आया। तब मेघा कहता है—दूदाजी ! आपने अवसर पाया, मेरे सारे राजपूत तो मेरे बेटेके साथ बरातमें गये हुअे है, मैं [अकेला] हूँ। तब दूदा कहता है—मेघा ! अपन द्वन्द्व-युद्ध (?) करेंगे, राजपूतोंको क्यों मारें ? या तो दूदा मेघेको या मेघा दूदेको; अपन दोनोंके बीचमें ही युद्ध होगा !

तब दोनोंका साथ दूर खड़ा रहा। अेक दिशासे मेघा आया और अेक दिशासे दूदा आया। तब दूदा कहता है—मेघा ! वार कर। मेघा कहता है—दूदाजी ! आप वार कीजिये। तब दूदा कहता है—मेघाजी ! आप वार कीजिये। तब मेघाने वार किया।

ताहरां मेघै घाव़ कियौ। सो दूदै ढाळ-सूँ ढाळि दियौ। दूदै पाबूजी-नूं समरि-नै मेघै-नूँ घाव़ कियौ। सु माथौ धड़-सूं अळगौ जाइ पड़ियौ। मेघौ काम आयौ।

ताहरां मेघै-रौ माथौ वाढि-नै दूदौ ले हालियौ। ताहरां आपरां राजपूतां कह्यौ—मेघै-रौ माथौ धड़ ऊपरां मेल्हौ, वडौ रजपूत छै। ताहरां दूदै माथौ मेल्हियौ। दूद कह्यौ—-कोई गाम-रौ उजाड़ मती करौ, मेघै-सूं काम हुतौ।

मेघै-नूं मारि दूदौ अपूठौ फिरियौ। आयनै राव़ जोधै-नूं तसलीम कीधी। राव़ राजी हुव़ौ।

ज़ोधैजी दूदै-नूं घोड़ौ सिरपाव़ दियौ। बहुत राजी हुव़ा।

उसे दूदेने ढालसे टाल दिया। फिर दूदेने पाबूजीको स्मरण करके मेघे पर वार किया। सो सिर धड़से दूर जा गिरा। मेघा काम आया।

तब मेघेका सिर काटकर दूदा ले चला। अपने राजपूतोंने कहा—मेघेका सिर धड़के ऊपर रखो, मेघा बड़ा राजपूत है। तब दूदेने सिरको धड़ पर रखा। फिर दूदेने कहा—मेघेके किसी गांवका बिगाड़ मत करो, हमारा तो केवल मेघेसे काम था।

मेघेको मारकर दूदा वापिस मुड़ा। आकर राव जोधेकी तसलीम की। राव प्रसन्न हुआ। जोधेजीने दूदेको घोड़ा और सिरोपाव दिया। बहुत प्रसन्न हुए।

नवीन राजस्थानी साहित्य

पातल और पीथल

(प्रताप और पृथ्वीराज)

[कन्हैयालाल सेठिया]

[श्री कन्हैयालाल सेठिया आधुनिक राजस्थानीरा समर्थ कवि है। राजस्थानी :तिहासरी सु-प्रसिद्ध घटनानै लेयनै आप आ अमर कविता लिखी है। भाषारो प्रवाह औैर ओज इण कविताराविशेष गुण है।]

(१)

अरे! घास-री रोटी ही जद वन-बिलावड़ो ले भाग्यो
नान्हो-सो अमर्यो[१] चीख पड़्यो राणा-रो सोयो दुख जाग्यो

हूं लड़्यो घणो, मैं सह्यो घणो, मेवाड़ी मान बचावण-नै
मैं पाछ[२] नहीं राखी रणमें वैर्यां-रो खून बहावण-में
जद याद करूं हळदी-घाटी, नैणां-में रगत उतर आवै
सुख-दुख-रो साथी चेतकड़ो[३] सूती-सी हूक जगा जावै
पण आज बिलखतो देखूं हूं जद राज-कंवरनै रोटी-न
तो क्षात्र-धम-नै भूलूं हूं, भूलूं हिंदवाणी चोटीनै

मैं'लां-में[४] छप्पन भोग जका मनवार बिना करता कोनी
सोना-री थाळ्यां नीलम-रा बाजोट[५] बिना धरता कोनी
बै हाय! जका करता पगल्या[६] फूलां-री कंवळी सेजां पर
बै आज रुळै भूखा-तिसिया[७] हिंदवाणै-सूरज[८]-रा टाबर
आ सोच हुयी दो टूक तड़क राणा-री भीम-बजर छाती
आंख्यांमें आंसू भर बोल्या,- हूं लिखसूं अकबर-नै पाती

---

१ अमरसिंह महाराणा प्रतापके पुत्रका नाम था २ कमी रखी, पीछे रहा ३ चेतक प्रतापके घोड़ेका नाम था ४ महलोंमें ५ पट्टे ६ धीरे-धीरे पैर रखते ७ प्यासे ८ हिंदुआसूर्य मेवाड़के राणाओंकी उपाधि है।

(२)

पण लिखूं कियां, जद देखै है — आडावळ[9] ऊंचो हियो लियां
चित्तोड़ खड्यो है मगरां-में[10] — विकराळ भूत-सी लियां छियां[11]
हूं झुकूं कियां? है आण मनै — कुळ-रा केसरिया बाना-री
हूं बुझूं कियां, हूं शेष लपट — आजादी-रा परवानां-री[12]

पण फेर अमर-री सुण बुसक्यां[13] — राणा-रो हिवड़ो भर आयो
हूं मानूं हूं, हे म्लेच्छ! तनै — सम्राट,—सनेसो[14] कैवायो

(३)

राणा-रो कागद वांच हुयो — अकबर-रो सपनो सौ[15] सांचो
पण नैण कर्‌यो विश्वास नहीं, — जद वांच-वांच-नै फिर वांच्यो
कै आज हिमाळो पिघळ बह्यो, — कै आज हुयो सूरज शीतळ
कै आज शेष-रो सिर डोल्यो, — यूं सोच हुयो सम्राट विकळ

बस दूत इसारो पा भाज्या — पीथल-नै तुरत बुलावण-नै
किरणां-रो[16] पीथल[17] आ पूग्यो — ओ साचो भरम मिटावण-नै

बीं वीर बांकुड़ै पीथल-नै — रजपूती गौरव भारी हो
बो क्षात्र-धर्म-रो नेमी हो, — राणा-रो प्रेम-पुजारी हो
वैर्‌यां-रै मन-रो कांटो हो, — वीकाणो[18] पूत खरारो[19] हो
राठोड़ रणां-में रातो हो, — बस सागी[20] तेज दुधारो हो

आ बात पातस्या जाणै हो, — घावां पर लूण लगावण-नै
पीथल-नै तुरत बुलायो हो — राणा-री हार वंचावण-नै

---

९ आडावळा (अरावली) पहाड़ १० पीठ पर ११ छाया १२ पतिंगा १३ सिसकियां १४ संदेश १५ सारा १६ किरनोंवाला, किरणमयीका पति १७ पृथ्वीराज १८ वीकानेरका १९ खरा २० ठीक वही।

(४)

म्हे बांध लियो है, पीथल ! सुण पिंजरै-में जंगळी सेर पकड़
ओ देख हाथ-रो कागद है, तूं, देखां, फिरसी कियां अकड़
मर डूब चळू भर पाणी-में, बस झूठा गाल बजावै हो
पण[21] टूट गयो बीं राणा-रो, तूं भाट बण्यो बिरदावै[22] हो
हूं आज पातस्या धरती-रो, मेवाड़ी पाघ[23] पगां-में है
अब बता मनै, किण रजवट-रै रजपूती खून रगांमें है ?

जद पीथल कागद ले देखी राणा-री सागी सैनाणी
नीचै-सूं धरती खिसक गयी, आंख्यांमें आयो भर पाणी
पण फेर कही ततकाळ संभळ,— आ बात सफा[24]-ही झूठी है
राणा-री पाघ सदा ऊंची, राणा-री आण अटूटी है

लो, हुकुम हुवै तो लिख पूछूं राणा-नै कागद-रै खातर
लै पूछ भलां ही, पीथल ! तूं, आ बात सही, बोल्यो अकबर

(५)

म्हे आज सुणी है, नाहरियो स्याळां-रै सागै सोवैला
म्हे आज सुणी है, सूरजड़ो बादळ-री ओटां खोवैला[25]
म्हे आज सुणी है, चातकड़ो धरती-रो पाणी पीवैला
म्हे आज सुणी है, हाथीड़ो कूकर-री जूणां[26] जीवैला

म्हे आज सुणी है, थकां खसम[27] अब रांड हुवैला रजपूती
म्हे आज सुणी है, म्यानां-में तरवार रवैला[28] अब सूती
तो म्हा-रो हिवड़ो कांपै है, मूंछ्यां-री मोड़-मरोड़ गयी
पीथल-नै, राणा ! लिख भेजो, आ बात कठै तक गिणां सही ?

---

२१ प्रण, प्रतिज्ञा २२ बखानता था २३ पगड़ी २४ साफ ही २५ खो जायगा, छिप जायगा २६ जीवन २७ पतिके होते हुए २८ रहेगी ।

(६)

पीथल-रा आखर पढतां-ही राणा-री आंख्यां लाल हुयी
धिक्कार मनै, हूं कायर हूं, नाहर-री अेक दकाळ[२९] हुयी
हूं भूख मरूं, हूं प्यास मरूं, मेवाड़ धरा आजाद रवै[३०]
हूं घोर उजाड़ां-में भटकूं, पण मन-में मा-री याद रवै

हूं रजपूतण-रो जायो हूं, रजपूती करज चुकाऊंला
ओ सीस पड़ै, पण पाघ नहीं, दिल्ली-रो मान झुकाऊंला

(७)

पीथल! के खमता[३१] बादळ-री, जो रोकै सूर-उगाळी-नै[३२]
सिंघां-री हाथळ[३३] सह लेवै, बा कूख[३४] मिली कद स्याळी-नै
धरती-रो पाणी पियै, इसी चातक-री चूंच वणी कोनी
कूकर-री जूणां जियै, इसी हाथी-री बात सुणी कोनी

आं हाथां-में तरवार थकां कुण रांड कवै है रजपूती?
म्यानां-रै बदळै वैरयां-री छात्यां-में रैवैली सूती

मेवाड़ धधकतो अंगारो आंध्यां-में चमचम चमकैला
कड़खा-री[३५] उठती तानां पर पग-पग पर खांडो खड़कैला
राखो थे मूंछ्यां ऐंठ्योड़ी[३६] लोही[३७]-री नदी वहा दूंला
हूं तुरक कहूंला अकबर-नै, उजड्यो मेवाड़ वसा दूंला

जद राणा-रो संदेस गयो, पीथल-री छाती दूणी ही
हिंदवाणो सूरज चमकै हो, अकबर-री दुनिया सूनी ही

---

२९ गर्जना ३० रहे ३१ क्या सामर्थ्य ३२ उदयको ३३ हाथकी चपेट ३४ कोख, संतान ३५
३६ ऐंठी हुई, बल खायी हुई ३७ लोहूकी।

बारठ केसरीसिंह

(उदयराज ऊजळ)

[उदयराजजी राजस्थानरा जाणीता रास्ट्रीय कवि है । आ कविता आप राजस्थानी साहित्यरा आधुनिक युगरा जन्मदाता बारठ केसरीसिंह सौदा माथै लिखी है ।]

अडग देस अनुराग खत्र-वट-पूजारो खरो
ताकव़ तीखो त्याग करग्यो सोदो केहरी

थिर संपत रजथान भ्रात पुत्र संचित विभौ
देस हेत बळिदान करग्यो सरबस केहरी

रयो निरंकुस राह धुन सुतंत्रता धारणो
पिंड स्वारथ पर्वाह करी न बारठ केहरी

करग्यो केसरिया केसरिया ! जिण कारणै
कांगरेस करिया भेस तम्हीणा भारती

साहांनै सुभराज दीधा केइक दुथियां
गोरां ऊपर गाज करग्यो अेक-ज केहरी

---

१ देशके प्रेममें अडिग, वीर-मार्गका सच्चा पुजारी चारण केसरीसिंह सौदा बड़ा भारी त्याग कर गया ।

२ केसरीसिंह देशके लिअे स्थिर संपत्ति, जागीर, भाई-बेटे, संचित वैभव आदि सर्वस्व बलिदान कर गया ।

३ स्वतंत्रताकी धुनको धारण करनेवाला सदा निरंकुश मार्ग पर चला । केसरीसिंहने शरीर और स्वार्थकी पर्वाह नहीं की ।

४ हे केसरीसिंह ! जिसके लिअे तू केशरिया बाना कर गया उसीके लिअे वही तुम्हारा वेश अब कांग्रेसने कर रखा है ।

५ बादशाहोंको आशीर्वाद कई-अेक चारणोंने दिया पर फिरंगियों पर गर्जना अेक केसरीसिंह ही कर गया ।

खेतमें

[कंवर मोतीसिंह]

[कंवर मोतीसिंह राजस्थानी ग्राम-जीवणरा कवि है । कदेई प्रकृतिरो सादगी-पूर्ण चित्रण करै तो कदेई करुण कहाणी कैण लाग ज्यावै । अबै कींक दार्शनिक भी हो चाल्या है ।]

(१)

आज मोरियां ! राग सोवणी
मनै घणी मन भावै
पिऊ-पिऊ[१] सुण प्यासो हिवड़ो
जी-री प्यास बुझावै

(२)

हरियो-भरियो खेत सोवणो
सरवरियो लहरावै
धीमी-धीमी परवा[२] चालै
मनड़ै मोद न मावै

(३)

आभैमें[३] वादळिया दौड़ै
झिरमिर मेवलो[४] आसी
बाजरै बूंटांमें[५] प्यासी
वेलां पाणी पासी

(४)

आधी[६] ढळतां आय खुसीसूं
चास्यूं जद सो जास्यूं
दिन-ऊगांरी ठंडी हवामें
चास्यूं जद उठ जास्यूं

---

१ पीहू-पीहू बोली २ पुरवाई हवा ३ आकाशमें ४ मेह ५ पौधोंमें ६ आधी रात ।

(५)

काळी-काळी रात अंधारी
चमचम चमकै तारा
पड़ी ओस मोतीड़ा बणसी
पूर [७] भिजोसी म्हारा

(६)

सोवन म्हारो स्याणो भाई
भातै सागै आसी
सरवरियैरी पाळ सहारै [८]
बैठ्यो गाय चरासी

कणका

[बदरीप्रसाद आचार्य 'किंकर']

[किंकरजी राजस्थानरा आधुनिक संत-कवि है। आपरी कवितारा प्रधान विषय भक्ति और वैराग्य है। स्वाभाविक, सीधी और मुहावरेदार भाषामें मर्मनै स्पर्श करती बात कैवणी—आ आपरी विशेषता है।]

किंकर, गाछ गंभीर नदी-किनारै पर खड्यो
ले ज्यासी[1] वध[2] नीर चौमासो जद आवसी

आला-सूका सैन[3] स्वाहा हुवै जग-भट्टमें
किंकर, कदे बुझै न कई बळ्या[4], बळसी कई

सावण भादव मास वेसी[5] तो आसोज तक
तीजै मास विनास किंकर, विसवा वीस[6] है

होसी अेक दिन राख साख[7] सायबी[8] संपदा
वरस मास या पाख किंकर, कंइ[9] निसचै नहीं

सरप मींडको खाय मींडक माछरनै भखै
किंकर, दीसै नांय मौत सीस पर ही खड़ी

वडै मिनखसूं प्रीत दुनिया करती ही फिरै
किंकर, देख अनीत राम नहीं चितमें चढै

गीता जिसड़ो ग्रंथ होस थकां वांच्यो नहीं
दुनिया ऊंधा पंथ मिरत-काळ[10] गीता सुणै

कर्‌यो किसो चौपार किंकर, खोयो मूळ धन
विकग्यो घर अर वार पड्यो जेळमें जगतरी

आळस रोग महान और रोग, किंकर, किसो?
साधन-धनरी[11] हाण पळ-पळमें किंकर, करै

मत मनसूबा, बांध आयैमें संतोस कर
खा लै दळियो रांध जीभ दिखावै जम-पुरी

ऊंची गादी बैठ किंकर, नीची नाड़[12] रख
हुकम हुंडी पैठ चलै जित ही है चलै

देस-धणी कंगाल किंकर, सपनैमें बण्यो
जाग्यां फेर नपाळ आ ही गत इण जगतरी

---

१ ले जायगा २ बढ़कर ३ सभी ४ जल गये ५ अधिक ६ निश्चय ही ७ प्रतिष्ठा ८ प्रभुत्व ९ कुछ १० मृत्युके समय ११ साधना रूपी धनकी १२ गर्दन

गांधी

[नाथूदान महियारिया]

[नाथूदानजी नवयुगरा चारण-कवि है। आप अेक नवीन वीर-सतसई ग्रंथरी रचना करी है।]

फौजां रोकै फिरंगरी[1] तोकै नह[2] तरवार
गांधी! तैं लीधो गजब भारतरो भुज भार

[उदयराज ऊजळ]

सोरा[3] सात समंद मीठा करणा मानवी
परतंततारो फंद भारी[4] काटण, भानिया!
माता हित मरणो[5] मोटो तीरथ मानणो
भाव इसा भरणो भारत गांधी, भानिया!

डोकरर[6] भुज-दंड अेण[7]तपोबळ आसरै
पळटी वेग प्रचंड भारत-काया, भानिया!
पग-पग जेळां पाय गांधीरी ऊमर गयी
डोकर दयै छुडाय भारत माता, भानिया!

करता वैम[8] कदेक क्यूं ईसो[9] फांसी चढ्यो
दिस गांधीरी देख भयो भरोसो, भानिया!
जादू-लकड़ी जोर परतंतर भारत पड्यो
तप गांधीरै तोर[10] भचकै[11] ऊठ्यो, भानिया!

---

१ फिरंगियोंकी २ नहीं धारण करता है ३ आसान ४ कठिन ५ मरनेको ६ बुढ़ऊके ७ इसके ८ वहम, संशय ९ ईसामसीह १० बलसे ११ अचानक।

लाभू बाबो

(भंवरलाल नाहटा)

लाभू बाबो ठेट् वासिंदो किसै गांवरो हो आ तो मालम कोनी पण म्हारा बापोती-रा गांव डांडूसरमें परणियो हो जिणसूं म्हे तो उणनै उठारो ही समझता। धोळा मूंढारो छोरो, जवान, हो जदसूं ही म्हारा घरमें रैवतो आयो हो। हो तो बो दो रुपियांरो महीनैदार पण म्हारा घररा लोगां उणनै कदेई नौकर को समझियो नी। कांई छोटा अर कांई वडा—सगळा उणरो आदर करता। वडा लोग लाभू, लुगायां लाभूजी, और म्हे टाबर लाभू बाबो कै'र वतळांवता। बा'रला लोग लाभू बाबानै म्हारा ही घररो आदमी समझता। लाभू बाबो आप म्हारा घरनै ही आपरो घर समझतो। टाबरपणामें म्हे उणरै सागै जीमियोड़ा हां।

लाभू बाबो गोरा रंगरो, तकड़ा सरीररो अर सपेत दाड़ीरो पैंसो जवान हो। दोवटीरी जाडी धोती और बंडी पैरतो। माथा माथै मुलमुलरी पाग बांधी राखतो। गळामें हरद्वारी कंठी और हाथमें काठरा मिणियांरी माळा हर दम रैवती। सीयाळामें देसी ऊनरी कामळ ओढतो। ओ लाभू बाबारो पैरेस हो।

लाभू बाबो जातरो मंडीवाळ धनावंसी साध हो। बापरो नांव श्रीकिसनदास, काकारो बुद्धरदास अर भाईरो नांव आणदो हो। काको बुद्धरदासजी रामायण, महाभारत वगैरा शास्त्रांरा मोटा पिंडत हा। लाभू बाबै टाबरपणामें उणां कनै शास्त्रांरो ग्यान सीखियो। टाबरपणामें सीखियोड़ा इण ग्यानसूं लाभू बाबो विना पढियां हीज पिंडत हुग्यो हो। उणनै शास्त्रां और पुराणां तथा इतिहासरी कुण जाणै कित्ती वातां याद ही। लाभू बाबो भणियोड़ो कोनी हो पण ग्यानमें वडा-वडा भणियोड़ांनै छेड़ै बैसाणतो। लाभू बाबो कह्या करतो—नाणो अंटरो, विद्या कंठरी।

लाभू बाबो म्हारा घरमें चाळीस वरसांसूं कम को रह्यो नी। बो अेकलो जको काम करतो बो आज च्यार आदमियांसूं कोनी हुवै। झांझरकै च्यार वज्यां उठतो। उठनै भजन करतो। पछै सगळा घरमें बुवारी देतो, पाणी छाणतो, विलोवणो करतो, पोटा थापतो, ठाणांरी सफाई करतो, गायां-भैंस्यां नै पाणी पांवतो अर नीरो नाखतो। पछै दूजा काम करतो।

म्हांरै हुंडी-चिट्ठीरो काम हुतो। लोट चालिया कोनी हा, हजारूं रुपिया रोकड़ी लावण-लेज्यावण रो काम पड़तो। ओ सगळो काम लाभू बाबो करतो। भणियोड़ो अेक आखर को हो नी पण लाखूं रुपियांरो काम भुगता देतो और कदेई अेक पईसै-री ही भूल को पड़ी नी।

गांव-गोठरी बोरगत हुणैसूं म्हांरै अठै बारलो फेटो घणो हो। रोज दस-पांच आदमी आया-गया रैवता। उण दिनांमें कळरी चक्की तो ही कोनी, हाथसूं आटो पीसणो पड़तो। पीसारणियां आटो पीसती। लाभू बाबै थकां अैन मौकै आटारा फोड़ा कदेई को देखणा पड़ता नी। विना कह्यां आधी रातरा उठ-नै घमड़-घमड़ दूंदा नाखतो। दिन ऊगतो जद आधमण आटो त्यार।

लाभू बाबो काम करणनै सदा जाणै त्यार हीज रैवतो। हरेक आदमीरो काम निःस्वार्थ-भावसूं करतो। घररो तो कांई, गवाड़रो भी कोई जणो काम वास्तै बकारतो तो ऊतर को देतो नी। हेलो सुणतां पाण झट बोलतो—आयो। जीमतो हुतो तो थाळी छोड किनारै हाथ धोय-नै जा हाजर हुंतो। कैई काममें रूंधियोड़ो हुतो तो-ई आ कदेई को कैवतो नी कै फलाणो काम करूं हूँ। अेक 'आयो' शब्द हीज सदा मूंढासूं नीकळतो। लाभू बाबो कैवतो—'हूं फलाणो काम करूं हूं' इयांन कैणो अेक तरांसूं ऊतर देणो है। कामरो ऊतर देणो लाभू बाबो जाणतो ही कोनी हो।

टाबरांनै, विशेषकर म्हां तीनांनै—काकोजी मेघराजजी, काकोजी अगरचंदजी और मनै, वडी हींयाळीसूं राखतो। अेकनै गोदीमें, दूजानै खांधा माथै अर तीजानै मगरां माथै राखियां काम करतो रैतो। म्हांनै घणा ओखाणा अर दूहा सुणावतो। सिंझ्या पड़ती जद म्हे लाभू बाबानै वात कैवण वासतै पकड़नै बैठाय लेता। बाबो म्हांरी फरमास अर रुचि मुजब वातां सुणावतो—कदेई रामायणरी, कदेई महाभारतरी, कदेई इतिहासरी, कदेई ध्रूजीरी, कदेई प्रह्लादरी, कदेई नरसीजीरा माहेरारी।

लाभू बाबो रामरो भगत, कर्त्तव्यशील और निर्लोभी हो। शास्त्रांरी कथावांरा आदर्श बाबै आपरा जीवणमें उतारिया हा। दिन-रात, काम करतां वखत भी, मूंढामें रामरो नाव हरदम रैवतो। काम करतो जावतो अर भजन गावतो जातो। म्हारा घरसूं लाभू बाबानै दो रुपिया महीनो मिलतो। भला-भला साहूकारां पनरै रुपिया महीनो नै

रोटी-कपड़ो थामियो पण लाभू बाबै दूजै घर नौकरी नहीं करी स नहीं करी। लाभू बाबो प्रेमरो भूखो हो, टकांरो लोभी को हो नी।

जवानीमें लाभू बाबो घणो तागतवर हो। अेक वार वडा दादाजी दानमलजीरी हवेली चिणीजती ही जद पथरांरी रांस चढावण वासतै हमालांनै बुलाया। दस-दस मण भारी अेकलिया देखनै हमालां जीभ काढ दी। जद सेठां लाभू बाबानै वकारियो। लाभू बाबै अकेलै वै दस-दस मणरा अेकलिया चढा दिया। •

जतियांरी हालत देखनै लाभू बाबो कह्या करतो—

केई जती सेवड़ा सिर मूंडा।
करमां-री गतसूं हुया भूंडा ॥

लाभू बाबै कई भेख, जीमण, जींवतखर्च आपरा नै आपरी सामणरा करिया। हिन्दू और जैन तीरथांरी जात्रावां करी। और मरतो सईकड़ूं रुपिया आपरी लुगाई मोलांरै वासतै छोडग्यो। दो-च्यार रुपिया कमावणआळो आदमी किण भांत सुखी जीवण विता सकै, लाभू बाबो इणरो प्रतख उदाहरण हो।

लाभू बाबै आपरा जीवणरा शेष दिन गांवमें गालिया। माँचा माथै बैठो-सूतो हरदम भजन करतो रैवतो। म्हाँ टाबराँनै देखण सिवाय कैई वात-री मनमें ही कोनी ही। पिताजी मिलण वासतै गाँव गया जद उणाँनै आया सुणताँ पाण उभाणै पगाँ सौ पाँवडाँ साम्हो आयो। लोगाँनै घणो अचरज हुयो कै आज बाबारा बूढा पगाँमें इती शक्ति कठां-सूं आयगी।

लाभू बाबानै स्वर्गवासी हुयाँ आज वीस वरस हुग्या है पण म्हारा मनमें बावारी अर बाबारा गुणाँरी याद आज ताणी ताजी है।

पुस्तक-परिचय *

१ वादळी—लेखक-कंवर चंद्रसिंह। भूमिका-लेखक—सीतामऊ-महाराजकुमार श्रीरघुवीरसिंहजी। आकार—डबलक्राउन-सोलहपेजी। पृष्ठ संख्या १२+१०२। मोटा अेंटीक कागज। बीकानेर-महाराजकुमारका चित्र। कलापूर्ण रंगीन चित्रवाला आवरण पृष्ठ। प्रथमावृत्ति, सं० १९९८। मूल्य १)। प्रकाशक—प्राच्य-कला-निकेतन, बीकानेर (अब जयपुर)

ऋतुओंमें वर्षा ऋतुका अपना निराला महत्त्व है। वसंत ऋतुराज कहा गया है तो वर्षाको ऋतुओंकी रानी कहा जा सकता है। वसंत राजसी ऋतु है, वर्षा सर्वहारा वर्गका। वसंत जीवनको नाना रूपोंमें प्रकट करता है पर उसका मूल आधार तो वर्षा ही है। भारतके लिअे वर्षा बड़े महत्त्वकी ऋतु है पर राजस्थानका तो वह जीवन ही है—राजस्थानका जीवन ही उस पर निर्भर है। फलतः प्रत्येक राजस्थानी कवि वर्षासे अभूतपूर्व प्रेरणा पाता है और वर्षाका वर्णन करते समय उसका हृदय उसके साथ पूर्णरूपेण तदाकार हो जाता है।

वादळी (हिन्दी बदली) राजस्थानी भाषाका अेक सुन्दर प्रकृति-काव्य है। इसमें वर्षाकालके नाना-रंगी चित्र बड़ी ही स्वाभाविक और सरस भाषामें अंकित किये गये हैं। दूहा छंद लिखनेमें चंद्रसिंह अद्वितीय हैं।

ग्रन्थके आरम्भमें सीतामऊके महाराजकुमार डाक्टर रघुवीरसिंहजीकी छोटी सी सारगर्भित प्रस्तावना है और अन्तमें पं० रावत सारस्वतका हिंदी अनुवाद। जैसा सुन्दर काव्य हुआ है वैसा ही सुन्दर यह अनुवाद है जो कहीं-कहीं तो मूलसे भी अधिक सुन्दर हुआ है। काव्यमें आये कठिन और अपरिचित राजस्थानी शब्दोंके हिन्दी अर्थ अन्तमें शब्दकोष देकर दिये गये हैं।

---

* इस स्तंभमें आलोचित सभी पुस्तकें नवयुग-ग्रन्थ-कुटीर, पुस्तक प्रकाशक और विक्रेता, बीकानेर (राजपूताना) के पतेसे मंगायी जा सकती है।

इस ग्रन्थको बीकानेरके युवराज (अब महाराजा) श्री सादूळसिंहजी बहादुर-ने पुरस्कृत करके अपनी काव्य-मर्मज्ञता और मातृ-भाषा-प्रेमका परिचय दिया है जिसके लिअे वे सब प्रकारसे बधाईके पात्र हैं।

पुस्तक प्रत्येक दृष्टिसे सुन्दर और संग्रहणीय है।

—नरोत्तमदास स्वामी

२ जती बाबा भगाजी पंवार—लेखक—शिवसिंह मल्लाजी चोयल। आकार—डबल क्राउन सोलहपेजी। पृष्ठ संख्या ६+३०। प्रथमावृत्ति, सं० २००२। मूल्य लिखा नहीं। प्रकाशक—सीरवी नवयुवक मंडळ, बिलाड़ा (मारवाड़)

चौधरी शिवसिंहजी चोयल राजस्थानी लोक-साहित्यके अच्छे अनुशीलक हैं। ग्रामीण लोक-साहित्यका आपने अच्छा संग्रह कर रखा है। इस पुस्तिकामें सीरवी जातिके अेक सन्त कवि भगाजी जतीका परिचय और उनकी कुछ लोक-प्रचलित कविताअें दी गयी हैं। अन्तमें आई माताका संक्षिप्त परिचय दिया गया है जो सीरवी जातिकी इष्टदेवी हैं।

३ सती कागणजी—लेखक आदि ऊपर लिखे अनुसार। पृष्ठ संख्या १२। प्रथम संस्करण, स० १९४४।

इस पुस्तिकामें चौधरीजीने सीरवी जातिमें होनेवाली सती कागणजीका संक्षिप्त जीवन-परिचय देकर उपरोक्त जती भगाजीकी बनायी हुई 'निसाणी' दी है जिसे भक्त लोग प्रत्येक मासको शुक्लपक्षकी द्वितीयाको अेकत्र होकर गाया करते हैं। निसाणीमें सतीजीका चरित्र विस्तारसे वर्णित है।

४ आई-आणद-विलास—लेखक—व्यास भवानीदास लालावत पुष्करणा। संपादक—चौधरी शिवसिंह मल्लाजी चोयल। आकार—डबल क्राउन सोलहपेजी। पृष्ठ संख्या ४+१२०=१२४। प्रथमावृत्ति, सं० २००३। मूल्य १)। प्रकाशक—सीरवी नवयुवक मंडळ, बिलाड़ा (मारवाड़)।

इस ग्रन्थमें ६०३ छन्दोंमें राजस्थानी भाषामें भगवती आई माताका चरित्र वर्णित है। इसके रचयिता व्यास भवानीदास आई माताके दीवान राजसिंहके समयमें बडेर बिलाड़ाके कामदार थे। आई माताके उपासक इसको उसी प्रकार पूज्य मानते हैं जिस प्रकार सिख गुरु-ग्रन्थसाहबको और आर्यसमाजी सत्यार्थ-प्रकाशको। चौधरी शिवसिंहजीने इसका प्रकाशन करके इसे सर्वसाधारणके लिअे

सुलभ कर दिया है। संपादन हस्तलिखित प्रतिके आधार पर योग्यताके साथ किया गया है। कठिन शब्दोंके अर्थ नीचे टिप्पणी देकर दिये गये हैं। ग्रन्थ पठनीय है।

—रंकण शर्मा

५ राजस्थानके ग्रामगीत, भाग १—संग्रहकर्त्ता—पं० सूर्यकरण पारीक तथा गणपति स्वामी। संपादक—ठाकुर रामसिंह और प्रोफेसर नरोत्तमदास स्वामी। आकार—डबल क्राउन सोलहपेजी। पृष्ठ संख्या १४+११६। पारीकजीका चित्र। प्रथमावृत्ति, सं० १९९७। मूल्य ।||)। प्रकाशक—गयाप्रसाद अॅंड सन्स, आगरा।

पं० सूर्यकरण पारीक राजस्थानके अेक उत्कृष्ट साहित्यकार थे। सं० १९९५ में उनका अकस्मात देहावसान हो गया। उनकी स्मृतिमें बीकानेरके राजस्थानी साहित्य-पीठने सूर्यकरण पारीक राजस्थानी ग्रन्थमाळाकी स्थापना की जिसका प्रकाशन आगराके प्रसिद्ध पुस्तक-प्रकाशक गयाप्रसाद अॅंड सन्सने करना आरंभ किया। प्रस्तुत ग्रंथ उसी पुस्तकमालाका प्रथम ग्रंथ है। इसमें राजस्थानके ठेठ देहाती जीवनके ६३ लोकगीतोंका संग्रह है। साथमें हिन्दी अनुवाद तथा आवश्यक टिप्पणियां भी दी हुई हैं जिससे राजस्थानी न जाननेवाले भी सहज ही गीतोंका आनन्द ले सकते हैं। संगृहीत गीतोंमेंसे अधिकांश स्वयं स्वर्गीय पारीकजी के या उनके शिष्य पं० गणपति स्वामीके संग्रह किये हुअे हैं। ये गीत जिस प्रकार साहित्यकी अमर निधि हैं उसी प्रकार भारतीय ग्राम्य संस्कृतिका सजीव रूप भी। इनमें घरेलू जीवनकी मधुर झांकी पग-पग पर मिलती है। मनुष्यने कलाके नये-नये प्रयोगोंमें, और साहित्यकी नानाविध आलंकारिक शैलियोंमें, बहुत कुछ सौंदर्य बटोरा है परन्तु इस प्रयासमें उसने क्या कुछ खोया है इसका अन्दाज इन ग्राम्य गीतोंकी सहज सरल माधुरीमें थोड़ी देर तक निमग्न हुअे बिना नहीं मिलता। इनके नाम-हीन रचयिताओंके ऊपर अनेक विद्यापति और जयदेव निछावर होते हैं।

६ राजस्थान-भारती (त्रैमासिक पत्रिका)—संपादक—डाक्टर दशरथ शर्मा, अगरचंद नाहटा और प्रोफेसर नरोत्तमदास स्वामी। आकार—रायल अठपेजी। मोटा अॅंटीक कागज। पृष्ठसंख्या २+१०४+२६=१३२। वार्षिक मूल्य ८)। महिलाओं, विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा सार्वजनिक संस्थाओंके लिअे रियायती

वार्षिक मूल्य ४) । अेक अंकका मूल्य २।।) । प्रकाशक—प्रधानमंत्री, श्री सादूळ राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट, बीकानेर ।

गत वर्ष बीकानेरके कतिपय प्रमुख विद्वानोंने बीकानेर-नरेश महाराजा श्री सादूळसिंहजी बहादुरके संरक्षणमें श्री सादूळ राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट नामक संस्था स्थापित की थी। यह संस्था राजस्थानकी भाषा, साहित्य और इतिहास संबंधी खोजका कार्य करती है। यह त्रैमासिक पत्रिका इसी संस्थाकी मुखपत्रिका है। इसका प्रथम अंक हमारे सामने है। इसमें नीचे लिखे महत्त्वपूर्ण लेख हैं जो अपने विषयके अधिकारी विद्वानों द्वारा लिखे गये हैं—पृथ्वीराज-रासो, जीण-माताका गीत, राजस्थानी साहित्य, कविवर जान और उसके ग्रंथ, चरलूके शिलालेख, बीकानेरका अेक आदर्श संग्रहालय, राजस्थानकी वर्षा-संबंधी कहा-वतें, राजस्थानी मुहावरे। इनके अतिरिक्त लोक-साहित्य, प्राचीन राजस्थानी साहित्य और नवीन राजस्थानी साहित्य इन तीन विभागोंके अन्तर्गत बहुत सुंदर सामग्रीका संचय किया गया है। अंतमें अेक लेख अंग्रेजीमें पृथ्वीराजरासो पर दिया गया है। इंस्टीट्यूटके प्रथम वर्षका कार्यविवरण भी साथमें दिया गया है जो अंतके २६ पृष्ठोंमें छपा है। अैसी सर्वांग-सुंदर पत्रिकाके प्रकाशनके लिअे विद्यानुरागी बीकानेर-नरेश, बीकानेरके प्रधानमंत्री, इंस्टीट्यूटके कार्यकर्त्ता और संपादक सभी हमारे हार्दिक अभिनंदनके पात्र हैं।

—शंभूदयाल सकसेना

७ प्रतिभा (साहित्यमाला —संपादक-सीताराम चतुर्वेदी, हरिहरशरण मिश्र, भवानीप्रसाद तिवारी, रामेश्वरप्रसाद, रुद्रनारायण शुक्ल। आकार—डिमाई अठपेजी। पृष्ठसंख्या २+८२। कलापूर्ण आवरण। अेक पुस्तकका मूल्य ।।।=)। वार्षिक मूल्य ११)। प्रकाशक –हिंद किताब्स, पोस्ट बाक्स १९६३, बंबई।

पिछली विजयादशमीसे यह साहित्यिक निबंधमाला प्रकाशित होने लगी है। संपादकीय शब्दोंमें 'भावमय चित्र, रसवती कहानियां, विनोदपूर्ण व्यंग्य, चुभते चुटकुले, कलापूर्ण शब्दचित्र, विश्वसाहित्यके परिचयात्मक सारांश, भाषाशैलियों-की मनोहरताओंसे भरी हुई साहसपूर्ण यात्राअें, युगधर्मको पुकारकर जगानेवाली सशक्त कविताअें—सभीका प्रतिभाके अंकमें इस प्रकार पोषण होगा कि उसके मोहक और स्वस्थ रूपोंसे परिचय पानेवाले पाठकके मन और हृदयके लिअे

यथेष्ट और उपयुक्त सामग्री मिल सकेगी। प्रतिभाका यह भी उद्देश्य होगा कि वह रूप, भाषा और विषयचयन तीनों दृष्टियोंसे वाचकोंको संतुष्ट करे।'

संपादक अपने उद्देश्यमें बहुत अंश तक सफलता प्राप्त करनेमें समर्थ हुअे हैं। प्रथक अंकमें संपादकीय सहित १७ लेख हैं। सभी लेख सुंदर हैं। श्री सीताराम चतुर्वेदीका दानवोंके बीच शीर्षक साहसयात्राका आत्मचरितात्मक लेख हमें सबसे अच्छा लगा। संपादकीय टिप्पणियोंमें प्रगट किये गये विचार स्वस्थ भावनाके द्योतक हैं। पुस्तकमाला निस्संदेह हिंदीके लिअे गौरव बढ़ानेवाली सिद्ध होगी।

नरोत्तमदास स्वामी

८ हिमालय (साहित्यिक निबंधमाला)—संपादक—शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष बेनीपुरी। आकार—डिमाई अठपेजी। पृष्ठसंख्या १०० से ऊपर। कलापूर्ण आवरण। अेक पुस्तकका मूल्य १) । वार्षिक मूल्य १०)। प्रकाशक—पुस्तक-भण्डार, हिमालय प्रेस, पटना।

यह साहित्यिक पुस्तकमाला पिछले जून महीनेसे प्रकाशित होने लगी है और अभी तक सात अंक प्रकाशित हुअे हैं। सभी अंक प्रत्येक दृष्टिसे उत्कृष्ट हैं। लेखोंका चुनाव बहुत सुंदर है। हिंदीके पत्र-पत्रिका सहित्यकी नियमित और स्वस्थ आलोचना इस पुस्तकमालाकी अेक महत्त्वपूर्ण विशेषता है जो साधारण पाठक और विद्वान दोनोंके लिअे अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा।

—शिवशर्मा

संपादकीय

राजस्थान अेक महान प्रांत है। वह अनेक महानताओंका आकर है। उसके उज्ज्वल इतिहास पर देशके बच्चे-बच्चेको गर्व है। आज भी उसका नाम सुनकर ही हृदय-तंत्री झनझना उठती है। उसके साहित्य पर बड़े-बड़े महारथी मुग्ध हैं। पर आज उसके उस उज्ज्वल अतीत पर, उसके समस्त गौरव पर, अंधकारके स्तर-पर-स्तर जमे पड़े हैं। उसकी भाषा, उसका साहित्य, उसका इतिहास, उसकी कला सब आज अज्ञानके गहरे गर्त्तमें दबे हैं। उनको प्रकाशमें लाना प्रत्येक देश-हितैषीका, विशेषत: राजस्थानके सपूतोंका, परम आवश्यक कर्त्तव्य हो जाता है।

.राजस्थानी साहित्यके प्रकाशनके छुटपुट प्रयत्न हुअे हैं पर वे सभी सब प्रकारसे अपर्याप्त हैं। व्यवस्थित रूपमें प्रयत्न आरंभ करनेकी आवश्यकता अभी तक बनी हुई है। इस दिशामें बहुत विलंब हो चुका है। अधिक विलंब घातक होगा। राजस्थानीका प्रकाशन इसी कर्त्तव्यका पालन करनेके लिअे किया जा रहा है।

आजसे कोई आठ वर्ष पूर्व राजस्थानी साहित्यके प्रकांड विद्वान पं० सूर्यकरण पारीकने इस विषयकी अेक व्यापक योजना बनायी थी और उसे कार्य-रूपमें परिणत करनेके लिअे स्वयं कटिबद्ध हुअे थे। उनने कलकत्तेकी राजस्थान रिसर्च सोसाइटीके उत्साही कार्यकर्त्ता श्रीयुत रघुनाथप्रसादजी सिंहाणियाके सहयोगसे अेक उच्चकोटिकी शोध-संबंधी त्रैमासिक पत्रिकाके प्रकाशनकी योजना की। वे स्वयं उसके प्रधान संपादक बने। प्रथम अंक प्रेसमें छप ही रहा था कि दुर्भाग्यसे उनका अकस्मात देहांत हो गया। उनके सहयोगियोंने कार्यको चालू रखा और पत्रिका सजधजके साथ निकली। सर्वत्र उसका अपूर्व स्वागत हुआ। पर दुर्दैवको यह भी मंजूर न था। सिंहाणियाजीको अन्यत्र व्यावसायिक कामोंमें बहुत व्यस्त होना पड़ा जिससे पत्रिकाके ग्राहकादि नहीं बनाये जा सके। व्यवस्थाके अभावमें पत्रिकाको बंद करना पड़ा। तभीसे हम इस प्रयत्नमें थे कि प्रकाशन और व्यवस्थाका कोई अच्छा प्रबंध हो जाय तो पत्रिकाको शीघ्र-से-शीघ्र पुनर्जीवित किया जाय।

अब राजस्थानी-साहित्य-परिषद्की शोधसंबंधी निबंधमाळाके रूपमें इसका प्रकाशन किया जा रहा है। अत्यंत हर्षका विषय है कि निबंधमाळाका प्रकाशन भारतके स्वतंत्रता प्राप्त करनेकी मंगलमय तिथिसे अरंभ हो रहा है।

मातृभूमि और मातृभाषाकी सेवाके इस पवित्र यज्ञमें भाग लेनेके लिअे हम समस्त राजस्थानी, अेवं राजस्थान-प्रेमी, बंधुओंको उल्लास और उत्साहके साथ आमंत्रित करते हैं। विद्वानोंसे हमारी विनीत प्रार्थना है कि आप अपना पूर्ण सहयोग हमें प्रदान करें। आपके सहयोग पर ही हमारी सफलता निर्भर है।

निबंधमाळाका आरंभ अभी छोटे रूपमें किया जा रहा है। कागज और प्रेस संबंधी कठिनाइयोंके कारण उसे हम सजधजके साथ नहीं निकाल सके हैं। हमें इसके इस रूपसे संतोष नहीं है पर वर्त्तमान परिस्थितियोंमें हमें किसी-न-किसी प्रकार निभा लेना है। नीचे लिखे परिवर्तन हम शीघ्र करना चाहते हैं—

(१) निबंधमालाकी पृष्ठसंख्या बढ़ा दी जाय— प्रत्येक भाग कम-से-कम २०० पृष्ठोंका निकले।

(२) राजस्थानी कलाके उत्तमोत्तम नमूने निबंधमालाके प्रत्येक भागमें प्रकाशित हों।

(३) आधुनिक राजस्थानी साहित्यके लिअे प्रत्येक भागमें लगभग ५० पृष्ठ रहें (आधुनिक राजस्थानी साहित्यकी अेक मासिक-पत्रिका मरु-भारतीके प्रकाशनकी योजना भी की जा रही है)।

(४) निबंधमाळाके समस्त लेखकोंको लेखोंके पारिश्रमिकके रूपमें पर्याप्त पुरस्कार प्रदान किया जाय।

हमारी इन इच्छाओंकी पूर्ति राजस्थानके उदार और साहित्यप्रेमी राजा-रईसों, सरदारों, सेठ-साहूकारों आदि धनी-मानी सज्जनोंकी सद्भावना पर अवलंबित है पर हमें यह दृढ़ विश्वास है कि हम उनकी यह सद्भावना प्राप्त करनेमें समर्थ होंगे। पत्रिकाके आरंभमें दिया हुआ निम्नलिखित मूलमंत्र हमारे विश्वासको सदा अटल रखेगा—

उत्थातव्यं जागृतव्यं योक्तव्यं भूति-कर्मसु
भविष्यतीत्येवं मनः कृत्वा सततमव्यथैः

उठो, जागो और बिना घबराये कल्याणके कामोंमें लग जाओ,
मनमें यह दृढ़ धारणा बना लो कि यह काम तो होगा ही।